आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अक्टूबर, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2022

वर्ष : 80 अंक : 10
कार्तिक, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अक्टूबर, 2022

Website : www.jinwani.in

धर्म मात्र आत्मशुद्धि का ही साधन नहीं, वह दूसरों के साथ किस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक रहा जाय, इसका भी प्रशिक्षण देता है।

जोधपुर में संघ, संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी-अभिनन्दन एवं सञ्चालन समिति तथा कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 15-16 अक्टूबर 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गुणी-अभिनन्दन समारोह, संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा का आयोजन शनिवार एवं रविवार, 15-16 अक्टूबर 2022 को जोधपुर (राज.) में किया जा रहा है, जिसमें सभी संघ सदस्य सादर आमन्त्रित हैं। विवरण निम्नानुसार है-

गुणी-अभिनन्दन समारोह में संघ द्वारा प्रदेय सम्मान

(समारोह-शनिवार, 15 अक्टूबर, 2022, दोपहर 12.15 बजे से माहेश्वरी भवन, रातानाड़ा)

(1) आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान (2) युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)
(3) विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (4) न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान
(5) डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

श्रावक संघ की सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी की बैठक शनिवार, 15 अक्टूबर, 2022 को सायं 7.15 बजे रखी गई है। सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक आमसभा एवं सम्मान कार्यक्रम

"संघ-निष्ठा दिवस" (समारोह-रविवार, 16 अक्टूबर, 2022, दोपहर 12.15 बजे से)

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा एवं संघ में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने वाले श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान कार्यक्रम रविवार, 16 अक्टूबर 2022 को **दोपहर 12.15 बजे से रामबाग, सुमेर स्कूल के पीछे, महामन्दिर जोधपुर** (राज.) में आयोजित किया जा रहा है। वार्षिक साधारण सभा में विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. मंगलाचरण। 2. स्वागत- राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा। 3. गत आमसभा बैठक की कार्यवाही का पठन, अनुमोदन तथा प्रगति की जानकारी। 4. गत संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों एवं सुझावों की जानकारी। 5. कार्यकारिणी द्वारा अनुमोदित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक प्रतिवेदन का अनुमोदन। 6. संघ व संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2021-2022 के अंकेक्षित वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2022-2023 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन। 7. अंकेक्षक की नियुक्ति। 8. विशिष्ट संघ-सेवियों का सम्मान कार्यक्रम। 9. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षगणों एवं संयोजकों द्वारा अभिव्यक्ति। 10. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति। 11. शासन सेवा समिति संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति। 12. संरक्षक मण्डल संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति। 13. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से। 14. धन्यवाद- संघ महामंत्री द्वारा।

इस बार विशेष रूप से संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त आमसभा को बृहत् स्तर पर **"संघ-निष्ठा दिवस"** के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। अत: 16 अक्टूबर 2022, आमसभा में सभी सदस्य अनिवार्य मान कर अवश्य ही उपस्थित हों, साथ ही अपने क्षेत्र के अधिकाधिक श्रावक-श्राविकाएँ, युवावर्ग पधारे, इस हेतु विशेष प्रयास करें। आमसभा में जितने भी परिवार पधारेंगे, उनका रजिस्ट्रेशन संघ द्वारा 'रत्नसंघ एप्प', वेबसाइट, मेल एवं वॉट्स एप्प के माध्यम से प्रेषित गूगल फार्म में करने पर परिवार के मुखिया के नाम का इस दिवस विशेष की स्मृति रूप में 'स्मृति चिह्न' प्रदान किया जायेगा।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

मुमुक्षु बहिन सुश्री
स्नेहाजी भण्डारी
जन्म तिथि
13 नवम्बर, 1997

जैन भागवती दीक्षा-महोत्सव

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, रायचूर

जिनशासन गौरव, प्रवचन प्रभाकर, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सरलस्वभावी, महान् अध्यवसायी भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की आज्ञानुसार व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु सुश्री स्नेहाजी भण्डारी की जैन भागवती दीक्षा आसोज सुदी दशमी (विजय दशमी) 5 अक्टूबर, 2022 को रायचूर में सम्पन्न होने जा रही है।

मुमुक्षु बहिन का पारिवारिक परिचय

दादा-दादी	–	स्व. श्री सज्जनराजजी भण्डारी-स्व. श्रीमती भँवरीबाईजी भण्डारी
बड़े पिता-माता	–	श्री उत्तमचन्दजी भण्डारी-स्व. श्रीमती विमलाबाईजी भण्डारी, श्री सम्पतराजजी भण्डारी-श्रीमती राजकँवरबाईजी भण्डारी, श्री श्रेणिकराजजी भण्डारी-स्व. श्रीमती किरणबाईजी भण्डारी, श्री धर्मीचन्दजी भण्डारी-श्रीमती अरूणाबाईजी भण्डारी, श्री अशोकचन्दजी भण्डारी-श्रीमती राजकँवरबाईजी भण्डारी
माता-पिता	–	श्री ज्ञानचन्दजी भण्डारी-श्रीमती सुनीताबाईजी भण्डारी
चाचा-चाची	–	श्री महावीरजी भण्डारी-श्रीमती मंजूबाईजी भण्डारी
भाई-बहिन	–	श्री चेतनजी भण्डारी, सुश्री इक्षिताजी भण्डारी
भुआ-भुड़ोसा	–	श्रीमती रत्नाबाईजी-श्री भीकमचन्दजी बोहरा, स्व. श्रीमती शान्ताबाईजी-श्री धनराजजी बागमार, स्व. श्रीमती कान्ताबाईजी-स्व. श्री कचरूलालजी कांठेड़, श्रीमती सुरेखाबाईजी-श्री अभयराजजी धोका, श्रीमती राजकँवरजी-श्री राजेशजी बोहरा
नाना-नानी	–	स्व. श्री सुगनचन्दजी पगारिया-स्व. श्रीमती प्रेमलताबाईजी पगारिया
मामा-मामी	–	श्री महावीरजी पगारिया-श्रीमती रेखाबाईजी पगारिया, श्री चन्द्रकान्तजी पगारिया-श्रीमती मालाजी पगारिया।
मौसा-मौसी	–	श्रीमती अनिताबाईजी-श्री अशोकजी बोहरा, श्रीमती समताबाईजी-स्व. श्री प्रकाशजी बम्ब, श्रीमती कविताबाईजी-श्री नमीजी चोरडिया, श्रीमती रूपाबाईजी-श्री आनन्दजी धोका

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ	–	वीर स्तुति, दशवैकालिकसूत्र-4 अध्ययन, सुखविपाकसूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र 1, 9, 28 अध्ययन, आवश्यकसूत्र।
सूत्र वाचनी	–	दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाकसूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, अंतगडदशासूत्र, आवश्यकसूत्र
स्तोक कण्ठस्थ	–	25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, कर्म-प्रकृति, समिति-गुप्ति, गति-आगति, लघुदण्डक, जीवधड़ा, नवतत्त्व, छह काय, गुणस्थान स्वरूप, रूपी-अरूपी, संज्ञा, उपयोग, 14, 32, 98, 102 बोल का बासठिया, अबाधाकाल, ज्ञानलब्धि, कायस्थिति, 47, 50, 800 बोलों की बंधी, कर्मग्रन्थ भाग-1 इत्यादि।
स्तोत्र	–	भक्तामर स्तोत्र, उवसग्गहर स्तोत्र, वज्रपंजर स्तोत्र, हीराष्टक आदि।
शिक्षण बोर्ड	–	1 से 5 कक्षा उत्तीर्ण
वैराग्यावधि	–	7 माह

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह-सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अह पंचहिं ठाणेहिं,
जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थम्भा कोहा पमाएणं,
रोगेणालस्सएण य।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 11.3

जिन पाँचों कारणों से नर को,
शिक्षा की प्राप्ति न हो पाये।
वे हैं आलस्य प्रमाद क्रोध,
और रोग मान मन अकुलाये।

अक्टूबर, 2022
वीर निर्वाण सम्वत्, 2548
कार्तिक, 2079

वर्ष 80 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापर्ची के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	साधु की उत्कृष्ट साधना	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–डॉ. धर्मचन्द जैन	11
विचार-वारिधि-	चेतनाशील साधक की साधना	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	स्वभाव में रहकर होती है संयम और वैराग्य की साधना	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	भारत माँ का रखें मान	–श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	18
	पूँजनी की उपयोगिता	–श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	22
	गुरु के प्रति विनय एवं समर्पण	–श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	25
संगोष्ठी-आलेख-	आचार्य सोमदेव विरचित योगमार्ग में ध्यान का निरूपण	–डॉ. हेमलता जैन	28
जीवन-व्यवहार-	जीवन कैसा हो? आगम में लिखने जैसा हो	–श्रीमती सेहल जैन	34
English-section	**The Spirit of Reconciliation of Different Ideologies and Faith.....**	*–D. Reshma*	40
प्रासङ्गिक-	आभार गुरुदेव!	–सुश्री दिशा जैन	45
अध्यात्म-	आत्मा का ध्यान कैसे करें?	–डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन	48
चिन्तन-	अहिंसा है तो जीवन सम्भव है	–श्री जयदीप ढड्ढा	50
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (22)	–श्री धर्मचन्द जैन	51
प्रासङ्गिक-चिन्तन-	धोवन धाम (2)	–श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	53
परिवार-स्तम्भ-	घर की नींव बहुएँ	–श्री एस. कन्हैयालाल गोलेछा	59
69वाँ जन्म-दिवस-	भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के प्रति भावाभिव्यक्ति	–श्री नौरतनमल मेहता	61
जीवन-व्यवहार-	अनमोल मोती (7)	–श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	64
गीत/कविता-	गुरु हीरा गुणगान	–महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.	10
	मुसाफ़िर	–श्री विजेन्द्र जैन	17
	प्रभु ने मार्ग बताया	–श्री भँवरसिंह कक्कड़	21
	सामायिक की चार भावनाएँ	–श्री सुमतिचन्द जैन	24
	अगर मुझको गुरुवर	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	27
	भावी आचार्य गुणगान	–महासती श्री समीक्षाश्रीजी म.सा.	33
	यही तो है जीवों का परस्पर उपकार	–सौ. अनिता किशोर लुंकड़	47
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–श्री गौत्तमचन्द जैन	65
पर्युषण-रिपोर्ट-	श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर पर्युषण पर्वाराधना रिपोर्ट	–श्री सुभाष हुण्डीवाल	67
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	73
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	91

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

साधु की उत्कृष्ट साधना

डॉ. धर्मचन्द जैन

साधु, सरिता, बादली, चले भुजंगी चाल।
ज्याँ ज्याँ देसे नीसरे, त्याँ त्याँ करे निहाल।।

साधु, नदी और मेघ एक स्थान से दूसरे स्थान पर सर्प की भाँति टेढ़े-मेढ़े गमन करते हैं और जिस स्थान से निकलते हैं, उस स्थान को समृद्ध बना देते हैं। नदी जहाँ से निकलती है, उसके निकटवर्ती भूभाग पर बसे ग्राम-नगर समृद्ध देखे जाते हैं। मेघों की जहाँ सन्तुलित वर्षा होती है, वह क्षेत्र भी सरसब्ज हो जाता है। इसी प्रकार सच्चे साधु जिस ग्राम-नगर में विचरण करते हुए निकलते हैं। उस ग्राम-नगर के बालक-बालिका, युवा-युवति एवं वृद्ध स्त्री-पुरुष सभी भीतर से अपने विचारों को निर्मल बनाकर, दुर्व्यसनों एवं कलह आदि का निवारण कर मैत्री का पावन सञ्चार करने में समर्थ होते हैं।

निर्ग्रन्थ श्रमण-जीवन भारत में ही नहीं, विश्व में सर्वोत्कृष्ट त्यागमय जीवन कहा जा सकता है। संसार में सभी लोग जिन सुख-सुविधाओं और धन आदि के सञ्चय के लिए पागल हो रहे हैं, श्रमण उनका बड़े शान्तभाव से परित्याग कर निवृत्तिमय जीवन अङ्गीकार करते हैं। जिनको वर्तमान में अधिक भोग सामग्री प्राप्त नहीं है, वे भी संयम-जीवन अङ्गीकार करके उनके प्रति भावी इच्छाओं और लालसाओं का परित्याग करते हैं। यह त्याग स्वेच्छापूर्वक किया जाता है। त्याग का यह रूप उत्कृष्टता से युक्त है।

इस उत्कृष्ट निर्ग्रन्थ श्रमण-जीवन में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह स्वरूप पाँच महाव्रतों का पालन किया जाता है। समस्त वाहनों का त्याग कर पदयात्रा की जाती है। धन-सञ्चय के नाम पर एक फूटी कौड़ी भी उनके पास नहीं होती है। अपने पास कुछ न होते हुए भी बिना दीनता के भिक्षा में मिले निर्दोष आहार-पानी से अपनी जीवन-यात्रा सञ्चालित करते हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव की रक्षा का भाव उनके चित्त में समाया रहता है। युवावय में शरीर में हुए प्राकृतिक परिवर्तनों का अनुभव करते हुए भी ज्ञानपूर्वक मन को नियन्त्रित रखते हैं तथा कामविकार को जीतने का प्रयत्न करते हैं। शरीर-यात्रा के लिए आवश्यक वस्त्र एवं उपकरण रखते हैं, किन्तु उनके प्रति भी ममत्व का विच्छेद कर देते हैं। चलने, बोलने आदि में यतना की साधना से परिपूरित रहते हैं।

साधना का यह उत्कृष्ट जीवन हम सांसारिक गृहस्थों के लिए श्रद्धा का केन्द्र बनता है, क्योंकि साधु-साध्वियों के पास कुछ नहीं होता फिर भी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के बल पर वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। वे अपने मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्तियों का गोपन कर तीन गुप्तियों का पालन करते हैं। भोगविलास की सुख-सुविधाओं में रचे-पचे लोग उनके त्यागमय एवं ज्ञान-सम्पन्न, चारित्र-सम्पन्न जीवन के प्रति अहोभावपूर्वक श्रद्धा से नत हो जाते हैं। उनके प्रवचनों को सुनने के लिए लोग समय-समय पर उपस्थित होते हैं।

जैन साधु-साध्वियों का ऐसा त्यागमय उत्कृष्ट जीवन होते हुए भी कई बार उन्हें कलह, द्वन्द्व, ईर्ष्या, द्वेष आदि से पूरित देखा जाता है। इसका तात्पर्य है कि **बाह्य भोग-सामग्री का त्याग कर देने पर भी आत्मविजय की साधना शेष रहती है।** परिवार, धन-सम्पदा आदि का त्याग तो बाह्य त्याग है, भीतर के विकारों का त्याग करना उससे कठिन है। बाहर का त्याग तो साधना की भूमिका तैयार करता है। लेकिन असली साधक तो प्रव्रज्या

अङ्गीकार करने के पश्चात् बनता है। बाह्य का त्याग भी प्रशंसनीय है, परन्तु उतना ही पर्याप्त नहीं है। हम संसारी लोग उस त्याग की प्रशंसा करते रहते हैं, क्योंकि हमसे वह त्याग नहीं हो पाता, किन्तु एक त्यागी साधक को उस प्रशंसा से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। अभी तो लक्ष्य दूर है। जिसके लिए साधक जीवन अङ्गीकार किया है, समस्त आत्मशुद्धि के साथ उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जुट जाना शेष है। साधु-जीवन प्रशंसा पाने के लिए नहीं अपितु आत्मसाधना के लिए, विकारों को जीतने के लिए अङ्गीकार किया गया है। जब तक देह के प्रति आसक्ति है, नियमित साधकचर्या के प्रति अभिमान का भाव है, गृहस्थों से प्रशंसा के शब्द सुनने की अभिलाषा है, गृहस्थों को अपने अनुकूल चलाने की प्रवृत्ति है और अच्छी बातें उपदेश मात्र तक सीमित हैं, तब तक साधना में चरण आगे नहीं बढ़ते हैं। प्रतिदिन आत्म-निरीक्षण कर यह चिन्तन किया जाना चाहिए कि मेरी देह के प्रति आसक्ति कितनी कम हुई, ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न तो नहीं हुए, भक्तों के प्रति राग तो पैदा नहीं हुआ, अहंकार और दीनता का भाव तो चित्त में वृद्धि को प्राप्त नहीं हुआ। विकारों के उदयकाल में समता की साधना से च्युत तो नहीं हुआ, इस प्रकार निरन्तर जो सजगतापूर्वक जीवन जीता है वह साधक जीवन में साध्य को प्राप्त कर पाता है।

जैन-आगमों में साधु-साध्वी की कठोर चर्या प्रतिपादित की गई है। उन्हें कामविकार आदि के निमित्तों से भी दूर रखा गया है। उन्हें सावधान किया गया है कि वे पाँच इन्द्रियों के विषयों के मनोज्ञ होने पर उनमें राग न करें और अमनोज्ञ होने पर द्वेष न करें। साधना के इस सूत्र को भी अपना लिया जाय तो भी साधक का जीवन साध्य की प्राप्ति में सहायक है।

साधना की ऊँचाई पर चढ़ने वाले साधक सब नहीं होते। कुछ साधक बाह्य इन्द्रिय-विषयों के आकर्षण और लोकैषणा से प्रभावित हो जाते हैं। लोकैषणा का छूटना-अत्यन्त कठिन है, किन्तु यह भी सच है कि यह आत्म-विशुद्धि एवं साधना की प्रगति में बाधक होती है। सब कुछ छूटने पर भी सम्मान प्राप्ति की इच्छा अथवा लोकैषणा जीवित रहती है और इसके रहते हुए साधक अपने साथियों के साथ भी ईर्ष्या-द्वेष के चंगुल में फँस जाता है। कहीं चित्त में प्रमाद अधिक होने पर वह विजातीय स्त्री या पुरुष के प्रति रागभाव में आबद्ध होकर अपने मूल साध्य से भटक जाता है। दशवैकालिकसूत्र (8.57) में साधक को जीवन में त्रिविध विषयों से दूर रहने की प्रेरणा की गई है-1. विभूषा, 2. स्त्रीसंसर्ग और 3. प्रणीत रस भोजन। ये तीनों बाह्य विष हैं। ये भी साधक को भटकाने वाले हैं। इनसे कदाचित् बचकर रहने वाला भी असहिष्णुता, अविवेकशीलता और लोकैषणा के कारण सन्मार्ग से भटक जाता है।

कोई साधु या कोई साध्वी जब किसी क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं तो उनसे ईर्ष्या उत्पन्न हो जाती है। फिर उनमें रहे हुए गुण भी दोष के रूप में दिखाई देते हैं। उनकी जब प्रशंसा होती है तो वह चित्त को स्वीकार्य नहीं होती है। उनके साथ व्यवहार में भी मलिनता एवं कटुता का प्रवेश हो जाता है। कभी उन्हें नीचा दिखाने का प्रयास किया जाता है। इस तरह का व्यवहार उसी साधक या साधिका में होता है, जो आत्म-साधना से अधिक लोकैषणा को महत्त्व देता है। वह साधक उत्कृष्ट होता है जो लोकैषणा के लक्ष्य से कोई प्रवृत्ति नहीं करता। वह समस्त प्रवृत्तियों को संवर एवं निर्जरा की साधना के लिए करता है। लोकैषणा से न संवर होता है और न ही निर्जरा की साधना होती है। वह तो आस्रव और बन्ध कराने वाली होती है। दशवैकालिकसूत्र (5.2.35) में कहा गया है-

पूयणट्ठा जसोकामी, माण-सम्माण-कामए।
बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ।।

लौकिक इच्छाएँ, जनसम्पर्क की रुचि, यश की अभिलाषा, साथी साधु-साध्वियों के प्रति मैत्री भाव न होना, उनके सद्गुणों के प्रति सहिष्णुता न होना, किसी की छोटी भूल को क्षमा न करना, कर्त्तव्य की अपेक्षा अधिकार को अधिक महत्त्व देना, ये ऐसे दोष हैं जो आत्मविकारों को प्रज्वलित करने में सहायक होते हैं। इसलिए मैं साधु क्यों बना हूँ, इस बात का बार-बार विचार होना चाहिए।

साधु के जीवन में किसी से वैर-विरोध नहीं होता, वह सबके प्रति मैत्री से सराबोर रहता है। उसके साथ अपेक्षित व्यवहार न करने वाले के प्रति भी उसका सद्भाव रहता है। वह सबका हित चाहता है, किन्तु किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखता।

यदि साधक-समुदाय में बड़े सदस्य छोटों की आवश्यकताओं एवं अनुकूलताओं का प्रेमपूर्वक ध्यान रखे तो छोटे साधु-साध्वी उनसे सहज ही सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहते हैं तथा उनका स्वाभाविक रूप से सम्मान करते हैं। बराबर वालों के साथ भी प्रेम एवं आदर का व्यवहार उनके मन को जीत लेता है। यदि छोटों से कोई भूल होती भी है तो हित की भावना से सावधान किया जा सकता है। किन्तु द्वेष उत्पन्न करने की भूल करना उचित नहीं है। जब हम किसी का बुरा मानते हैं तभी वैर की गाँठ बनती है। बुरा ही नहीं मानेंगे तो वैर उत्पन्न ही नहीं होगा।

आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. कहते थे-"जिसके मन में आकुलता, व्याकुलता और विषम भाव नहीं होते वही श्रमण कहलाने का अधिकारी है।" अर्थात् श्रमण कषायों का शमन करके समभाव में रहता है। कहीं विरोध भी होता है तो साधक उसका मुकाबला शान्ति के शीतल जल से करता है। जिनके साथ रहते हैं उनकी अनुकूलता को संयम-नियमों के अन्तर्गत महत्त्व दिया जाय तो शान्ति कायम रहती है। आचार्यश्री हस्ती यह भी कहते थे-"पारिवारिक शान्ति वहीं कायम रहती है जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने सुख को गौण कर दूसरे सदस्य के सुख को मुख्य मानकर व्यवहार करता है।"

पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. कहते हैं कि आत्मसाधक के लिए वीतरागता की साधना में प्राय: तीन मुख्य बाधक कारण हैं-1. व्यक्तिगत राग, 2. लोकैषणा और 3. अहंकार। व्यक्तिगत राग साधक के दृष्टिकोण को मलिन बना देता है। वह फिर सबके हित की भावना की अपेक्षा जिनके प्रति राग होता है, उनके ही पोषण में लग जाता है। जिससे दूसरे साथी साधुओं को भी कदाचित् भेदभाव का अनुभव होता है और वह भेदभाव कभी श्रावकों एवं श्राविकाओं के द्वारा अनुभव एवं चर्चा का विषय बन जाता है। हित का भाव तो प्रत्येक जीव के प्रति हो तथा सम्पर्क में आने वालों को साक्षात् उनके हित की प्रेरणा की जा सकती है, किन्तु राग में आबद्ध होने पर चित्त मलिन हुए बिना नहीं रहता। वह राग कभी अपना एवं जिसके प्रति ममत्व है, उसका भी अहित कर बैठता है। अनुराग हो सकता है, किन्तु राग करना उचित नहीं। कभी-कभी जिसके प्रति राग होता है उसका स्वार्थ पुष्ट न होने पर वह भी विरोधी बन जाता है। इसलिये साधना प्रत्येक क्षण सजगतापूर्वक साधक को सावधान करती है कि राग रहेगा तो फँसेगा। न राग करना है और न द्वेष करना है, अपितु मैत्री, करुणा, अनुकम्पा, दया और सात्त्विक स्नेह का सञ्चार कर सबको आत्मीयता प्रदान करनी है। यह आत्मीयता भी स्वयं के एवं दूसरों के उत्थान में सहायक होती है। अत: साधु-साध्वी किसी भी साधु-साध्वी के साथ रहें, उन्हें कोई समस्या नहीं होनी चाहिए, क्योंकि आत्मीयता सबको जोड़ लेती है। साधना तो तभी सफलीभूत होती है जब प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समता में रहकर आत्मीयता का सञ्चार किया जाय। अमुक साधु-साध्वी के साथ ही रहने की प्रवृत्ति साधु की उच्च साधना में सहायक नहीं, बाधक होती है। सामाचारी के पालन में सावधान रहते हुए व्यर्थ के कार्यों का परित्याग कर समता को पुष्ट करने में ही साधु की साधना विकास को प्राप्त करती है।

धर्म मात्र आत्मशुद्धि का ही साधन नहीं, वह दूसरों के साथ किस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक रहा जाय इसका भी प्रशिक्षण देता है। गृहस्थ के लिए परिवार, समाज एवं संघ धर्माचरण की प्रयोगशालाएँ हैं तो साधु-साध्वी के लिए साधु-संघ अथवा साध्वी संघ धर्माचरण की प्रयोगशाला है। जो दूसरों के साथ नहीं रह पाता है, इसका तात्पर्य है कि अभी उसकी साधना में कुछ कमी है। जब तक मोह का नाश नहीं होता है तब तक कोई भी पूर्णत: निर्दोष नहीं है। सबमें कोई न कोई दोष विद्यमान है। इसलिये दूसरों के दोषों पर दृष्टि रखने की बजाय गुणदर्शन एवं गुणग्रहण का भाव रखना चाहिए। बाहर में असमाधि के हेतु रहने पर भी चित्त में समाधि बनी रहे, यही साधना की कसौटी है। कटुवचनों को सुनकर भी प्रतिक्रिया न करना, अनुकूल

व्यवहार न होने पर भी मुस्कुराकर आत्मीयता प्रदान करना वातावरण में बदलाव कर देते हैं। साथ में रहकर भी एकान्त का अनुभव, आत्मदर्शन, आत्ममूल्यांकन, आत्मोन्नति का लक्ष्य परीक्षित होता रहे। वेश परिवर्तन कर लेना मात्र एवं बाह्य समस्त संयोगों का त्याग कर लेने मात्र से ही कषायों अथवा विकारों का दहन नहीं होता। बाह्य संयोगों को छोड़ना सरल है, किन्तु भीतर के दोषों को छोड़ना कठिन है।

साध्वाचार का लक्ष्य सम्मान प्राप्त करना नहीं है। धर्म का प्रचार कर लोगों को अधिकाधिक जोड़ना भी नहीं है। प्रभावना करने के लिए विशेष आयोजन की आवश्यकता भी नहीं है। साधु-साध्वी अप्रभावना का कोई कार्य न करे तो भी प्रभावना स्वत: हो जाती है। अपनी ओर से किसी का अनादर न हो, स्वयं की ओर से अपयश का कोई कार्य न किया जाय तो स्थितियाँ स्वत: ही साधना में सहायक हो जाती हैं। आगम और थोकड़े याद कर लेने तथा अच्छा प्रवचन दे लेने से भी साधना में गहराई नहीं आती है। साधना का प्रभाव तो व्यवहार में परिलक्षित होता है।

वर्तमान में साधु-साध्वियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है, किन्तु वहाँ साधना की गुणवत्ता कितनी है, यह चिन्तनीय है। साधना में आत्म शक्ति को प्रकट करने की आवश्यकता है।

साधक व्यक्तिगत राग और लोकैषणा के साथ अहंकार से रहित होता है। यह अहंकार ज्ञान में भी बाधक है तो सहिष्णुता, क्षमाशीलता, आत्मीयता और मैत्री के सञ्चार में भी बाधक बनता है। इसलिये साधक को अपने अहंकार पर विजय प्राप्त करने के लिए सतत स्वाध्याय, ध्यान का आलम्बन लेना चाहिए एवं गुरुजनों के उपकार को नहीं भूलना चाहिए।

60वाँ दीक्षा-दिवस

गुरु हीरा गुणगान

महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

(तर्ज- तू कितनी अच्छी है.....)

तू संघ शास्ता है,
तू संघ की आस्था है।
तू संघ का नायक है,
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव।।

नन्दन वन सा महक रहा गण,
नन्दन वन सा महक रहा गण,
यति धर्म की हरियाली है,
संयम समाया कण कण,
कहीं गहराई है, कहीं ऊँचाई है,
मेहनत रंग लाई है,
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव।।

कितना सुन्दर शासन तेरा,
कितना सुन्दर शासन तेरा,
कितनी सुन्दर मर्यादा है और अनुशासन तेरा,
तेरे इस शासन पे, तेरे अनुशासन पे,
जाऊँ बलिहारी है,
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव।।

आगम धारा बहती कल-कल,
आगम धारा बहती कल-कल,
श्रद्धा दृढ़ होती है मेरी,
आस्था बढ़ती पल-पल,
पंचम आरे में चौथे आरे के पावन नज़ारे,
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव।।

हस्ती गुरु के पाट विराजे,
हस्ती गुरु के पाट विराजे,
वीर प्रभु के पट्टधर भगवन, सुधर्मा से साजे,
दूज के चन्दा-सी, संघ में वृद्धि है,
ज्ञान समृद्धि है,
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव।।

-संकलन, श्री धनसुरेश जैन, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्वं साहीणमिहेव तुब्भं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 14, गाथा 16

अर्थ-जिनकी प्राप्ति के लिए लोग तप तपते हैं, वह सब प्रचुर धन, स्त्रियाँ और उनके साथ अत्यधिक काम-भोग तथा स्वजन (परिवार) तुम्हें यहीं स्वाधीनरूप से प्राप्त हैं, फिर इनको परलोक में पाने के लिए क्यों श्रमण बनना चाहते हो?

विवेचन-उत्तराध्ययनसूत्र के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन में भृगु पुरोहित के दो पुत्र प्रव्रज्या अङ्गीकार करने के लिए माता-पिता से आज्ञा माँगते हैं। माता-पिता उन्हें सहज आज्ञा प्रदान नहीं करते हैं। अपितु अनेक तर्क-वितर्क देकर उन्हें संसार के सुखों का भोग करने की प्रेरणा करते हैं। वैदिक मान्यता के अनुसार वे प्रस्तुत गाथा में तर्क देते हैं कि जिन धन आदि की प्राप्ति के लिए लोग तपस्या करते हैं, वे तुमको यहाँ स्वाधीनतापूर्वक सहज प्राप्त हैं तो क्यों संयम अङ्गीकार करना चाहते हो?

प्राय: धर्म की साधना का प्रयोजन भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति एवं परलोक में देवलोक के सुखों की उपलब्धि को समझा जाता है। धर्म-साधना करने से, श्रमण-जीवन अङ्गीकार करने से एवं तपस्या करने से विपुल भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है, ऐसी मान्यता भारतीय परम्परा के अधिकांश धर्मों की रही है, किन्तु इनकी प्राप्ति के लिए धर्म-साधना करना जैनदर्शन उचित नहीं मानता है। जैनदर्शन के अनुसार धर्म-साधना का लक्ष्य आन्तरिक राग-द्वेष आदि विकारों पर विजय प्राप्त करना है। इसमें सभी बाह्य भोग-सामग्री की लालसा का त्याग किया जाता है। भोग-सामग्री के प्रति रुचि का भी त्याग करके आत्मिक उन्नयन हेतु संवर एवं निर्जरा की साधना की जाती है। पूर्वबद्ध कर्मों का क्षय किया जाता है। धर्म-साधना एवं तपस्या करने से धन आदि की प्राप्ति भले ही हो, किन्तु इनकी प्राप्ति का लक्ष्य साधना का दोष है।

भृगु पुरोहित अपने पुत्रों से कहते हैं-"इस जीवन में तुम्हारे क्या कमी है? यहाँ हमारे पास प्रभूत मात्रा में धन है, तुम विवाह करके स्त्रियों के साथ उत्कृष्ट काम-भोग का सेवन कर सकते हो, स्वजनों का भी समागम है और इन सबका सुख प्राप्त करने में तुम सहज स्वाधीन हो फिर परलोक में इन सुखों की प्राप्ति के लिए श्रमण क्यों बनना चाहते हो?"

अपने पिता भृगु पुरोहित के इस तर्क के उत्तर में दोनों पुत्र कहते हैं-"धर्म की धुरा को वहन करने वाले साधकों को धन, स्वजन तथा इन्द्रिय विषय भोगों से कोई प्रयोजन नहीं होता। इन सबका त्याग करके ही धर्म की साधना की जाती है। स्वर्ग में भी इन सुखों की कामना हमारे मन में नहीं है। हम तो गुणसमूह के धारक श्रमण बनना चाहते हैं। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की आराधना करना चाहते हैं। हमें तो भिक्षावृत्ति को स्वीकार कर ग्राम-नगर आदि में विहार करके अपने भीतर रहे विकारों को नष्ट करना है। कितना सुन्दर प्रत्युत्तर था इन भव्य पुरोहित पुत्रों का।

धर्म की प्रतिष्ठा प्राय: भय एवं प्रलोभन के आधार पर की जाती है, किन्तु इससे धर्म का वास्तविक स्वरूप दूषित होता है। जिसे त्याज्य समझा जाता है, उसी की प्राप्ति के लिए धर्म-साधना करने का औचित्य नहीं है। धर्म तो आत्म-विशुद्धि का साधन है। विकारों पर विजय का सोपान है। उन पुरोहित-पुत्रों को पूर्वजन्म का स्मरण हो आता है, जिसमें उन्होंने निर्ग्रन्थ मुनिधर्म का पालन किया था। अत: उन्हें ज्ञात था कि मुनिधर्म पालन का क्या उद्देश्य एवं महत्त्व है। इसीलिए उन्होंने कहा कि हम प्रव्रज्या अङ्गीकार करके जिस धर्म को धारण करना चाहते हैं, उसमें भोगों की इच्छा का कोई प्रयोजन नहीं है। हम तो अष्टविध कर्मों का क्षय कर मुक्ति का वरण करना चाहते हैं।

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

चेतनाशील साधक की साधना

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

त्यागी-विरागी, तपस्वी, परोपकारी सन्त-समाज सारे देश में, कोने-कोने में फैला हुआ है। उनके सत्संग में, उनके समागम में आने वाले कितने ही युवक, बाल, वृद्ध और दुर्व्यसनों में फँसे लोगों के जीवन में सुधार होता है। बहुतों का हुआ है, हो रहा है और होता रहेगा। प्रत्येक नगर में, ग्राम में ऐसे अनेक बालक हैं जिनको धूम्रपान का व्यसन लग गया है और अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों के भी शिकार हो गये हैं। क्या उनका सुधार शस्त्रधारी सैनिकों से हो पायेगा? नहीं, उनके लिये शस्त्रधारी सैनिक उपयोगी नहीं, अपितु सन्त-सती जन ही उनके मन को मोड़ सकते हैं। वे ही लोगों में फैले दुर्व्यसनों को जड़ से मिटा सकते हैं और उनकी शक्ति की दिशा को देश एवं समाज के अभ्युत्थान के कार्यों की ओर मोड़ सकते हैं।

साधना करने वाले साधकों को तीन रूपों में रखा जा सकता है-(1) चेतनाशील और स्वस्थ, (2) चेतनाशील किन्तु अस्वस्थ और (3) चेतनाशून्य-मात्र वेश को धारण करने वाले। प्रथम चेतनाशील साधक वे हैं जो बिना किसी दूसरे की प्रेरणा के कर्त्तव्य-साधन में सदा जागृत रहते हैं। आचार और विचार में जरा भी स्खलना आई कि वे तत्काल सम्भल कर इष्ट मार्ग में प्रवृत्त होते हैं और अनिष्ट से निवृत्त होते हैं। विषय-कषाय पर विजय प्राप्त करने में प्रतिपल आगे बढ़ना ही जिनकी साधना का रूप है। क्रोध, लोभ और भय-मोह के द्वन्द्व से वे कभी साधना च्युत नहीं होते। जैसे नदी के प्रवाह में गिरकर भी कुशल नाविक का जहाज गन्तव्य मार्ग नहीं भूलता, किन्तु प्रवाह को चीरकर बाहर निकल आता है, वैसे ही चेतनाशील स्वस्थ साधक की जीवन नैया भी विकारों से पार हो जाती है। दूसरे दर्जे के साधक चेतनाशील होकर भी अस्वस्थ होते हैं। आहार-विहार और आचार-विचार में शुद्धि के कामी होते हुए भी वे प्रमादवश चक्कर खा जाते हैं और विविध प्रलोभनों में लुब्ध और क्षुब्ध हो जाते हैं। उन्हें उस समय किसी योग्य गुरु द्वारा प्रेरणा की आवश्यकता रहती है। जब वे शारीरिक, मानसिक कष्ट में घबरा जाते हैं और दृश्य-श्रव्य-भव्य भोगों में लुभा जाते हैं, तब कर्त्तव्य की साधना धुन्धली हो जाती है। यदि कोई प्रबुद्ध उस समय उन्हें नहीं सम्भाले तो वे साधना-मार्ग से च्युत हो जाते हैं। तीसरे चेतनाशून्य साधक हैं जो व्रत-नियम की अपेक्षा छोड़कर केवल वेश को वहन करते हैं। छिपे कुकर्माचरण करने पर भी जब कोई कहता है-"महाराज! संयम नहीं पालने की दशा में वेश क्यों रखते हो?" तब वे कहते हैं-"यह तो गुरु का दिया हुआ बाना है, भला इसे कैसे छोड़ सकता हूँ।" इस प्रकार पारमार्थिक साधना को छोड़कर आरम्भ-परिग्रह का सेवन करने वाले चेतनाशून्य साधक हैं। फिर भी वे वेश और भिक्षावृत्ति को नहीं छोड़ते। वे बुझे हुए दीपक या पञ्चर हुई साइकिल की तरह स्व-पर के लिए भारभूत हैं। उन्होंने घर-द्वार का त्याग किया, निरारम्भी-अपरिग्रही मुनिव्रत लिया, किन्तु संसार के मोहक माया-जाल में सब भूल गये। उनकी साधना में गति नहीं रही, अतः कल्याण-मार्ग में सहायक नहीं हो सकते।

सन्त लोगों का काम तो उचितानुचित का ध्यान दिलाकर रोशनी पहुँचाना, सर्चलाइट दिखाना, मार्ग बताना है, लेकिन उस मार्ग पर चलना तो व्यक्ति के अधीन है। -*'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पुस्तक से*

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 13
ISSN 2249-2011

प्रवचन

स्वभाव में रहकर होती है संयम और वैराग्य की साधना

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

संसार के विभाव से हटकर स्वभाव में रमण करने वाले, कषाय से हटकर वीतरागता को प्राप्त करने वाले तीर्थङ्कर भगवन्त तथा इस मार्ग में चरण बढ़ाकर कषाय शमन का और इन्द्रिय दमन का मार्ग पकड़कर परम इष्ट पद को प्राप्त करने वाले पञ्च परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थङ्कर भगवान महावीर की अन्तिम अनुपम वाणी जीवन का आधार धर्म को मानकर चलती है। दुर्गति से रोकने वाला और सद्गति में ले जाने वाला धर्म है। स्वभाव में रखने वाला कोई तत्त्व है तो वह है धर्म। वीतराग वाणी में 'वत्थु सहावो धम्मो' वस्तु का स्वभाव धर्म कहा गया है। कुछ क्षणों के लिए, कुछ सैकेण्डों के लिए कोई भी अपना स्वभाव, अपना धर्म छोड़ दे तो त्राहि-त्राहि मच जाती है, परेशानियाँ बढ़ जाती हैं, लोगों का मन ऊँचा-नीचा होने लगता है। साधना सम्पन्न होने पर भी ऐसे अस्वाभाविक स्थानों में बैठने का मन नहीं करता।

महाराष्ट्र में भूकम्प आया, कितनी-सी देर के लिए आया। मात्र 6-8 सैकेण्ड के लिए धरती ने अपना धर्म छोड़ा और परिणामस्वरूप जन-धन हानि का भीषण रूप देखने को मिला। कुछ क्षण के लिए सागर में ज्वार आता है, वह तूफानी ज्वार वाली लहर आती है तो उस लहर में न जाने कितने प्राणी बहकर चले जाते हैं। कुछ मिनट के लिए यदि अग्नि आगे बढ़ जाय तो विनाश हो जाता है। जलने वाले पदार्थों के साथ हवा का झोंका आया और अग्नि बढ़ जाये तो त्राहि-त्राहि पैदा कर देती है। वायु भी जब अपना सहज बहने का धर्म छोड़कर झंझावात रूप में बहने लगे तो प्रलय आ जाती है। इस प्रकार ये पाँच भूत पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश कुछ क्षणों के लिए धर्म छोड़ दें तो भयानक स्थितियाँ बन जाती हैं। चिन्तन करने की अपेक्षा है। आज दिनों से, महीनों से एवं वर्षों से ही नहीं अपितु जन्मों से जीव अपना स्वभाव छोड़कर चल रहा है। विचार करें इस जीव की क्या गति होने वाली है। अपने स्वभाव को छोड़ने के कारण कितनी उथल-पुथल है, कितनी अशान्ति है। एक भी विभाव में जाने से, एक भी पाप का रास्ता स्वीकार करने पर यह जीव अधः पतन की ओर चला जाता है।

हजार वर्ष का संयम पालन करने वाला वह कण्डरीक एक इन्द्रिय के वशीभूत होकर नरक में चला जाता है। मात्र एक रसना पर ही तो काबू नहीं कर पाया और कण्डरीक भोगाकांक्षी बना, आहार पर विजय पाने के स्थान पर उस में डूब गया। श्रमण बनकर भी नीचे गिर गया। एक भी इन्द्रिय पर जिनका काबू नहीं है, न जाने उन जीवों क्या गति होती है। अचम्भा और आश्चर्य यह है कि हमने अपने जीवन को समझा ही नहीं है। मरने वाला कोई ओर है, मरने वाले कोई दूसरे हैं और हम कोई दूसरे हैं। अपनी मति में, अपने व्यवहार में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता है। शास्त्र कह रहा है कि मानव जिस धर्म के सहारे जी रहा है, जिस धर्म के आधार पर टिका हुआ है अगर उस स्वभाव को, उस धर्म को छोड़ दिया तो अनन्तकाल से जो दुःख पा रहा है उसके दुःखों का अन्त होने वाला नहीं है।

स्वभाव में लाने के लिए और विभाव को छोड़ने के लिए उत्तराध्ययनसूत्र के वचन सम्यक् दिशा प्रदान कर रहे हैं। छोटी-सी भूल भी कैसे दुःखदायी हो जाती है। कैसे स्वभाव में रहकर चलना है और जीवन का कैसे

निर्माण करना है उसका विश्लेषण चौदहवें अध्ययन में कहा जा रहा है। भूमिका स्वरूप धर्म की बात आपके सामने रखी है।

धर्म की आराधना सम्यग्ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र के माध्यम से होती है और इस धर्म के चार द्वार भी कहे हैं- दान, शील, तप और भाव। धर्म का प्रथम द्वार दान को कहा है। कहते हैं मानव! अगर तूने पाया है तो देना सीख जा। अगर भाग्य अनुकूल है, पुण्यशाली क्षणों में जीवन गुज़र रहा है तो दे। ज्यों-ज्यों देता जायेगा, त्यों-त्यों बढ़ता जायेगा।

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर,
दान दिया धन ना घटे, कह गए दास कबीर।

अनुकूल-प्रतिकूल हर स्थिति में देना चाहिए। अगर भाग्य उल्टा चल रहा है तो देगा तब भी समाप्त होगा और नहीं देगा तब भी नाश होगा, परन्तु जो दे देगा उसे भविष्य में जरूर मिलेगा। इसलिये दे देगा तो ही बचेगा। यदि पुण्यवानी नहीं रही तो ब्याज, समाज, जहाज और नाज़ सबका डूबने का नम्बर आयेगा, चाहे जितने प्रयत्न कर लो। जिन्होंने दिया वे कभी खाली नहीं रहे। जिन्होंने एक बार का सुदान दिया, उनके लिए दान देव भव का कारण बन गया। कारण ही नहीं बना इस एक दान ने जन्म-जन्म सुधार दिये। एक पाप पूरा जीवन खराब करता है। एक बार का ही का नहीं, जन्म-जन्मान्तर का जीवन खराब कर देता है। दिया नागश्री ने भी, पर दिया किसलिये-पाप छुपाने के लिए, अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए, घर में अच्छा लगने के लिए। अपनी मान-प्रतिष्ठा को बचाने के लिए साधु को ज़हरीला कड़वा तुम्बे का दान दिया। उस दान से धर्मरुचि अनगार काल कवलित हो गये। पापस्वरूप एक बार का दिया हुआ यह दान एक-एक नरक में दो-दो बार ले जा रहा है। एक बार का उल्टा दिया हुआ भव बढ़ा रहा है और एक बार का दिया हुआ सुदान जन्म-जन्म सुधार रहा है। आचार्य भगवन्त फरमाया करते थे-नाव डूबती भी है, नाव तिरती भी है। कोई व्यक्ति जिस नाव में बैठा है उसी में छेद करेगा तो वह डूब जायेगी। पुण्यशाली जीवन प्राप्त कर पाप का छेद बनाना डूबना है और धर्म का सहारा भव-सागर से पार लगाने वाला है। एक बार के दान ने ही छह जीवों को देवलोक में पहुँचाया। देवलोक में चार पल्योपम की आयुष्य प्राप्त की। मारवाड़ी में कहावत है-**पड्यो पड्यो समंदर भी सूख जाये।** यदि नदियों के द्वारा पानी की आवक नहीं हो तो वह समुद्र भी धीरे-धीरे सूख जाता है। इसी प्रकार इतनी लम्बी 4 पल्योपम की आयुष्य भी धीरे-धीरे व्यतीत हो जाती है।

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केई चुया एगविमाणवासी।
पुरे पुराणे उसुयारणामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 14.1

देवलोक में आयु के समाप्त होने पर वहाँ से च्यव कर इषुकार राजा, कमलावती रानी, भृगु पुरोहित और यशा पुरोहित ने मानव जन्म धारण किया और एक विमान में रहने वाले उन देवों में से दो देव अभी देवलोक की आयुष्य ही व्यतीत कर रहे हैं। पूर्वजन्म में छहों ने साधु को दिया था। दो ने दिया था और दो ने संकुचित भावना से दिया था, साथ ही दो ने तो देने वालों के सहयोगी बनकर अनुमोदना की थी। देने का ऐसा फल कि वे सभी इषुकार नगर में जन्म प्राप्त करते हैं। एक देवताओं के भोग की तरह भोग वाले, ख्याति वाले, प्रसिद्धि वाले, भवनों एवं धन-धान्य से परिपूर्ण राजघराने में आया है और दूसरा पुरोहित कुल में आया हैं, दोनों सम्मानित कुल हैं। पिछले जन्म की करणी से इषुकार राजा और भृगु पुरोहित बनते हैं। जिन्होंने पूर्वभव में कुछ संकुचित भावना से दिया था, वे इस भावना के कारण पुरुष के स्थान पर स्त्री रूप में जन्म लेते हैं। एक राजरानी और एक पुरोहितानी बनती है।

अभी दो जीव देवलोक में हैं। भृगु पुरोहित दम्पती की अवस्था बीतने लगी, घर में सम्पदा है, भोग सामग्री है, परन्तु सन्तान नहीं है। कहावत है-संसारी जीव को सातों सुख नहीं मिलते हैं। शरीर अनुकूल है तो परिवार अनुकूल नहीं मिलता। परिवार अनुकूल है तो शरीर अनुकूल नहीं मिलता। शरीर और परिवार दोनों अनुकूल

हैं तो खाने के लाले पड़ते हैं। घर में प्रेम है, पर पुत्र नहीं है। पुत्र है वहाँ प्रेम नहीं है। कहीं पुत्र और प्रेम होने पर खाने को नहीं है। कहीं खाने को खूब है, पर विचार मेल नहीं खाते हैं। परिवार है, पैसा है, पर प्रकृतियाँ नहीं मिल रही हैं; इस कारण रोज झगड़े हो रहे हैं। इस प्रकार अनुकूलता के साथ प्रतिकूलता जीवन में चलती रहती है। कभी-कभी सारी अनुकूलताएँ मिल जाती हैं, लेकिन पुत्र की प्राप्ति नहीं होती है। इस पुत्र अप्राप्ति के दु:ख के कारण अच्छे घर वाले और ज्ञान वाले भी मोह में आ जाते हैं, विचलित हो जाते हैं। मुझे एक परिवार की याद आ रही है जिसने दूसरों को धर्म का सही स्वरूप समझाया और यदि कोई कहीं देवी भवानी आदि के यहाँ जाते तो उन्हें बहुत समझाने का प्रयास करते थे। ऐसे अनेक लोगों को मिथ्यात्व से हटाकर धर्म में लगाने का प्रयास किया था। ऐसे एक नहीं अनेक घरों से मिथ्या मोह उनके द्वारा मिटाया गया। लेकिन दुर्भाग्यवश 50 साल तक स्वयं के सन्तान नहीं हुई तो उस परिवार ने भी भैरूजी के जाना चालू कर दिया। उपदेश देना जितना सरल है, दूसरों को कहना सरल है, धर्म में दृढ़ रह पाना बड़ा मुश्किल है। सन्तान की जब प्राप्ति नहीं हुई तो भृगु पुरोहित दम्पती भी जो मिल जाता उससे सन्तान-उत्पत्ति के विषय में पूछते। अपने दु:ख की कहानी कहते। देवलोक में रहे दो देव जिन्होंने पूर्वभव में देने वालों का सहयोग कर अनुमोदना की थी। जब उनको ज्ञात हुआ कि पूर्वभव के साथी पुत्र उत्पन्न नहीं होने से मोह, मिथ्यात्व का सेवन करने वाले बनते जा रहे हैं। तब वे दोनों देव भृगु पुरोहित के यहाँ उन्हें बोध देने के लिए पहुँचते हैं-

एक दिन सुर माया करके, चला आया मुनि बन करके,
पुरोहित देख विनय करता, पुत्र मैं कैसे नहीं पाता,
देव कहे पुरोहित सुनो, होगा पुत्र अवश्य,
वय परिणाम में दोनों भाई लेंगे संयम,
करेंगे करणी सुखकारी, त्याग की महिमा है भारी।
ध्यान से सुणिये नर-नारी, त्याग की महिमा है भारी।।

दोनों देवों ने साधु का वेश बनाया कि जिनके तेजस्वी मुख मण्डल एवं संयम-त्याग को देखकर वे बहुत बड़े ज्ञानी हैं ऐसा प्रतीत हो रहा था। भृगु पुरोहित ने भी उन्हें बड़े ज्ञानी जानकर सोचा कि इनके सामने मेरी व्यथा कहनी चाहिये।

अपनी व्यथा भी हर किसी के सामने नहीं कहनी चाहिए। हर एक के सामने अपनी व्यथा का कथन करने जायेंगे तो मिलने को कुछ नहीं मिलेगा और हँसी के पात्र भी बन जायेंगे। आज आप जिसके पास जाओगे वह वहीं अपना रोना चालू कर देता है। लेकिन साधु बने देवों की तेजस्विता को देखकर भृगु ने सन्तों के चरणों में नमन किया और कहा-धर्म की कृपा से सब कुछ पाया, बस एक कमी है, मेरे सन्तान नहीं है। लगता है आप बड़े साधक हैं, ज्ञानी हैं, हम पर भी कृपा करें। सन्तों ने कहा-पुरोहितजी एक नहीं दो-दो सन्तान होगी। सन्तान होगी ये सुनने के साथ ही भृगु का चेहरा खिल गया। प्रसन्नता हुई, हर्ष की लहर दौड़ी। सन्तों ने आगे कहा-लेकिन दोनों सन्तान ऐसी पुण्यशाली होगी कि वे दीक्षा लेंगी। भृगु पुरोहित ने कहा-मैं तो संयम-साधना नहीं कर सका, लड़के धर्म-संयमी बनते हैं तो अच्छा ही है। वह ऊपरी मन से कह रहा है, बाहर में कुछ और अन्दर में कुछ और ही चल रहा है। पुत्र होने तो दो, संयमी बनाना तो हमारे हाथ में है।

देव सन्त चले गये। समय आने पर यशा के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुए। पुरोहित ने विचार किया, शहर में रहेंगे तो महाराज आयेंगे, महाराज आयेंगे तो ये पुत्र दर्शन के लिए जायेंगे और दर्शन को जायेंगे तो उपदेश सुनेंगे तथा उपदेश सुनेंगे तो वैराग्य आ जायेगा। इसलिये ऐसी जगह चलो जहाँ न तो महाराज आये और न ही वैराग्य जगे। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसूरी। सन्त कह गये थे कि दोनों पुत्र सन्त बनेंगे। माँ-बाप ने कसर नहीं छोड़ी, ऐसी पहाड़ी की ढाणी में रहे जहाँ सन्त पहुँचे ही नहीं। आपको तो पता है कि रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, ऊँटगाड़ी नहीं पहुँचे ऐसी जगह मारवाड़ी पहुँचे हुए हैं। कर्नाटक जिले में ऐसी दुर्गम पहाड़ी जगहों पर भी मारवाड़ी पहुँचे हुए हैं। पेट भरने के लिए ऐसे स्थलों पर भी पहुँचने वाले लोग हैं। पर

जीवन सुधार में आगे आने वाले विरले हैं। स्थान बदला, जन्म के साथ संस्कार बदले, माँ-बाप ने सिखाना चालू किया कि साधु देखने में बड़े भोले होते हैं, ये सफेद कपड़े पहनने वाले साधु मुँह पर मुँहपत्ति लगाते हैं और वे बच्चों को उठाकर ले जाते हैं। ऐसे साधुओं से बचकर रहना। जैन समाज में भी आज ऐसे लोग हैं जो सन्त को देखकर बच्चे को डराते हैं। देख बाबा आ गया, पकड़ ले जायेगा। आप तो भाग्यशाली हैं। ऐसे भी लोग आज हैं जिनके घर में कितनी सन्तान है, किसका नाम क्या है, मालूम ही नहीं। बापजी! ये म्हारो छोटो छोरो, ये मझलो छोरो, यो म्हारो बड़ो छोरो यो पाँचवों यो छठो, लेकिन नाम याद कोनी। विचार करें उस घर में सन्तान क्या जीवन-निर्माण के रास्ते पर लगेगी? जिनके परिवारजनों को बच्चों के नाम याद रखने की फुरसत नहीं, वे बच्चों को धर्म के क्या संस्कार देंगे। आज मुस्लिम का कोई बच्चा ऐसा नहीं जो उर्दू नहीं जानता हो। वह चाहे राजस्थान में हो, चाहे कर्नाटक में हो, चाहे उत्तरप्रदेश में हो, चाहे मध्यप्रदेश में या चाहे तमिलनाडु में हो ऐसा खोजकर तो बताओ जो उर्दू नहीं जानता हो। उनको कोई नहीं सिखाता तो माँ-बाप बैठकर सिखाते हैं। कुरान पढ़ना न जानता हो, नमाज़ पढ़ना न जानता हो ऐसा बच्चा मुश्किल से मिलेगा। चाहे वह कन्नड़ बोल रहा है, चाहे गुजराती बोल रहा है, चाहे मराठी बोल रहा है लेकिन पत्र व्यवहार उर्दू में करता है।

मैं आपसे पूछूँ आपके यहाँ प्राकृत जानने वाले कौन? आपने किसी को प्राकृत जानने वाला बनाया ही नहीं। आज भी ऐसे बच्चे हैं, मारवाड़ी हैं, जयपुर के हैं उनको हिन्दी नहीं आती है। आप भारतवासी हैं, आप मारवाड़ी हैं, राजस्थान के रहने वाले हैं और आपको हिन्दी नहीं आयेगी तो कहना ही क्या। अंग्रेजी में बातचीत करते मिल जायेंगे। हमारे खानदान कुल के संस्कार गौण हो गये। मानसिकता हो गई कि धर्म रहे या नहीं रहे, धन रहना चाहिये। हमें क्या सिखाना चाहिये। एक ग्वाले के घर में जन्म लेने वाला जानता था कि जैन सन्त क्या लेते हैं। वह जानता था, पर जैन घराने में जन्मे हुए सैकड़ों बच्चे नहीं जानते हैं। सचेतन क्या है और अचेतन क्या है? यह भी नहीं जानते हैं, क्योंकि उसको आवश्यक माना ही नहीं। बिना कारण जीवों को नहीं मारना चाहिये। जीव किसमें है, किसमें नहीं, यह बच्चा पूछता है तो माँ-बाप बच्चे को कहते हैं महाराज से पूछो। कितने विपरीत संस्कार बच्चों को दिये जाते हैं। गुरुदेव फरमाया करते थे कि मक्खी को शहद में कितना ही अन्दर डाल दो वह ऊपर आ जायेगी, उसके पंख चिपकेंगे नहीं और यदि वह निकलकर उड़ जायेगी तो समझो, वह शहद असली है। जैसे असली शहद के भीतर में रही मक्खी फँसती नहीं है, उसी तरह धर्म के संस्कार प्राप्त व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी चला जाये, तब भी वह तिर जायेगा, डूबेगा नहीं।

एक दिन बच्चों को सन्तों का संयोग मिलता है। जिनके पूर्वजन्म के संस्कार प्रबल होते हैं, उन्हें पुण्ययोग से निमित्त मिल ही जाता है। दोनों बालक नगर के बाहर खेल रहे थे, तभी सन्तों को आते देखा और घबरा गये। झटपट एक वृक्ष पर चढ़ गये। वृक्ष पर बैठे हुए देखने लगे कि ये साधु क्या करते हैं? साधुओं ने वृक्ष के नीचे आकर चारों तरफ भूमि देखी और भूमि को पूँजकर आसन बिछाकर झोली खोली। झोली से भिक्षा पात्र निकालकर यतना से आहार करने लगे। साधुओं के विवेकपूर्ण व्यवहार को देखकर दोनों बालकों का भय और भ्रम दूर हो गया। वे चिन्तन-मनन करने लगे कि ऐसे साधुओं को तो हमने कहीं देखा है। ऊहापोह करते-करते बालकों को पूर्व जन्म का स्मरण हो गया, जिसमें वे स्वयं साधु थे। दोनों बालक वृक्ष से नीचे उतरे और साधुओं के पास जाकर बोध प्राप्त किया। बोध पाकर दोनों ने दीक्षा ग्रहण करने का निश्चय कर लिया। उनको एक समागम ऐसा मिला जिसके परिणामस्वरूप वे निवृत्ति मार्ग पकड़ लेते हैं। आपका जीवन निवृत्ति की ओर कब लगेगा? प्राय: पिता अपने पुत्र को शिक्षा देते हैं लेकिन यह ऐसा अध्ययन है जिसमें पुत्र पिता को समझाते हैं। लड़कों ने पिता को समझाया है और पिता के समझने के बाद पिता ने माँ को समझाया है और चारों

ही दीक्षा लेने को तैयार हो गये। चारों को संसार से निकलता देखकर राजा और रानी को भी वैराग्य आ गया। संयम की साधना पर लगते हैं। कदाचित् संयम ग्रहण नहीं कर सको तो अच्छे कार्य करने का, एक सद्गृहस्थ बनने का लक्ष्य रखें। पूर्व अध्ययन में चित्त मुनिराज ने ब्रह्मदत्त को कहा था-राजन्! धर्मी नहीं बन सको तो कम से कम अनार्य कर्म तो छोड़ दो। दूसरों को दु:ख देकर दु:ख मोल मत लो। हिंसा आदि अनार्य कर्म को तिलाञ्जलि दे दो। यदि इतना-सा भी छोड़ दोगे तो दुर्गति से बच जाओगे। पढ़ना है तो शास्त्र पढ़ो, स्वाध्याय करके जैन आगमों का पारायण करो। लेकिन नहला ऊपर दहला, दहला ऊपर गुलाम चलता रहा तो आपने धर्म को समझा ही नहीं है। दुकान पर गये ग्राहक को विदा किया तो ताश चालू हो गई। ज्यों ही फुरसत मिली ताश के पत्ते लेकर बैठ जायेंगे। स्वयं बैठते हैं और साथ में घरवाली को भी लेकर ताश खेलने बैठ जाते हैं। मैं ये बातें जो कह रहा हूँ, वे अच्छे-अच्छे घरानों की बात कह रहा हूँ। जो समय आप ताश खेलने में बरबाद करते हो उस समय में बच्चों को संस्कार दो।

अपने व्यवहार में परिवर्तन लाइये आप घराने से श्रेष्ठी हैं अगर आचरण से श्रेष्ठ नहीं बनोगे तो नीचे जाने से बचाने वाला कोई नहीं मिलेगा। जो इस बात को ध्यान में रखकर चलेगा, वह सुख-शान्ति को प्राप्त करेगा।

मुसाफ़िर

श्री विजेन्द्र जैन

मुसाफ़िर हैं हम सब यहाँ के,
मतकर फिजूल की फ़िकर,
कोई रहने वाला नहीं यहाँ पर,
जाना है सबको आज या कल।

खाली हाथ आया था,
खाली हाथ जायेगा,
भाग रहा तू किसके पीछे,
सब यहीं रह जायेगा।

आयेगी जाने की बारी,
साथ कोई नहीं जाएगा,
पत्नी जायेगी चोखट तक,
बेटा घाट पहुँचाएगा।

गाड़ी बंगला छोड़ तुझे,
अर्थी पर ले जायेंगे,
चिता बनाकर तेरे नाम की,
राख तेरी बनाएँगे।

याद में तेरी घरवाले
तस्वीर तेरी बनाएँगे
दीवार पर टाँग तुझे,
हार उस पर चढ़ाएँगे।
चार दिन तुझे याद करेंगे,
बाद में सब भूल जायेंगे।

अब भी सम्भल जा प्यारे तू
मत इतना गुमान कर,
धर्म कर्म तू कर ले अच्छे,
मोह माया को त्याग कर।

मुसाफ़िर है हम यहाँ के,
फ़िकर किसी की, न तू कर,
मेरा नहीं कुछ भी यहाँ पर,
यही सोच कर आगे बढ़।

आत्मसात् कर अपने आप से,
भवसागर को पार कर,
कर्म ही तेरे साथ जायेंगे,
इसी बात को याद रख।

-77/235, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 18
ISSN 2249-2011

प्रवचन

भारत माँ का रखें मान

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव 15 अगस्त, 2022 को जैन स्कूल महामन्दिर, जोधपुर में फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

नमिराजर्षि ने एक सूत्र हमारे समक्ष रखा है। हम उस सूत्र को सन्देश भी कह सकते हैं। जीवन की सार्थकता किसमें है? जीवन में समस्त गुण किसके पीछे आते हैं? समाधान है जीवन में श्रद्धा है तो सब गुण दबे पाँव चले आते हैं। आप जिन्हें त्रितत्त्व कहते हैं, वे हैं- देव, गुरु और धर्म। तीनों तत्त्वों पर श्रद्धा जागृत हो गई तो सभी गुण आ जायेंगे। तत्त्व रुचि ही श्रद्धा है।

देवेन्द्र और राजर्षि नमि में प्रश्नोत्तर चल रहा है। देवेन्द्र और नमिराजर्षि में लम्बा संवाद हुआ है। अपने पूर्व जन्म का स्मरण, अभिनिष्क्रमण, मिथिला नगरी का कोलाहल, अन्त:पुर के जलने जैसे प्रश्नोत्तर आप सुन चुके हैं। आगे भी देवेन्द्र और नमिराजर्षि के प्रश्न-उत्तर सुनने को मिल रहे हैं। देवेन्द्र ने नमिराजर्षि से कहा-आप राजधर्म का पालन करें, फिर चाहे दीक्षा ले लें। आप राज्य की रक्षा और सुरक्षा का बन्दोबस्त करके दीक्षित होना चाहें तो दीक्षा ले सकते हैं। आप राज्य के चारों ओर एक मजबूत परकोटा बनवाकर, चारों तरफ खाई खुदवाकर दीक्षा लेना चाहें तो दीक्षा ले लें। आपको पहले राज्य की रक्षा-सुरक्षा सुनिश्चित करनी है यही आपका राष्ट्र धर्म है, क्षात्र-धर्म है।

नमिराजर्षि एक-एक प्रश्न का समुचित उत्तर देते हैं। जब रक्षा-सुरक्षा की बात आई तो आज भारत की रक्षा-सुरक्षा पर भी हमें विचार-चिन्तन करना चाहिए। हम आजादी का अमृत-महोत्सव उमङ्ग-उल्लास के साथ मना रहे हैं। हमारे जसराजजी चौपड़ा साहब जिन पर गुरु की कृपा तो है ही, सरस्वती की भी मेहरबानी है। सारे श्रोतागण भी चाहते हैं कि जज साहब बोलते रहें। जज साहब पूरे परिवार के साथ गुरुदेव के दर्शन-वन्दन करने आए। चौपड़ा साहब ने कहा था-''आज विश्व बारुद के ढेर पर खड़ा है। चारों तरफ अस्त्र-शस्त्र की वृद्धि की होड़ है। परमाणु युद्ध का खतरा है। हर देश में अशान्ति है, अराजकता है। ऐसे में भारत वर्ष की सुरक्षा फौज के जांबाज फौजियों से ही नहीं, शस्त्रधारी के साथ-साथ शास्त्रधारी सेना भी चाहिये तभी शान्ति हो सकती है।''

आज आपको आत्मा की रक्षा-सुरक्षा पर सोच-विचार करना होगा, क्योंकि भारत देश की सुरक्षा के लिए शस्त्र सेना चाहिए और आत्मा की सुरक्षा के लिए शास्त्र सेना चाहिए।

देवेन्द्र प्रश्न करता है, नमिराजर्षि उत्तर देते हैं। हम मूल गाथा का पारायण करें। आप सब हाथ जोड़कर अपनी नज़र पुस्तक पर केन्द्रित करें अथवा पूरे मनोयोग से जिनको याद है वे गुनगुनायें और जिनको याद नहीं है, वे मनोयोगपूर्वक सुनें।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।
सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गलं।
खंतिं निउण-पागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं।।
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च ईरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेणं पलिमंथए।।
तवनारायजुत्तेण, भित्तूणं कम्मकंचुयं।

मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए।।

नमिराजर्षि ने कहा-मैंने श्रद्धा रूपी नगर बनाया। नगर की उपमा क्यों दी? तो कहा-न कर इति नगर। आज नगर में सबसे ज्यादा कर हैं। क्या सेल्स टैक्स, इनकम टैक्स, वेलफेयर टैक्स, रोड़ टैक्स और जी.एस.टी. आदि आज नगर की स्थिति दूसरी है। पहले गाँवों में सात-सात मञ्ज़िल के मकान बने हुए थे वहाँ से नगर में सामान आता था। आज तो नगर या शहर से गाँवों तक सामान पहुँचता है।

श्रद्धा नगरी का मैंने परकोटा भी बनवाया। परकोटा भी ऐसा मजबूत जहाँ की एक ईंट हिलाने में पूरी सेना को पसीना आ जाए, जहाँ की एक कंकरी भी हिलने वाली नहीं है। वह परकोटा है क्षमा का। 'माँ और क्षमा दोनों नेक हैं, क्योंकि माफ करने में दोनों एक हैं।'

संसार में भारत देश ही एक ऐसा देश है जिसके साथ माँ लगाया जाता है। अपने पड़ौसी देश पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश या श्रीलंका ही क्यों न हों उनके साथ माँ शब्द नहीं लगता, लेकिन भारत के साथ माँ लगाया जाता है। अमेरिका जैसा देश हो या इंग्लैण्ड जैसा देश किसी के साथ माँ शब्द नहीं लगता जबकि भारत के साथ माँ जोड़ा जाता है। भारत का सैनिक युद्ध में विजयश्री का वरण करके आ जाय तो भी वह माँ की भाँति भारत देश को प्रणाम करता है और अपने आपको इसका सपूत मानता है। भारत ने युद्ध में जीत हासिल की मगर उसने पड़ोस के पाकिस्तान को उसकी ज़मीन वापस लौटा दी। क्यों? क्योंकि भारत के पास माँ की ममता जो है। यह बात केवल भारत माता में ही हो सकती है। माफ करना माँ से बेहतर किसी को नहीं आता है।

माँ में उदारता होती है, दयालुता होती है, आत्मीयता होती है जबकि औरों में वैसा अपनत्व नहीं होता। माँ गलती करने पर क्षमा करती है। माँ ही नहीं, बेटे के बेटे हो जाएँ तब भी दादी कहती हैं-हाल ओ टाबर है। माँ हो या दादी वह माफ करना जानती है। उसमें क्षमा का स्वाभाविक गुण रहता है।

भारत जैसी संस्कृति पूरे विश्व में कहीं नहीं मिलती। एक समय था जब भारत विश्व गुरु था। कभी भारत विश्व गुरु था तो आज क्यों नहीं? यह प्रश्न सामने आता है। प्रश्न है तो प्रश्न का उत्तर भी है। भारत की संस्कृति में विकृति के दो प्रमुख कारण हैं। एक है दासता और दूसरी है विलासिता। भारत में अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेजों की गुलामी से तो देश आजाद हो गया, परन्तु आज भी वही मानसिकता है। अंग्रेज तो चले गये लेकिन अंग्रेजी छोड़ गये। पहले ऋषि, महर्षि पढ़ाते थे, आज पढ़ाने वाले पैसे के पुजारी हैं। आज भी मानसिकता में वही अंग्रेजी है। पढ़-लिखकर डिग्रीधारी तो आज भी तैयार होकर निकल रहे हैं लेकिन संस्कृति के पुजारी या सभ्यता के संस्कार वाले आज कहाँ हैं?

आज जन्म से लेकर मृत्यु तक संस्कारों का कोई अता-पता नहीं। बच्चे का जन्म हॉस्पिटल में, अन्तिम श्वास अस्पताल में मतलब क्या? जन्म से लेकर मृत्यु तक कहीं कोई संस्कार नहीं मिलते। जबकि पहले जन्म से मृत्यु तक 16 संस्कार थे। पहला गर्भ संस्कार था, माता मदालसा ने अपने छह-छह पुत्रों को पालना झुलाते-झुलाते संस्कार दिये जिससे वे सभी वैरागी बन गये। आज तो अधिकांश माताएँ अपने बच्चों को जन्मते ही दूध की बोतल मुँह में पकड़ाती है। पैदा होते ही बोतल, बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ स्कूल जाने लगा तो उसके साथ पानी की बोतल, बच्चा फिर कुछ बड़ा हुआ तो कोल्ड ड्रिंक की बोतल, कोल्ड ड्रिंक में मजा नहीं आता इसलिये बीयर की बोतल और अन्त समय में फिर ग्लूकोज की बोतल का ही सहारा रह जाता है। युवावय में वह धड़ल्ले से शराब पीने लगता है। वह शराब के नशे में पीकर कहीं पड़ा रहता है। यह क्यों हुआ? माँ ने शुरु से बच्चे को बोतल दी, वह कहाँ तक पहुँच गई इसका खयाल कौन करेगा? माँ के स्तनों के दूध से बच्चा स्नेह, सहयोग और शक्ति का सच्चा साथी बनता है।

आज भारत में पहले जैसे संस्कार नहीं रहे। इसलिये आज जगह-जगह मार-पीट होती रहती है। लूट-पाट, चोरी-डाका और हिंसा का बोलबाला है।

शिक्षा और संस्कार श्रेष्ठ नहीं रहे इसलिये विश्व गुरु भारत विलासिता के गर्त में जा रहा है। आज भारत में स्वतन्त्रता दिवस मनाया जा रहा है। वह भी आजादी के 75वें अमृत महोत्सव वर्ष का।

दो शब्द हैं, एक है-स्वतन्त्रता और दूसरा है स्वच्छन्दता। भारत वर्ष के जो भी नियम-क़ायदे-कानून हैं उनकी पालना करना स्वतन्त्रता है और नियमों की अनदेखी करना या कानून नहीं मानना अथवा अनुशासन से नहीं रहना, इसका नाम है स्वच्छन्दता। हम भारत के स्वतन्त्र नागरिक बनें, पर स्वच्छन्द नागरिक नहीं।

आज हम प्रभु के सामने होते हैं या गुरु के सम्मुख होते हैं तो सभी धार्मिक क्रियाएँ अच्छी तरह से होती हैं। प्रभु या गुरु अथवा कोई श्रावक भी देख रहा है तो चाहे सामायिक हो या प्रतिक्रमण, हर धार्मिक क्रिया वैसे ही चलती है। कोई देख रहा है तो विधिपूर्वक और अन्धेरा है तथा कोई देखता नहीं है तो उसमें भी गफ़लत होती ही है।

प्रभु मेरे सामने हैं या नहीं, पर मैं तो प्रभु के सामने हर क्षण हूँ, वे तो मुझे देख रहे हैं। प्रभु हर समय, हर क्षण, हर पल हमारे सामने हैं यह भाव आ जाय तो धार्मिक क्रिया में कहीं कोई गफ़लत नहीं होगी? हम स्वतन्त्र बनें, पर स्वच्छन्द नहीं।

नमिराजर्षि कहते हैं कि मैंने श्रद्धा नगरी बना ली है। उसका परकोटा भी मैंने मजबूत क्षमा का बनाया है। चारों ओर पानी का भराव रहे इसलिये खाइयाँ भी खुदवा ली हैं। मैंने नगरी की रक्षा और सुरक्षा के लिए तोपें-तलवार आदि का भी प्रबन्ध कर लिया है। पर ये सब आध्यात्मिक हैं।

आज व्यक्ति-व्यक्ति में देश के प्रति प्रेम और भक्ति होनी चाहिये। गर्व एवं विश्वास होना चाहिए। भक्ति भी कई तरह की होती है-देश-भक्ति, गुरु-भक्ति और प्रभु-भक्ति। देशभक्ति के दीवाने हँसते-हँसते जेलों में गये। उन्होंने अनेक यातनाएँ सहन की। उन्हें मारा गया, पीटा गया और यहाँ तक कि स्वतन्त्रता सैनानियों को नमक से भीगी बेंतो से पीटा गया। कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें जिन्दे को दीवारों में चुनवा कर मौत के मुँह में पहुँचा दिया। तोपों के मुँह पर बाँधकर बारूद से उड़ा दिया गया। तलवार तन में आर-पार कर दी गई।

देश-प्रेम, देश-भक्ति से एक-दो नहीं, हजारों लोगों ने आजादी के यज्ञ में अपनी-अपनी आहुतियाँ दी हैं। तब कहीं जाकर भारत माता को बन्धनों से मुक्ति मिली है। इसलिये कहा है-''हजारों-लाखों सितारे अस्त हुए तब भारत आजाद हुआ।''

भारत की सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, व्यवहार महान् था। आज देश स्वतन्त्र है, लेकिन सभ्यता और संस्कृति में वही गुलामी की मानसिकता दिखाई देती है। हमारा खान-पान, रहन-सहन, मौज-शोक और पढ़ाई-लिखाई सबमें आज वही मानसिकता घर कर गई है-वस्तुएँ भले ही विदेशी हों, पर व्यवहार तो देशी होना ही चाहिए।

आप आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। जरूरत है आज स्वतन्त्रता की। आप संकल्प करें कि आप सरकारी कानूनों का पालन करेंगे। राष्ट्र-रक्षा के लिए सदा तत्पर रहेंगे। मैं आपको नियम करवा रहा हूँ और वह नियम है कि हम भारतीय संस्कृति के पोषण-रक्षण-संवर्धन के लिए प्रात: उठते ही माता-पिता और बड़ों के चरण-स्पर्श करके प्रणाम करेंगे और उनका आशीर्वाद लेंगे। आज प्रणाम में भी आधा-अधूरापन आता जा रहा है। लोग प्रणाम करते हैं तो उनके हाथ चरण-स्पर्श के बजाय घुटने तक ही जाते हैं। आप विधि-विधान के अनुसार बड़ों को प्रणाम करके उनका आशीर्वाद लेंगे। यह कोई बड़ा नियम नहीं है। सभी इसका पालन कर सकते हैं।

आप इस नियम से शुरुआत करें तथा उसके पश्चात् भारत की संस्कृति के पोषण में अपनी शक्ति लगायें। अपने हस्ताक्षर (साइन) भी हम अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी में ही करें। मातृ भाषा का संरक्षण करें, भारतीय संस्कृति का पोषण करें। एक समय था जब

भारत प्रामाणिक, ईमानदारों का देश था और आज? सौ में से नब्बे बेईमान, फिर भी मेरा देश महान्। नहीं, हमें प्रामाणिक बनना है, ईमानदार बनना है, आज की स्थिति और कानूनी व्यवस्था व्यक्ति को बेईमान बना रही है। पर फिर भी हम प्रामाणिक बनने का ही लक्ष्य रखें। क्योंकि कभी महात्मा गाँधी ने कहा था-''मेरे देश में कोई भी नंगा-भूखा नहीं रहे।'' बेईमान भूखा नहीं रहेगा, पर हमें तो हमारी संस्कृति को जीवित रखना है।

आजादी के अमृत महोत्सव पर हम ओछी-हल्की मानसिकता का त्याग कर श्रेष्ठ संस्कृति एवं संस्कार के संवाहक बनने का लक्ष्य बनायें। हम सुधरें जग सुधरे, हम बढ़ें तो देश बढ़े। इन्हीं शुभ भावों के साथ अपनी वाणी को विराम.....।

प्रभु ने मार्ग बताया

श्री भँवरसिंह कक्कड़

(तर्ज :: श्याम चूड़ी बेचने आया.....)

प्रभु ने मार्ग बताया,
पूज्य आचार्यश्री हीरा गुरु ने जिनशासन खूब दीपाया।
आत्म शुद्धि का अवसर आया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।1।।
नवकार मन्त्र है सुखकारी,
सुमिरो-सुमिरो सब नर-नारी।
भव सागर पार कराया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।2।।
पूज्यश्री हीरा गुरुवर के गुण गाएँ,
श्रद्धा से सिर यह झुक जाए।
मन शुद्धि का अवसर आया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।3।।
गुरु वचनों पर प्रीति बढ़ाना,
विनयशील की महिमा गाना।
मूल सूत्र में बतलाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।4।।
मानव जीवन मिलणो ओखो,
मिलग्यो अब के अवसर चोखो।
शुभ भावों में मन को लगाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।5।।
निन्दा-विकथा में मत राचो,
मत सुख-दु:ख रो पोथो बाँचो।
अन्तर रे भावाँ ने जगाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।6।।
तत्त्व ज्ञान गुरुवर दर्शाते,
अन्धकार सब दूर हटाते।
हृदय में भक्ति ज्योत जगाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।7।।
जिनवाणी पावन दर्पण है,
मन मेरा इस पर समर्पण है।
गुण-दोष का ज्ञान कराया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।8।।
श्री रत्नसंघ है साताकारी, श्रद्धालु सब ही नर-नारी।
सामायिक और स्वाध्याय का लाभ उठाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।9।।
समता से मन को जोड़ो, ममता का बन्धन तोड़ो।
है सार ज्ञान का पाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।10।।
प्रभु हृदय पवित्र बना देना,
अब सच्ची राह दिखा देना।
मैं शरण तुम्हारी आया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।11।।
हम मंगल कामना करते हैं,
गुरु चरणों में शीश नमाते हैं।
'भँवर' ने जोड़ सुनाया,
गुरु दर्शन-वन्दन से आत्मभाव सुख पाया।।12।।

-महावीर भवन के पास, सरवाड़-305403 (राज.)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 22
ISSN 2249-2011

प्रवचन

पूँजनी की उपयोगिता

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य एवं सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. की निश्रा में विराजित श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 05 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर स्थानक में चातुर्मासिक प्रवेश के पश्चात् फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री राजकुमारजी लोदिया, जयपुर के द्वारा किया गया। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

सामायिक में उपयोग आने वाले प्रमुख रूप से 5 उपकरण होते हैं-(1) बैठने के लिए ऊनी/सूती आसन, (2) पहनने के लिए बिना सिला हुआ श्वेत चोलपट्टा, (3) ओढ़ने के लिए बिना सिला हुआ दुपट्टा, (4) वायुकाय के जीवों की रक्षा के लिए मुँहपत्ती और (5) जीवों की यतना के लिए पूँजनी। श्रावकवर्ग के लिए पाँच उपकरण और श्राविका वर्ग के लिए चोलपट्टा एवं दुपट्टा के बिना शेष 3 उपकरण का प्रावधान है। पाँच उपकरण के अलावा आवश्यक हो तो श्रावक-श्राविका माला और पुस्तक भी रख सकते हैं। ये दो उपकरण वैकल्पिक रूप में होते हैं, अनिवार्य रूप में नहीं।

सामायिक दो प्रकार की होती है-द्रव्य सामायिक और भाव सामायिक। द्रव्य सामायिक में इन पाँचों उपकरणों का उपयोग अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु सामायिक में राग-द्वेष से रहित होने के भाव रखना, राग-द्वेष से रहित होने के लिए प्रयत्न करना, यथाशक्ति राग-द्वेष से रहित होते जाना भाव सामायिक है। द्रव्य सामायिक से भाव सामायिक में आना उत्सर्ग मार्ग है और भाव सामायिक से द्रव्य सामायिक में आना अपवाद मार्ग है। द्रव्य सामायिक की साधना में सहयोगी साधन उपकरण की हम बात करेंगे-उपकरण किसे कहते हैं?

जो सामायिक साधना में उपकार या सहकार करे उसे उपकरण कहते हैं। इन पाँच उपकरणों में पाँचवाँ उपकरण है-पूँजनी। आज हम पूँजनी के विषय में बताते हुए पूँजनी की महत्ता, विशेषता, उपयोगिता को समझने का प्रयास करेंगे।

तीर्थंकर की माता-करुणा, साधु की माता-अष्ट प्रवचन माता अर्थात् पाँच समिति-तीन गुप्ति है तो श्रावक की माता-यतना होती है। श्रावक यतना करने के लिए और जीवों को यातना से बचाने के लिए पूँजनी का प्रयोग/उपयोग, उपयोगपूर्वक करता है। यह भी ध्यान रखें कि पूँजनी पूँजने के काम में आती है, प्रमार्जन में काम आती है, इसीलिए पूँजनी को प्रमार्जनिका भी कहते हैं। पूँजनी पूँजने के काम में आती है, झाड़ने में नहीं। पूँजना एवं झाड़ना दोनों क्रियाएँ अलग-अलग हैं। पूँजनी का अर्थ-रास्ते से जीवों को पूँजकर यतनापूर्वक हटाना, उनकी रक्षा करना है ताकि कोई जीव पैरों के नीचे न आ जाये। जबकि झाड़ने का मतलब घर को झाड़ना, घरवालों को झाड़ना, किसी जीव को झाड़कर भगाना आदि। इन सबमें हिंसा का भाव उत्पन्न होता है।

यदि कोई साधक पूँजनी को पूँजने अथवा प्रमार्जन के उपयोग में लेने के बजाय झाड़ने के रूप में (खिड़की, दरवाजा, स्थान, पट्टा आदि) काम में लेते हैं तो यह पूँजनी रूप धर्म-उपकरण अधिकरण (शस्त्र) बन जाता है। जीव रक्षा के स्थान पर जीवघात करने में निमित्त बन जाता है। इसलिए जीव यतना का साधन समझकर हम पूँजनी से पूँजें, पूँजनी से झाड़ें नहीं।

पूँजने के प्रयोग में आने वाले तीन साधन हैं-(1) पूँजनी, (2) ओघा (रजोहरण) और (3) डांडिया। इन तीनों साधनों का उपयोग पूँजने के रूप में होता है। इन तीनों उपकरणों की उपयोगिता अलग-अलग रूप में होती है-पूँजनी छोटी होती है, ओघा (रजोहरण) और

डांडिया बड़ा होता है। जहाँ अल्पस्थान की प्रतिलेखना-प्रमार्जन करना होता है वहाँ पूँजनी का प्रयोग होता है और स्थूल स्थान में डांडिया और ओघे का उपयोग होता है। पूँजनी भी योग्य होनी चाहिए जिससे भलीभाँति जीवों की रक्षा की जा सके। कुछ लोग ऐसी पूँजणियाँ रखते हैं जो रेशम की बनी हुई होती है जो मात्र शोभा-शृंगार के काम की चीज है, विवेकपूर्वक पूँजने की नहीं। प्रत्युत साधक उस आकर्षक एवं कीमती पूँजनी की ममता के पाश में बँध जाता है। वह पूँजनी को सदा अधर-अधर रखता है, मलिनता के भय से जरा भी उपयोग में नहीं लेता। गुरुदेव फरमाते हैं-

जीव पूँजवा कारणे, पूँजनी (डांडियो) लीणो हाथ।
बिन पूँज्या कल्पे नहीं, एक पाउंडी रात।।

ओघा जिसे रजोहरण भी कहा जाता है इसका उपयोग साधु-साध्वी करते हैं। डांडिया का विधान श्रावक-श्राविकाओं के लिए होता है। ओघे में डंडी के ऊपर एक वस्त्र जिसे निसिथिया कहा जाता है उसे लगाया जाता है, डांडिये में डंडी के ऊपर वस्त्र नहीं होता।

श्रुत परम्परा से पूँजनी में 50, डांडिये में 150 और रजोहरण में 200 फलियों का विधान है। गुरुदेव फरमाते हैं-ओघे का घेरा इतना हो कि जिसे घुमावदार स्थिति में फैलाने पर हाथी का पैर सदृश आकार बन सके, इतना विशाल घेरा होने पर यतना में सहायक, सहूलियत एवं सही रूप से स्थान पूँजा जा सकता है। पूँजनी की डण्डी के सम्बन्ध में भी गुरुदेव फरमाते हैं-डण्डी में किसी भी प्रकार की आकृति न हो, हमारे यहाँ स्थानकवासी परम्परा में पूँजनी की डण्डी आकृति रहित ऊपर से पूर्ण प्लेन होती है जबकि अभी अधिकांश श्रावकों के पास पूँजनी की डण्डी में ऊपर के भाग पर आकृति बनी होती है। बहिनों की पूँजनी में डण्डी के स्थान पर 'नाकी' का प्रचलन है। भाई डण्डी वाली पूँजनी रखें और बहिनें नाकी युक्त पूँजनी। इसमें भी कई बार आपस में परिवर्तन हो जाता है। बहिनों के पास भाइयों की पूँजनी और भाइयों के पास बहिनों की पूँजनी आ जाती है। हम आज पूँजनी के सम्बन्ध में जो-जो सुधार कर सकते हैं वह करें। आजकल कई श्रावक-श्राविका पूँजनी को अपने साथ रहे बैग में ही रखते हैं, सामायिक के समय पूँजनी को बाहर नहीं निकालते, यतना के लिए प्रयोग में नहीं लेते-यह दूषण है। जैसे-सैनिक के पास हरदम, हर समय बन्दूक पास में रहती है उसी प्रकार सामायिक के साधक के पास हरदम पूँजनी और साधु-साध्वी के पास रजोहरण रहना चाहिए। यदि कोई सैनिक जिसके पास बन्दूक का लाइसेंस तो है, पर बन्दूक अपने घर पर छोड़कर जंग लड़ने जा रहा हो और सामने से शत्रु के आ जाने पर उसे कहे कि मैं घर जाकर बन्दूक लेकर आता हूँ फिर लडूँगा। ऐसी स्थिति में वह सैनिक जो बन्दूक रहित है अपने आपको बचा नहीं सकता है और शत्रु को परास्त नहीं कर सकता। ठीक इसी तरह सामायिक साधक (चाहे श्रावक या चाहे साधु) पूँजनी/रजोहरण को अन्यत्र रख साधना करे तो यतना का अवसर आने पर सम्यक् यतना नहीं कर सकता। इसलिए सामायिक के समय हमेशा पूँजनी साधक के सामने हो, साथ में हो, बैग में नहीं हो।

बृहत्कल्पसूत्र दूसरे उद्देशक के सूत्र-30 में 5 प्रकार के रजोहरण (ओघा/पूँजनी) बताये हैं। जिसके द्वारा धूलि आदि द्रव्य रज और कर्ममल रूप भाव-रज दूर की जाये उसे रजोहरण कहते हैं। रजोहरण पाँच प्रकार के होते हैं-

1. और्णिक-जो भेड़ आदि की ऊन से बनाया जाए, वह और्णिक है। 2. औष्ट्रिक-जो ऊँट के केशों से बनाया जाये, वह औष्ट्रिक है। 3. शानक-जो सन (जूट) के वल्कल से बनाया, जाए वह शानक है। 4. वच्चाचिप्पक-वच्चा का अर्थ डाभ या घास है। उसे कूटकर और कर्कश भाग दूर कर बनाये गये रजोहरण को वच्चाचिप्पक कहते हैं। 5. मुंजचिप्पक-मुंज (नारियल की जोटी) को कूटकर तथा उसके कठोर भाग को दूर करके बनाये गये रजोहरण को मुंजचिप्पक कहते हैं।

वर्तमान में ऐसे ओघे भी आते हैं जिनका निर्माण हस्तकला से किया जाता है और मशीनों के द्वारा भी ओघे का निर्माण किया जाता है। वर्तमान में दोनों ही प्रकार के रजोहरण/पूँजनी का प्रयोग होता है।

पूँजनी को बाँधना कैसे ?

यह कठिन कार्य है, ऐसा सिर्फ आपका भ्रम है क्योंकि कोई भी कार्य करते-करते ही आता है। जैसे- बहनों ने जब पहली बार रोटी बनाई होगी तो रोटी भारत के नक्शे जैसी बनी होगी, लेकिन आज टी.वी. देखते-देखते, मोबाइल चलाते-चलाते, बातें करते-करते रोटी बिल्कुल गोल बना लेती हैं। कहते हैं-**करेंगे तो आसान, नहीं करेंगे तो आसमान।**

करने से ही असम्भव जैसा दिखने वाला कार्य भी आसान हो जाता है अन्यथा सामान्य सा कार्य भी आसमान जैसा विशाल प्रतीत होता है। इसलिए पूँजनी बाँधना पूँजनी की प्रतिलेखना करना बिल्कुल आसान है, अभ्यास करें और सफलता पाएँ। आज हमने पूँजनी की उपयोगिता के विषय में जाना-1. पूँजनी पूँजने के लिए है, झाड़ने के लिए नहीं। 2. पूँजनी में 50, डांडिये में 150 और ओघे में 200 फलियाँ होती हैं। 3. पूँजनी की डंडी ऊपर से आकृति रहित हो। 4. श्रावकों के पास श्रावकों की और श्राविकाओं के पास श्राविकाओं की ही पूँजनी होनी चाहिए। 5. रजोहरण के पाँच प्रकार हैं।

इन सभी विषयों को समझकर अपनी-अपनी पूँजनी की प्रतिलेखना करने का लक्ष्य बनाकर यतना-विवेक के साथ प्रमार्जनिका का प्रयोग करने का लक्ष्य रखें। इन्हीं शुभ भावों के साथ।

सामायिक की चार भावनाएँ

श्री सुमतिचन्द जैन

सामायिक की चार भावनाएँ हैं,
व्यावहारिक जीवन का मार्गदर्शन।
जिससे सम्यक्त्व भाव में रम जाता है अन्तर्मन।।

इन भावनाओं से होता है
अपना और समाज का उत्थान।
ज्ञानी जनों ने माना है सब जीवों को समान।।

छोटे-बड़े, ऊँच-नीच का भेद नहीं, न ही लिङ्ग भेद।
सब प्राणी सुख चाहते हैं, दु:ख में करते खेद।।

सब जीव मेरे मित्र हैं और हैं मेरे समान।
सामायिक मैत्री भावना कराती है ऐसा भान।।

गुणीजनों के गुणों का प्रमोद करूँ,
ऐसे गुण मैं भी पा जाऊँ।
सामायिक साधना में मैं गुणीजनों के गुण गाऊँ।।

ज्ञानियों ने इसे प्रमोद भावना बताया है।
इस ही से गुण ग्रहण का मार्ग प्रशस्त हो पाया है।।

दु:खी जीवों को देख करुणा मेरे उर आये।
मेरा मन उनके मंगल का शुभ भाव भाये।
सामायिक में ऐसी करुणा भाई जाती है।
जो भावी भव के दु:खों से बचाती है।।

दुर्जन व्यक्तियों के प्रति राग-द्वेष न रख
और न कोई व्यवहार
माध्यस्थ भाव रख, करूँ उनके सुधार का विचार।
इनका शीघ्र कल्याण हो, इनमें हो सुधार।।

माध्यस्थ भावना से दुर्जन प्रवृत्ति में होता है सुधार।
वैर भाव अन्त होकर हो जाता है प्यार।।

परिवार और समाज में करें,
इन चारों भावनाओं को समाहित।
होगा सबका हित।
सम्बन्ध मधुर बनेंगे होगा सर्वांगीण विकास।
अध्यात्म भावना जग जायेगी होगा खुद अहसास।।

-110, अशोक विहार, विस्तार गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 25
ISSN 2249-2011

प्रवचन

गुरु के प्रति विनय एवं समर्पण

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा चौमासी पर्व एवं गुरु पूर्णिमा पर जैन स्कूल, महामन्दिर, जोधपुर में 13 जुलाई, 2022 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मजिज्ञासु बन्धुओं!

आज आषाढ़ी पूर्णिमा है। इस दिन को गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं। भारतीय संस्कृति में प्रभु से पहले गुरु को वन्दन करना बताया गया है। गुरु बिना जीवन शुरू नहीं होता। आप बोलते भी हैं-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

गुरु और भगवान दोनों खड़े हैं। पहले वन्दना किन्हें करना? तो कहा है-गुरुदेव हमारे उपकारी हैं, उन्होंने ही तो भगवान के स्वरूप को बताया है। उपकारी का उपकार मानने के लिए पहली वन्दना गुरु को करनी चाहिये। ज्ञानियों ने ठीक ही कहा-

गुरु को सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा माँहि।

गुरु-आज्ञा में धर्म है। जो गुरु की आज्ञा का आराधन करता है वह प्रभु की आज्ञा का आराधन करता है। गुरु ही हमारा सबसे बड़ा उपकारी है।

एक गुरुभक्त ने तपस्या की। गुरु की आज्ञा आराधन में धर्म मानने वाला शिष्य गुरु के आदेश की पालना करता है तो वह भी विनय-तप के अन्तर्गत है। मान लीजिये एक गुरुभक्त ने 30 दिन की तपस्या का संकल्प करके 29 दिन की तपस्या पूर्ण की। तीसवें दिन गुरुदेव ने कह दिया-तुम अब आगे मत बढ़ो। गुरु-आज्ञा को सर्वोपरि मानने वाला शिष्य तुरन्त पारणा करता है तो यह उसका विनय-तप है। वह यह नहीं सोचे कि आज तो मेरा मासखमण-तप हो जाता। वह तो गुरु-आज्ञा में रहकर तप करता है और गुरु-आज्ञा से ही पारणक भी।

तप के दो भेद हैं। एक है-बहिरंग तप तो दूसरा है-अन्तरंग तप। दोनों तपों में अन्तरंग तप मुख्य है। उत्तराध्ययनसूत्र का पहला अध्ययन विनयश्रुत है। वहाँ गुरु के विनय के बारे में बताया गया है, न कि भगवान के बारे में।

गलती किसी से भी हो सकती है। गलती होने पर गुरु मुझे रोकेंगे-टोकेंगे। भगवान तो रोकने-टोकने नहीं आते। गुरु आत्महित से कहता है, इसीलिये तो कहा है-

गुरु की डाँट, खोलती है मन के कपाट।

जो शिष्य गुरु के प्रति विनय-भक्ति और समर्पण करना नहीं जानता, वह अपनी आत्म-शक्ति जागृत नहीं करता। भक्त को आत्म-शक्ति जागृत करनी है तो गुरु-आज्ञा और गुरु के प्रति समर्पित होना पड़ेगा।

गुरु हस्ती की आज्ञा का आराधन गुरु हीरा ने किया और गुरु हीरा की आज्ञा में भावी आचार्यश्री चल रहे हैं इससे आप इतना तो समझ ही सकते हैं कि गुरु-आज्ञा पालने में धर्म है। जो भी गुरु ने कहा, वह स्वीकार है। शिष्य 'तहत्ति' कहकर उसका पालन करता है। विनयवान भक्त को पग-पग पर सम्पत्ति प्राप्त होती है।

आप कहेंगे-कौनसी सम्पत्ति? शिष्य भौतिक सम्पत्ति नहीं, आध्यात्मिक सम्पत्ति पाता है। क्यों?

तो शास्त्र कहता है विनय आए बिना धर्म नहीं ठहरता। इसीलिये तो विनय को धर्म का मूल कहा गया है। वहाँ पर बुद्धि नहीं, श्रद्धा-भक्ति काम करती है।

समर्पण में सवाल नहीं होता। समर्पण बोलकर भी नहीं बताया जा सकता, वह तो करने का विषय है। मुझे एक रूपक याद आ रहा है-

एक बादशाह था। उसका एक रसोइया था। एक बार रसोइये ने बैंगन की सब्जी बनायी। बादशाह को वह पसन्द आई, बादशाह ने कहा-आज तो तुमने बहुत अच्छी सब्जी बनाई है। रसोइये ने कहा-महाराज बैंगन के सिर पर ताज होता है, इसलिये महाराज को बैंगन की सब्जी अच्छी लगती है। बादशाह ने कहा-अच्छा, इसलिये तुम बैंगन की सब्जी मुझे परोसते हो। तुम ताज वाली सब्जी हमारे लिये बहुत अच्छी बनाते हो।

रोज-रोज बैंगन की सब्जी बनाने लगा।

बादशाह रोज-रोज वही सब्जी खाते-खाते तंग हो गया। जो रसोइया पहले बैंगन की तारीफ यह कहकर करता था कि बैंगन की सब्जी इसीलिये अच्छी होती है, क्योंकि उसके सिर पर ताज होता है।

रोज-रोज खाने से बादशाह को बैंगन की सब्जी में अब वैसा रस नहीं आ रहा था। यह जानकर रसोइये ने बादशाह से कहा-महाराज! यह बैंगन तो बुरा है इसलिये इसे बैंगुन (बैंगन) कहते हैं। बैंगुन अर्थात् जिसमें कोई गुण नहीं।

बादशाह ने कहा-पहले तो तुम बैंगन की तारीफ करते थे, अब उसे बिना गुण वाला क्यों कह रहे हो?

रसोइये ने कहा-महाराज! मैं आपका नौकर हूँ, बैंगन का नहीं।

इस रूपक से आप इतना तो समझ ही गये होंगे कि तर्क कहीं भी लग सकता है। तर्क करने वाला संसार-सागर से तिर नहीं सकता। आप जिज्ञासा करें, तर्क न करें।

भगवान महावीर से गौतम स्वामी ने अनेक जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। जिज्ञासा में जानने का भाव होता है, शंका का उसमें कोई स्थान नहीं होता।

बस, शिष्य गुरु की बात को 'तहत्ति' कहकर स्वीकार तो करे ही, साथ ही उसकी पालना में भी लग जाय तो वह विकास-पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता है।

एक गुरु-शिष्य का प्रेरणादायी संवाद है। गुरु ने कह दिया-द्रव्य सात होते हैं। शिष्य उस समय यह नहीं कहे कि द्रव्य तो छह ही होते हैं, आपने सात कैसे बताये।

लेकिन शिष्य 'तहत्ति' कहने के बजाय तर्क करने लगा। तब गुरु ने कहा-सातवाँ द्रव्य तुम हो। नयों की अपेक्षा प्रत्येक कथन का तात्पर्य अलग-अलग होता है। 'षड्द्रव्यात्मको लोकः' अर्थात् छह द्रव्य से संयुक्त लोक होता है। तुम इस लोक में सशरीरी जीव के रूप में रहते हो, इसलिये गणना की अपेक्षा तुम सातवें द्रव्य हो।

कौआ काले रंग का होता है, पर गुरु ने उसे सफेद रंग का कह दिया तो गलत क्या है?

गुरुदेव ने कौवे के रंग का समाधान देते कहा-निश्चय नय से कौवे में पाँचों रंग होते हैं, उसमें अस्थियों की अपेक्षा सफेद रंग भी होता है। इस दृष्टि से मैंने सफेद रंग की बात कह दी।

गुरु प्रत्येक समस्या का समाधान देता है। जैनदर्शन में नय का विशेष महत्त्व है। गुरु के हर वचन को 'तहत्ति' कहकर स्वीकार किया जाता है तो भक्त भगवान बन सकता है। वह अपने-आपको गुरु का दास मानता है।

दास को आज्ञा माननी पड़ती है। आज्ञा पालन में उसे कोई भय नहीं रहता और अगर ऐसा नहीं,

ऐसा है तो वह शिष्य समर्पण भाव से दूर है।

आप पूछेंगे-समर्पण किसे कहते हैं? इसका उत्तर यही है-जहाँ बुद्धि के विकल्प सिमट कर रह जाय वह समर्पण है।

आपने सुना होगा-जज साहब इन्दरनाथजी मोदी एक अच्छे गुरु-भक्त थे। गुरु हस्ती ने जो कह दिया वह तुरन्त मान लेते। जज साहब की तरह नथमलजी हीरावत में भी गुरु-भक्ति थी, पर दोनों के दृष्टिकोण में अन्तर था। वे कभी-कभी वयोवृद्ध श्रावकजी को भी कह देते कि जो गुरु ने कह दिया, वह ही ठीक है। हमारे गुरुदेव का सदा हाथ रहना चाहिये। कहा भी है-

गुरु का सिर पर हाथ, गुरु हैं मेरे साथ।

विनयवान भक्त कभी कोई गलत कार्य नहीं करता। वह गुरु के सामने अहंकार से मुक्त होकर रहता है, तभी वह कहीं भी भयभीत नहीं होता। जो सद्गुरु की शरण में है, वह तीनों लोक में भयभीत नहीं होता।

भक्त में मान नहीं होता। वह जब भी गुरु चरणों में जाता है तो मैं और मेरा नहीं रहता। इसीलिये तो कहा जाता है कि मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष हो जाता।

आप सब गुरु-भक्त हैं, इसलिये गुरु पूर्णिमा पर आप यह संकल्प करें कि गुरु से बढ़कर कोई नहीं है। आपका जिस दिन मान मिट जायेगा तो संसार मिटते भी देरी नहीं लगेगी।

आप साधना करके जीवन को सफल बनायें यही भावना है.....।

60वाँ दीक्षा-दिवस

अगर मुझको गुरुवर

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: अगर तेरी मोहब्बत का सहारा....)

अगर मुझको गुरुवर तेरा, शरणा न मिला होता।
भटक जाता मैं दुर्गति में,
ये मानव भव यूँ ही खोता।।

तेरे उपकार इतने हैं कि, गिनती कर नहीं सकते,
बिना तेरी कृपा पाए, भव से कोई न कभी तिरते।
खिवैया तुझ सा जो मिलता,
न नैया खाती फिर गोता,
भटक जाता मैं दुर्गति में,
यह मानव भव यूँ ही खोता।।1।।

तरीका जिन्दगी जीने का,
तुमने ही तो सिखलाया,
कैसे तोड़े कर्मबन्धन, स्नेह से हमको समझाया।
न समझाते जो तुम मुझको,
कर्मों के बीज ही बोता,
भटक जाता मैं दुर्गति में,
यह मानव भव यूँ ही खोता।।2।।

मेरा सोया पड़ा चेतन, तेरी वाणी से जग पाया,
भटकता था जो हर भव में,
अलौकिक शान्ति को पाया।
न मिलती जो तेरी वाणी,
बोझा दु:ख का ही मैं ढोता,
भटक जाता मैं दुर्गति में,
यह मानव भव यूँ ही खोता।।3।।

राग-द्वेष की ग्रन्थि को, तोड़ना कैसे बतलाते,
अभयदाता हो जीवों के,
सागर करुणा के कहलाते।
न मिलती तेरी करुणा जो,
न जाने कितने युग रोता,
भटक जाता मैं दुर्गति में,
यह मानव भव यूँ ही खोता।।4।।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राजस्थान)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 28
ISSN 2249-2011

संगोष्ठी–आलेख

आचार्य सोमदेव विरचित योगमार्ग में ध्यान का निरूपण

डॉ. हेमलता जैन

योग शब्द का नाम लेते ही सर्वप्रथम सभी के मस्तिष्क पटल पर पातञ्जल योगसूत्र, हेमचन्द्र का योग शास्त्र आदि नाम उभर आते हैं। दिगम्बर आम्नाय के आचार्य सोमदेव विरचित योगमार्ग नामक ग्रन्थ से बहुत कम लोग परिचित हैं, अतः मैंने इस संगोष्ठी के लिए योगमार्ग ग्रन्थ का चयन किया। यह कलेवर में लघु होते हुए भी ध्यानविषयक विवेचन का प्रौढ़ काव्यात्मक ग्रन्थ है। सन् 2002 में महासती श्री उमरावकुँवरजी 'अर्चना' ने इस ग्रन्थ का अधुनातन, प्राञ्जल, सर्वजनोपयोगी हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं विवेचन किया तथा डॉ. छगनलालजी शास्त्री ने ग्रन्थ का सम्पादन कार्य किया।

ग्रन्थ में आचार्य ने वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण में ध्यानयोगी भगवान ऋषभदेव की ध्यानमुद्रा का सहज चित्रण किया है। इस चित्रण में उत्प्रेक्षा द्वारा कवि आध्यात्मिक तत्त्वों का गुम्फन करते हुए बताते हैं कि ध्यानी व्यक्ति के क्रियाकलाप अहिंसा वृत्तिमय होते हैं। भगवान ऋषभदेव की ध्यानमुद्रा से यहाँ यही प्रकट हो रहा है, जैसे–

1. भगवान ने पैरों को भूमि पर बहुत ही हल्के से रखा है जिससे नारकी जीव पीड़ित न हों।
2. भगवान द्वारा श्वास–प्रश्वास का क्रम मन्दतापूर्वक किया जा रहा है, जिससे मध्यलोकवर्ती प्राणी व्यथित न हों।
3. भगवान ने हाथों को ध्यानमुद्रा में ऊपर की ओर न कर नीचे की ओर किया है, जिससे आकाश में गमन करने वाले प्राणियों को अवरोध उत्पन्न न हों।

इस प्रकार यहाँ कवि ने समग्ररूप में प्राणाति–पातवर्जन पूर्वक एक अहिंसक ध्यानयोगी का भावचित्र उपस्थित किया है। यह कवि की नैसर्गिक प्रतिभा और पाण्डित्य का द्योतक पद्य है। विवेचनकर्त्री का कहना है कि प्रस्तुत पद्य से कवि का यह सन्देश अभिव्यञ्जित होता है कि ध्यान खड्गासन मुद्रा में, तनावमुक्त और सहज हल्कापन लिए शरीर द्वारा होता है। हाथ, पैर, श्वास–प्रश्वास सभी की स्थिति जब सहज होगी तभी ध्यान साधना में चित्त एकाग्रता को प्राप्त करता है।

प्रस्तुत पद्य के अध्ययनान्तर चिन्तन करने पर एक सामान्य बात का बोध हुआ कि गौतम बुद्ध एवं शिव को छोड़कर जैनेतर इष्ट देवताओं की मूर्तियाँ ध्यान–मुद्रा में प्राप्त नहीं होती है, मात्र जैन जिन प्रतिमाएँ ध्यानमुद्रा में अब तक प्राप्त हुई हैं और निर्मित हो रही हैं।

योग विषयक ग्रन्थों में मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भावना को ध्यान के लिए प्रेरक बताया गया है। आचार्य ने भी उन भावनाओं को ध्यान के हेतु के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके साथ कुछ और हेतुओं को लिया है, जो एक ध्यानी व्यक्ति में अवश्य होते हैं[1], वे हेतु इस प्रकार हैं–

1. वह व्यक्ति भव–विरक्ति एवं वैराग्य भाव से युक्त होगा।
2. उसमें वैराग्यपूर्वक संवेग और निर्वेद भावों की उपस्थिति होगी।
3. इन्द्रियों का संयमी होगा।
4. उसमें मैत्री, प्रमोद, माध्यस्थ और कारुण्य भावों की सत्ता रहेगी।
5. इच्छाओं को नष्ट करने वाला होगा।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में भोपालगढ़ में तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में जोधपुर में 8 से 10 सितम्बर, 2017 तक आयोजित राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

6. शान्त कामभाव वाला और स्थिरचित्त होगा।
7. कष्ट सहन करने में दक्ष होगा।

हेतुओं को पुष्ट करते हुए कवि सोमदेव कहते हैं-

सम्यग्ज्ञानोन्मदोर्म्मेर्मतिसुरसरितः सत्यतीर्थे स्थितानाम्।
जन्मोच्छेदो नराणां द्रवदखिलमलस्वान्तसंतोषभाजाम्।
ध्यानस्नानानुबंधान्न हि भवति परां तीरिणीं याचितानाम्।।[2]

उपर्युक्त हेतुओं से युक्त व्यक्ति ही सम्यग्ज्ञान रूपी नदी में दोष शून्य चित्त होकर ध्यान के माध्यम से तैरता हुआ अपने जन्म-मरण का उच्छेद कर पाता है। यदि ध्यानी उपर्युक्त हेतुओं से युक्त नहीं होगा तो वह निश्चित ही ध्यान करने पर उत्तम पुरुषों के मध्य उपहास का पात्र बनेगा।

ध्यान का स्वरूप

जैनाचार्य ध्यान को चित्तनिरोध शब्द से अभिहित करते हैं। चित्त का निरोध होना ही जैनमत में ध्यान है। योगमार्ग ग्रन्थ के रचयिता आचार्य सोमदेव ध्यान को इस प्रकार परिभाषित करते हैं-

एकत्र स्थैर्यसारा, मतिरभिलषिते, चंचला वस्तुतत्त्वे।
ध्यातुं व्यावृत्य, चित्तं विविधनयमनुप्रेक्षणं चिंतनं यत्।।
संप्रश्नो भावना, वा श्रुतविदितपदालोचनं ख्यापना वा।
ध्यानाधीना अमी, तत् समभिदधुरधौघादनं ध्यानमीशाः।।[3]

अर्थात् जहाँ चञ्चल, अस्थिर बुद्धि, अभिलषित वस्तु तत्त्व पर स्थिर हो जाती है। मन अन्यत्र जगह से व्यावृत्त होकर वस्तु का द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक रूप में नयात्मक चिन्तन करता है और तत्त्वावगाहन हेतु मौन रूप में स्वयं के साथ अन्तर्वार्तालाप करता है। शास्त्रों में कथित, ज्ञापित वस्तु के वाचक पदों पर आलोचन, विचार अथवा उसका ख्यापन करता है। यह स्थिति ध्यान संज्ञा से अभिहित होती है और उसको स्वायत्त कर लेने पर समस्त पापों का नाश हो जाता है।

आचार्य सोमदेव की इस परिभाषा से यह अनुभव होता है कि उन्हें वस्तुतः मात्र चित्त वृत्तियों का निरोध रूप ध्यान अभीष्ट नहीं है, अपितु चित्त का अभीप्सित वस्तु पर स्थिर होकर उसका नैगम, संग्रह, व्यवहार रूप द्रव्यार्थिक और शब्द, समभिरूढ़ एवं एवम्भूत संज्ञक पर्यायार्थिक नय रूप से चिन्तन करना, तदनन्तर स्वयं ही वस्तु के प्रति प्रश्नोत्तर द्वारा शंका-समाधान करना रूप ध्यान अभीष्ट है। आचार्य सोमदेव का मानना है कि ऐसा करने के पश्चात् ही व्यक्ति ध्यान के विविध क्रमों में प्रवेश कर पाता है।

जैन सिद्धान्तानुसार ध्यान के स्वल्पतम और अधिकतम कालमान का उल्लेख करते हुए ग्रन्थकार बताते हैं कि चित्त की चञ्चलता के कारण ध्यान का अल्पतम काल अ, इ, उ, ऋ, लृ पाँच ह्रस्व वर्णों के उच्चारण काल तक का होता है और उत्कृष्ट काल एक मुहूर्त्त से अधिक नहीं होता है। जठराग्नि, दावाग्नि, वडवाग्नि इन त्रिविध अग्नि के सम्मुख विद्युत्पात की अग्नि बहुत ही भिन्न है, परन्तु ग्रन्थकार कहते हैं कि विद्युत्पात की अग्नि में भी पर्वतों को नष्ट करने का सामर्थ्य होता है। कवि कहते हैं कि विद्युत्पात्-अग्नि के समान ही मात्र अन्तर्मुहूर्त्त का उच्च स्तरीय ध्यान सारे कर्मों का क्षय कर सकता है।

तावन्मात्रेऽपि काले, हुतभुगिव भवेद् ध्यानमुच्चैरधानाम्।
ध्वंसायोर्वीधराणां, ज्वलदचलतया वज्रसंपातजन्मा।।[4]

यहाँ कवि की दी गई उपमा से ध्यान की महत्ता स्पष्ट हो रही है। विवेचनकर्त्री यहाँ लिखती हैं कि ध्यान की उत्कृष्टता का सम्बन्ध केवल दीर्घकाल से नहीं है, वरन् भावों की उज्ज्वलता के साथ है। ध्यान में उज्ज्वलता की उच्चतम स्थिति प्राप्त हो जाने पर कर्मक्षय शीघ्र हो जाता है।

ध्यान के प्रकार

एक ही विषय पर चित्त को केन्द्रित करना ध्यान होता है तो आचार्य सोमदेव कहते हैं कि अन्य चिन्तन के निरोध अथवा एकाग्रता की अपेक्षा से ध्यान एक प्रकार का है। शुभ और अशुभ के भेद से ध्यान उभयविध है। चिन्तन की एकाग्रता जब शुभ लक्ष्य की ओर केन्द्रित होती है तो वह शुभध्यान और जब अशुभ लक्ष्य के प्रति केन्द्रित होती है तो वह अशुभ ध्यान कहलाता है। यह

ध्यान पुनः आर्त्त, रौद्र, धर्म एवं शुक्ल के भेद से चार प्रकार का है और इन चतुर्विध ध्यान के सोलह भेद हैं-

यद्यपि चारों ध्यानों में एकाग्रता तो एक जैसी ही है, किन्तु ध्येय पदार्थों की अप्रशस्तता और प्रशस्तता के कारण उनकी फलनिष्पत्ति में अन्तर है। चतुर्विध ध्यानों का फल क्रमशः तिर्यञ्च योनि, नरक, स्वर्ग एवं मोक्ष है। 'एकाग्रचिन्ता निरोधो ध्यानम्' तत्त्वार्थ सूत्रकार प्रदत्त ध्यान की इस परिभाषा पर ग्रन्थ की विवेचनकर्त्री कहती है कि यह परिभाषा प्रशस्त एवं अप्रशस्त दोनों ध्यान में व्याप्त होगी तो ध्यान की वरेण्यता सिद्ध नहीं हो पायेगी। अतएव शास्त्रकारों द्वारा फल निष्पत्ति को देखकर ध्यान की प्रशस्त एवं अप्रशस्त कोटि बनाना उचित प्रतीत होता है।

ध्यान योग्य संस्थान एवं संहनन

ज्ञेयत्व की दृष्टि से उपादेय और हेय दोनों का ग्रहण उपयोगी होता है। अतः ग्रन्थकार ने आर्त्त एवं रौद्र ध्यान के अप्रशस्त होने पर भी इनकी चर्चा ग्रन्थ में की है। आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान समस्त दैहिक संस्थानों में, देव, मनुष्य, तिर्यञ्च एवं नारक चारों गतियों के सभी संज्ञी प्राणियों में और सभी विकलेन्द्रिय प्राणियों में होता है। योग एवं उपयोग के अस्तित्व के आधार पर विकलेन्द्रिय प्राणियों को सम्मिलित किया गया है।

ग्रन्थकार धर्मध्यान के उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य कोटिक रूपों के आधार पर अधिकारी का स्वरूप बताते हैं। उत्कृष्ट धर्मध्यान संयति पुरुषों में होता है। मध्यम एवं जघन्य धर्मध्यान सम्यग्दृष्टि देव, पशु, नारक, नपुंसक, स्त्री, चतुर्थगुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि तथा देशविरत श्रमणोपासकों में होता है। देवों में अप्रशस्त और प्रशस्त दोनों ही ध्यान कहे गए हैं।[5] अप्रशस्त कोटि का ध्यान देव में होने का कारण है-देव मिथ्यात्वी एवं सम्यक्त्वी दोनों प्रकार के होते हैं।

मिथ्यात्व का उदय रहने से मिथ्यात्वी देवों में अप्रशस्त ध्यान हो सकता है। इसी तरह सम्यग्दृष्टि देव में धर्मध्यान कहा गया है और वह भी निम्न कोटि का, क्योंकि सम्यग्दृष्टि देव संवर-निर्जरा मूलक धर्म से जुड़े हुए नहीं होते हैं तो वे निम्न कोटिक धर्मध्यान ही कर सकते हैं।

शुक्लध्यान विशुद्ध भावों पर आधृत है। इसके उद्गम के लिए जिस तीव्रता/उपसर्ग का सामना करना होता है उस हेतु सुदृढ़ संहननयुक्त देह आवश्यक है। इसलिए शास्त्रकारों ने प्रथम शुक्लध्यान के लिए वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच एवं नाराच संहनन अपेक्षित बताया है और शेष तीन शुक्ल ध्यान प्रथम संहनन युक्त मनुष्य में ही होता है। ग्रन्थकार यहाँ एक अलग बात कहते हैं कि प्रथम शुक्ल ध्यान काल की अपेक्षा से कदाचित् पूर्व विदेह क्षेत्र में उत्पन्न शुक्ललेश्या युक्त कीलक संहननधारी संयती पुरुषों को भी हो सकता है।[6]

अप्रशस्त ध्यान के लिए व्यक्ति को कोई प्रयास नहीं करने पड़ते हैं। राग-द्वेष के कारण वे सहज ही होते

हैं। प्रयास तो प्रशस्त ध्यान हेतु करने पड़ते हैं। अतः इस दृष्टि से कवि सोमदेव ने अपने ग्रन्थ में प्रशस्त ध्यान का निरूपण किया है। आचार्य ने प्रशस्त ध्यान हेतु कुछ प्रयत्नों को बताया है, जिनसे ध्यानी व्यक्ति स्तवनीय एवं प्रीतिप्रद बन जाता है।[7] वे प्रयत्न इस प्रकार हैं-

1. अप्राप्त, अभीप्सित मनोज्ञ पदार्थ की कामना न करें।
2. जो प्राप्त है, उसको अप्राप्तवत् मानें और उसमें अनासक्त रहें।
3. जो बीत गया/ चला गया उसके लिए शोक, चिन्ता आदि न करें।
4. जो इष्ट/अभिलषित नहीं है उसे देखकर द्वेष न करें।
5. अपनी बुद्धि में कलुषता न लाएँ।
6. अनुकूल के आने और प्रतिकूल के जाने की अभिलाषा न करें।
7. माया, ईर्ष्या, दैहिक साज-सज्जा, कामकथा तथा लोक-यात्रा की चिन्ता का अतिक्रमण करें।
8. संसार के समस्त सत्त्वों के प्रति अहिंसा का भाव रखें।
9. वाणी में सत्य का प्रयोग करें।
10. दूसरे के धन-वैभव की ओर चित्त को आकृष्ट न करें।
11. आध्यात्मिक जीवन संरक्षण हेतु भौतिक देह के बलिदान में उद्यत रहें।

धर्मध्यान-धर्म का ध्यान करना/रखना धर्मध्यान है। धर्म क्या है-'वत्थुसहावो धम्मो' धर्म की इस तात्त्विक परिभाषानुसार आचार्य सोमदेव धर्मध्यान का स्वरूप प्रतिपादित करते हैं कि जो आत्मा को शुद्ध स्वरूप, स्वभाव से योजित रखे और उसे ही अभिलक्षित कर हर्ष-राग, अमर्ष-क्रोध, द्वेष से शून्य मन को एकाग्र बनाए रखता है, वही धर्मध्यान है। मति, श्रुत आदि पञ्च ज्ञान के द्वारा ध्यानी किसी भी तत्त्व और उसकी पर्याय पर चिन्तन करते हुए अपने मन को स्थिर करता है। जिसका मन उसी धर्म में तन्मय हो जाता है वह मन की चञ्चलता को नष्ट कर अपने मोह-मूल को भी नष्ट कर देता है।

याथात्म्यं धर्ममाहुस्तदिह बहुधियो, वस्तुजातेश्च सर्वम्।
हर्षामर्षाभिषंग प्रविकलमनसा स्यात्सदालंबमेषाम्।।
तद् ध्यानाधीनधीनाः,प्रतिगमविगमान्मोहमूलं लुनंति।
तस्मिन्पंचावबोधी परिकलितकले क्वापि तत्त्वे कृतास्थाः।।[8]

धर्मध्यान के आज्ञा, अपाय, विपाक और संस्थान संज्ञक भेदों के वर्णन पश्चात् आचार्य इस ध्यान से सम्बद्ध एक विशेष बात कहते हैं कि जो ध्यानी धर्मध्यान की उत्कृष्ट पराकाष्ठा तक पहुँचता है वही शुक्ल ध्यान की भूमिका को अपना कर कर्मपाश को छिन्न-भिन्न कर डालता है। किन्तु जो इसकी पराकाष्ठा तक नहीं पहुँच पाता है वह मुक्ति प्राप्ति पूर्व विश्राम लेता है अर्थात् उसे देवलोक में जन्म लेना पड़ता है।[9]

शुक्ल ध्यान-आचार्य शुक्ल ध्यान में प्रवेश करने वाले ध्यानी की चार विशेषताओं का प्रतिपादन करते हैं-

1. धर्मध्यान का नियमपूर्वक अभ्यास करने वाले के द्वारा स्थिरता को अधिकृत कर लेने पर शुक्ल ध्यान में प्रवेश होता है।
2. प्राणायाम और आसन जिसका स्वभाव बन जाते हैं, उनका शुक्ल ध्यान में प्रवेश होता है।
3. आत्मा और शरीर के भेदविज्ञान को जिसने अनुभूत कर लिया है, वह प्रवेश लेता है।
4. कर्मास्रवों का अवरोध करने वाला ध्यानी शुक्ल ध्यान में प्रवेश करने की योग्यता पाता है।

शास्त्रकारों ने शुक्ल ध्यान के चार भेदों का उल्लेख किया है। उन्हीं की विशेष चर्चा ग्रन्थकार ने यहाँ की है-

1. पृथक्त्ववितर्क सविचार-

धर्मध्यान की पराकाष्ठा तक पहुँचने वाला ध्यानी जब एक द्रव्य के उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य आदि पर्यायों का द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक आदि नयों के अनुसार पृथक्-पृथक् चिन्तन करता है और चिन्तन को एकाग्र

करता है तो वह शुक्लध्यान के प्रथम भेद पृथक्त्ववितर्क सविचार का ध्यान करता है। इस ध्यान में ध्यानी अर्थ का चिन्तन करता है, वैसा करते-करते वह शब्द पर आ जाता है, शब्द का चिन्तन करते-करते पुनः अर्थ के चिन्तन में निमग्न हो जाता है। इसी प्रकार वह मनःयोग से काययोग पर अथवा वचनयोग पर, काययोग से मनोयोग या वचनयोग पर तथा वचनयोग से मनोयोग या काययोग पर संक्रमण करता रहता है।[10] अतः शुक्ल ध्यान के प्रथम भेद में ध्यानी द्रव्य से पर्याय पर संक्रमण करता रहता है।

2. एकत्ववितर्क अविचार

पृथक्त्ववितर्कसविचार शुक्लध्यानी जब गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय और चारित्र द्वारा कर्मों को रोक लेता है तब वह साधक एकत्ववितर्क अविचार संज्ञक शुक्लध्यान में प्रवेश कर लेता है। इस ध्यान में साधक द्रव्यगत या पर्यायगत आत्मा का द्रव्य रूप में अथवा पर्यायरूप में किसी एक रूप में आश्रय लेकर ध्यान करता है। एकत्व शब्द का यही आशय है। यहाँ अर्थ, शब्द, मन, वचन एवं काययोग का संक्रमण न होने से अविचार शब्द का योग हुआ है।

यह साधक अब बारहवें गुणस्थान से तेरहवें सयोगी केवली गुणस्थान में पहुँच जाता है और ध्यान की इस अवस्था के पश्चात् साधक के चार घाति कर्म (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय) नष्ट हो जाते हैं। चार घाति कर्म के नष्ट होने से साधक को अनन्त ज्ञानराशि (कैवल्य), क्षायिकदान, क्षायिकलाभ, क्षायिकभोग, क्षायिकउपभोग, क्षायिकवीर्य, क्षायिकदर्शन, क्षायिकसम्यक्त्व तथा क्षायिकचारित्र नौ लब्धियाँ प्राप्त होती हैं।

1. ज्ञानावरण क्षय से प्राप्त अनन्त ज्ञान।
2. दर्शनावरण क्षय से प्राप्त क्षायिक दर्शन।
3. मोहनीय में दर्शन मोहनीय क्षय से-क्षायिक सम्यक्त्व तथा चारित्र मोहनीय क्षय से क्षायिक चारित्र।
4. अन्तराय क्षय से क्षायिकदान, क्षायिकलाभ, क्षायिकभोग, क्षायिकउपभोग, क्षायिकवीर्य।

अन्तराय कर्म क्षय के सम्बन्ध में कुछ विचारणीय चर्चा ग्रन्थ की विवेचनकर्त्री ने प्रस्तुत की हैं, वे कहती हैं-अन्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न विशेषताएँ साधारणतया लौकिक लाभ से योजित की जाती हैं। ये लौकिक लाभ वीतराग के साथ योजित करना सर्वथा असङ्गत प्रतीत होता है। वे सर्वस्व त्यागी होते हैं तो उनको वैभव, धन, सम्पत्ति, भूमि, स्वर्ण आदि से कोई प्रयोजन नहीं होता। इससे बोध होता है कि अन्तराय क्षय से उत्पन्न विशेषताओं का यथार्थ अभिप्राय कुछ और है। यथा-

1. लाभान्तराय क्षय का यथार्थ अभिप्राय आध्यात्मिक सुख का लाभ या अधिगम है, जो ऐहिक भौतिक कामनाओं के परित्याग से निष्पन्न है।
2. आध्यात्मिक सुख का आस्वाद ही वास्तविक भोग है और पुनः पुनः उस आस्वाद की नव अनुभूति उपभोग है। यही भोगान्तराय और उपभोगान्तराय क्षय की वस्तुतः स्थिति है। इसके क्षय से समत्व और प्रेम का विराट् भाव समुदित होता है।
3. दानान्तराय क्षय से अपरिमित औदार्य का उद्गम होता है।
4. वीर्यान्तराय क्षय का तात्पर्य विषय भोगों का आकर्षण पूर्ण रूप से मिट जाना है और उनमें वीर्य/आत्म शक्ति का अपव्यय नहीं होना है। परिणामस्वरूप सच्चरित्र की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है, यही आत्मविकास है।

3. सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति

द्वितीय स्तरीय शुक्ल ध्यानी के लिए जब कोई द्रव्य/पदार्थ ध्यान करने योग्य नहीं रहता है, तो अब वह किसका ध्यान करेगा तदर्थ आचार्य कहते हैं-

1. वह ध्यानी जिन अघाति कर्मों की स्थिति समान नहीं है, उसे समान करता है, वह तृतीय शुक्ल ध्यान है।
2. अघाति कर्मों की स्थिति समान होने पर उनके नष्ट

होने की प्रतीक्षा में ज्ञान की प्रवृत्ति करना तृतीय शुक्ल ध्यान है।

3. आत्मप्रदेशों का विस्तार और संकोच करना ध्यान है।[11]

इस तरह शास्त्रकारों ने ये तीन भिन्न-भिन्न ध्यान की स्थितियाँ उपचार से कही हैं।

इस प्रकार ध्यान की इस अवस्था में अघाति कर्मों की स्थिति की न्यूनाधिकता मिट जाती है। ध्यानी मनोयोग, वचनयोग एवं स्थूलकाय योग का निरोध कर लेते हैं। केवल श्वासोच्छ्वास आदि सूक्ष्मक्रिया ही अवशिष्ट रह जाती है।

4. समुच्छिन्नक्रिया निवृत्ति

जब ध्यानी का श्वासोच्छ्वास प्रचलन तथा मानसिक, वाचिक, कायिक तीनों योगों की क्रियाएँ निवृत्त हो जाती हैं। अघाति कर्मों का सम्बन्ध छूटने लगता है अर्थात् सम्पूर्ण कर्म नष्ट होने लगते हैं, तब साधक अन्तिम शुक्ल ध्यान को प्राप्त कर लेता है। वह साधक मुक्ति प्राप्त कर सदा के लिए अपने शुद्ध स्वभाव में सुरक्षित हो जाता है।[12]

इस प्रकार आचार्य सोमदेव ने स्रग्धरा छन्द में निर्मित मात्र 40 पद्यों में ध्यान का स्वरूप, भेद, परिणाम, संहनन, संस्थान आदि की विशेष रूप से चर्चा की है। ध्यान का यह लघु ग्रन्थ सहज एवं सरल होने से सभी के लिए ग्राह्य है। विवेचनकर्त्री आर्या उमरावकँवर अर्चनाजी ने हिन्दी विवेचन कर ग्रन्थ की उपयोगिता में वृद्धि कर दी है।

मुझे लगता है कि प्रशस्त ध्यान के लिए बताए गए प्रयत्नों को अपनाकर हम सभी अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

सन्दर्भ

1. योगमार्ग, सोमदेव विरचित, अनुवादक एवं विवेचनकर्त्री- उमरावकँवर 'अर्चना', मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, नवम्बर, 2003, श्लोक सं. 4 एवं 13।
2. योगमार्ग, श्लोक सं. 13
3. योगमार्ग, श्लोक सं. 16
4. योगमार्ग, श्लोक सं. 17
5. योगमार्ग, श्लोक सं. 18
6. योगमार्ग, श्लोक सं. 19
7. योगमार्ग, श्लोक सं. 20-21
8. योगमार्ग, श्लोक सं. 22
9. योगमार्ग, श्लोक सं. 23
10. योगमार्ग, श्लोक सं. 25
11. योगमार्ग, श्लोक सं. 31
12. योगमार्ग, श्लोक सं. 33

-लक्ष्मीनगर, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.)

भावी आचार्य गुणगान

महासती श्री समीक्षाश्रीजी म.सा.

(तर्ज :: जिनशासन की शान है)

गुरु महेन्द्र महान् हैं, हम सबकी ये शान हैं।
भक्तों ने गुञ्जाया रे, महेन्द्र गुरु प्यारा रे...।।टेर।।
माँ सोहनी के नन्दन हैं, पिता पारस के चन्दन हैं।
लोढ़ा कुल उजियारा रे, महेन्द्र गुरु.....।।1।।
हस्ती हीरा शासन में, तत्पर हैं जिनशासन में।
सेवा गुण धारा रे, महेन्द्र गुरु.....।।2।।
संवत्सरी दिन प्यारा था, हीरा ने फरमाया था।
भावी आचार्य हमारा रे, महेन्द्र गुरु.....।।3।।
स्वाध्याय में लीन हैं, सेवा में तल्लीन हैं।
अप्रमत्त नज़ारा रे, महेन्द्र गुरु.....।।4।।
सरलता के नूर हैं, सजगता में शूर हैं।
रत्नसंघ सितारा रे, महेन्द्र गुरु.....।।5।।
मातृ सम वत्सलता, शिशु सम समर्पणता।
गुणी आदर्श हमारा रे, महेन्द्र गुरु.....।।6।।

-संकलनकर्त्ता, श्री नीरज कुमार जैन, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर (राज.)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 34
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

जीवन कैसा हो? आगम में लिखने जैसा हो

श्रीमती सेहल जैन

हर धर्म का कोई न कोई धार्मिकग्रन्थ होता है। जैसे ईसाइयों का बाइबिल, मुसलमानों का क़ुरआन और सिक्खों का गुरुग्रन्थ साहिब आदि। जैनधर्म के धार्मिक ग्रन्थ हैं-आगम। आगम का अर्थ है आप्त पुरुषों द्वारा कथित, गणधरों द्वारा ग्रथित और मुनियों द्वारा आचरित। आगम जैनधर्म का आधार है और इसमें तीर्थंकर वाणी का सार है। हमारे आगम हमें जन्म-मरण के चक्रव्यूह का अन्त कर शाश्वत सुख प्राप्ति का सन्देश देते हैं। ऐसे क्या घटक हैं जो आगम को अन्य सभी धार्मिक ग्रन्थों से भिन्न बनाते हैं और ऐसे क्या कारण हैं जो जैनधर्म को उत्तम बनाते हैं? उनके बारे में विचार करते हैं।

आगमों में अन्य धार्मिक ग्रन्थों की तरह केवल उस धर्म के देवी-देवताओं और गिने-चुने पुरुषों का ही वर्णन नहीं है, अपितु आम साधकों का भी वर्णन है। जैनधर्म अपने द्वार केवल केवलियों के लिए ही नहीं खोलता, इस धर्म के द्वार उन सभी के लिए खुले हैं जो साधना में उत्तरोत्तर वृद्धिकर अपने भवचक्र का अन्त करना चाहते हैं। इसलिए हमारे धार्मिक ग्रन्थ साधु-साध्वी का ही गुणगान नहीं करते, बल्कि ऐसे श्रावक-श्राविकाओं की गौरव गाथा का भी गान करते हैं जिन्होंने अदम्य साहस, पुरुषार्थ और समता का परिचय दिया है। आज हम बात करेंगे उपासगदशांगसूत्र की, जो 11 अंगों में से सातवाँ अंग है। जिसमें भगवान महावीर के प्रमुख श्रावकों का वर्णन है।

हम पुण्यशाली हैं कि हमारा जन्म जैन कुल में हुआ और हम उस वीर के अनुयायी हैं जिसने अपने श्रावक-श्राविकाओं की साधना का उल्लेख स्वयं करके उन्हें उच्च श्रेणी का हक़दार बनाया। हम उन महावीर के उपासक हैं जिन्होंने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थ की स्थापना की। जीव अपने पुरुषार्थ और आत्मवीर्य का प्रयोग करे तो, आगम में अपना नाम दर्ज करने की क्षमता रखता है। बस देरी है तो उस प्रबल पुरुषार्थ को करने की और आत्मसाधना में क़दम बढ़ाने की।

प्रभुवीर ने मुक्ति का सुन्दर मार्ग बतलाया, परन्तु यह बात भी सत्य है कि वह मार्ग शूरवीरों का मार्ग है, कायरों का नहीं। संयम अंगीकार करना अंगारों पर चलने के समान है और कुछ ही दृढ़चित्त, आत्मबली एवं संस्कारी पुरुष ऐसे होते हैं जो संयममार्ग को साधने की क्षमता रखते हैं। यह एक ऐसा मार्ग है जहाँ विकल्प का कोई स्थान नहीं, आगारों का कोई स्थान नहीं। यह अपूर्ण से पूर्ण होने की उत्तम साधना है। इसलिये ही हम ऐसे पुरुषों के सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

क्या कभी हमें भी इस जन्म-मरण के जञ्जाल से मुक्ति मिलेगी? क्या हम अपना रजिस्ट्रेशन कभी अरिहंत-सिद्धों की श्रेणी में नहीं कर सकते? क्या हमारा जीवन कभी इस योग्य नहीं बनेगा कि अरिहंत प्रभु आगमों में हमारे जीवन का वर्णन करें? क्या हमारे जीवन से कभी कोई सत्प्रेरणा प्राप्त नहीं करेगा?

परम कृपालु भगवान महावीर ने सातवें अंग का भाव फ़रमाते हुए हमारे इन सभी प्रश्नों का समाधान दिया है। उपासकदशाङ्गसूत्र में 10 ऐसे श्रावकों का वर्णन है जिन्होंने गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए मुक्ति की ओर क़दम बढ़ाए।

हम सभी में संयम के प्रति भाव भिन्न-भिन्न क्यों है? प्रगाढ़ चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से तथा अनादि भवों से जमे संस्कारों से हमारे मन में संयम लेने के भाव

नहीं आते। उन अनादि भवों के संस्कारों को परिवर्तित करने के लिए भगवान ने मुक्ति की ओर पहला क़दम बढ़ाने हेतु श्रावक धर्म का मार्ग बतलाया। ऐसा मार्ग जो गृहस्थ में रहते हुए भी पाला जा सकता है और महाव्रतों की अपेक्षा सरल और सुकर है। हमारा धर्म गृहस्थ को भी त्याग और वैराग्य का मार्ग बतलाकर उनमें संयम के बीज बोता है। यही तो प्रभुवीर के मार्ग की सुन्दरता है। यहाँ पर one size fits all policy नहीं है, यहाँ पर तो customisable policy है, जिसमें अपनी क्षमता के अनुसार त्याग लेकर धर्म पालन की बात है। गृहस्थ धर्म का पालन कर अनेक आत्माओं ने आराधकता का आरक्षण कराया है। ऐसे 10 श्रमणोपासकों की महिमा आगमों में भी कथित है, जिन्होंने घर में रहते हुए भी श्रेष्ठ साधना की। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गृही की साधना में जैनधर्म की जीवन-पद्धति नि:सन्देह बेजोड़ है। उपासकदशाङ्ग के सभी श्रमणोपासकों ने गृहस्थ धर्म की ऐसी बेजोड़ साधना की कि आज आगम में उनका गान हम सभी करते हैं। अपार धन-सम्पत्ति और वैभव होने के साथ-साथ ये सभी श्रावक सामाजिक रूप से अत्यन्त सम्माननीय थे, सभी जन को उन पर अत्यधिक विश्वास था। सभी श्रावक सुख-समृद्धि का जीवन व्यतीत कर रहे थे। श्रमण भगवान महावीर स्वामी से बोध प्राप्त कर इन सभी श्रावकों ने 12 व्रत अंगीकार किए और तप साधना की। इनमें से 5 श्रावकों को देवों के भयानक उपसर्ग आए, किसी देव ने उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, किसी देव द्वारा पुत्रों की हत्या कर दी गयी और उसके रक्त और मांस को उनके शरीर पर छिड़का, ऐसे में भी कई श्रमणोपासक विचलित नहीं हुए और जो कदाचित् विचलित हो गए, उन्होंने शीघ्र ही प्रायश्चित्त कर आत्मशुद्धि की। अन्त में संलेखना-संथारा कर सभी ने प्रथम देवलोक में जन्म लिया और अपने आगे के भवों को सुरक्षित किया। धर्म की दृढ़तापूर्वक आराधना करने वालों की प्रशंसा स्वयं भगवान ने अपने अन्य साधु-साध्वियों के समक्ष की, जिससे सभी उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। भगवान द्वारा कामदेव श्रमणोपासक की सार्वजनिक प्रशंसा इस बात का प्रमाण है कि अगर हम भी बेजोड़ साधना करें तो तीर्थङ्करों द्वारा प्रशंसा के पात्र बन सकते हैं। साथ ही एक बार धर्म के संस्कारों का बीजारोपण होने से ये संस्कार हमारे भव-भव सुधार देते हैं और हमें पतन से बचाते हैं। ये ही संस्कार आगे चलकर हमारे मन में संयम की भावना जागृत करेंगे और हमें मुक्ति पथ का अनुगामी बनाएँगे।

यूँ तो ये सभी श्रमणोपासक आज से हज़ारों वर्ष पूर्व हुए और अपनी आत्मा को भावित किया, परन्तु आज 21वीं शताब्दी में इन महापुरुषों की जीवन से हम ऐसी क्या सीख ले सकते हैं कि हमारा जीवन भी सुन्दर बन जाए और आगम में लिखने योग्य बन जाए।

बात करें आनन्द श्रावक की जिन्होंने एक उपदेश सुनकर 12 व्रत अंगीकार किए, समय के साथ-साथ अपने व्रतों की साधना को बढ़ाया और संसार को घटाया। हम भी आनन्द श्रावक की भाँति अपने गृहीत नियमों को नित-प्रति बढ़ाते जाएँ। हमारा संसार तो प्रतिदिन बढ़ रहा है, परिग्रह आसमान छू रहा है, हमारी इच्छाएँ अनन्त और असीम होती जा रही हैं, परन्तु धार्मिक क्षेत्र में हम आज भी वहीं हैं जहाँ आज से 5 साल पूर्व थे। उसमें बढ़ोतरी करने का विचार भी हमें नहीं आता है। ज्ञानी फ़रमाते हैं कि श्रमणोपासक वह होता है जो श्रमण का उपासक हो, उनकी उपासना उनसे सद्ज्ञान और व्रत स्वीकार कर साधना के पथ पर आरुढ़ होना। इसलिए समय-समय पर अपने व्रतों का नवीनीकरण करें और आध्यात्मिक सीढ़ियाँ चढ़ें।

आनन्द श्रावक ने अपने बल का सदुपयोग करके उसे ज्ञान-ध्यान-तप और साधना में लगाया और इसके फलस्वरूप उन्हें अवधिज्ञान की प्राप्ति हुई। उनके अवधि ज्ञान की सीमा इतनी विशाल थी कि एक बार तो गौतम स्वामी भी इस बात पर यक़ीन नहीं कर सके। इतना ही नहीं उन्होंने आनन्द श्रावक को असत्य बोलने

के लिए प्रायश्चित्त करने को भी कहा। परन्तु प्रभु से यह जानकारी होने के बाद कि आनन्द श्रावक को वास्तव में इतना विशाल अवधिज्ञान हुआ है, गौतम स्वामी स्वयं आनन्द श्रावक से क्षमा-याचना करने आए। इसी तरह अगर हमारे कथन सत्य होंगे, तो हमें कोई झुठला नहीं सकता। सत्य का अनुसरण करने के बाद हमें आत्मविश्वास होना चाहिए कि हम उससे डिगे नहीं। संसार की कोई ताक़त हमें उस सत्य से च्युत करने में समर्थ नहीं होनी चाहिए। आनन्द श्रावक होते हुए भी चार ज्ञान के धारी गौतम स्वामी को देखकर अपने सत्य से डिगता नहीं है और अन्ततः उसके सत्य की विजय होती है।

दूसरे अध्ययन में कामदेव श्रावक की बात आती है। कहते हैं परीक्षा की घड़ी ही वह कसौटी होती है जब व्यक्ति खरा या खोटा सिद्ध होता है। कामदेव श्रावक परीक्षा की घड़ी में खरे सिद्ध हुए और ऐसे सिद्ध हुए कि स्वयं प्रभु महावीर ने साधु-साध्वियों को उनका जीवन प्रेरणा रूप बताया। आनन्द श्रावक के समान 12 व्रत अंगीकार करके पौषधशाला में पौषध करते समय कामदेव श्रावक को भयंकर देव उपसर्ग आया। देव ने उनको हाथी का रूप धारण कर पैरों तले रौंद दिया, उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, परन्तु कामदेव श्रावक की दृढ़ता की क्या महिमा कि वे टस से मस न हुए और उस घोर कष्ट को सहन किया। उपसर्ग पूर्ण होने पर पौषध का पारना किया और प्रभु दर्शन को गए। आज हमारे जीवन में एक छोटी-सी विपत्ति से हम घबरा जाते हैं और अपनी दृढ़ता को भूलकर भयभीत हो जाते हैं। कामदेव श्रावक से हमें निर्भयता और निडरता का पाठ सीखना होगा। प्रभु वीर के शासन को श्रावक-श्राविकाओं के रूप में हमें ही आगे लेकर जाना है, ऐसे में हम विपत्ति के सामने घुटने टेक देंगे तो कैसे काम चलेगा?

घोर उपसर्ग को समता से सहन करने पर प्रभु महावीर ने अपने केवल ज्ञान से जान लिया तथा दर्शनार्थ आए कामदेव श्रावक से पूछा-क्या यह सब घटित हुआ था? उनके सकारात्मक उत्तर देने पर प्रभु ने कहा कि साधक को कभी कष्टों से घबराना नहीं चाहिए और संकट को दृढ़ता से झेलना चाहिए। इससे साधना निर्मल और उज्ज्वल बनती है। प्रभु ने साधु-साध्वियों को सम्बोधित करते हुए यह भी कहा कि एक श्रमणोपासक गृहस्थ में रहते हुए धर्माराधना में इतनी दृढ़ता बनाए रख सकता है तो आपका तो यह कर्त्तव्य है ही। तात्पर्य यह है कि हमारा जीवन बोलना चाहिए जिह्वा नहीं। कामदेव अपनी दृढ़धर्मिता से प्रभु की प्रशंसा का पात्र बना। आज हम प्रशंसा तो चाहते हैं परन्तु उसके लिए साधना करना नहीं चाहते। यथोचित कार्य करने पर हम स्वतः प्रशंसा के पात्र हो जायेंगे, हमें उसके पीछे भागना नहीं पड़ेगा।

उपासकदशाङ्गसूत्र के तीसरे, चौथे और पाँचवें अध्ययन में उन श्रावकों का वर्णन आता है जो देव उपसर्ग से च्युत होकर अपनी साधना में स्खलित हो गए। तीसरे अध्ययन में चूलनीपिता की आँखों के सामने उनके पुत्रों की हत्या कर दी गयी परन्तु इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा। देव ने पुत्रों का वध कर उनके रक्त मांस को चूलनीपिता श्रावक पर छिड़क दिया, वह फिर भी विचलित नहीं हुआ, परन्तु माता के वध की बात सुनकर वह अपनी साधना से चलायमान हो गया और देव को पकड़ने के लिए हाथ फैलाए, परन्तु देव वहाँ से चला गया और अगले दिन चूलनीपिता श्रावक ने आलोचना कर प्रायश्चित्त ग्रहण किया।

चतुर्थ अध्ययन में सुरादेव श्रावक भी अपने पुत्रों का वध झेल गया, परन्तु जब देव ने श्रावक के शरीर में 16 रोग उत्पन्न करने की बात कही तो वह रोगाक्रान्त शरीर के बारे में सोचकर भयभीत हो गया और साधना से च्युत हो गया। अपनी भूल समझ आने पर उन्होंने भी शीघ्र प्रायश्चित्त कर आत्मशुद्धि की।

पाँचवें अध्ययन में चुल्लशतक नामक श्रावक ने अपनी साधना पुत्रवध पश्चात् भी क़ायम रखी, परन्तु देव ने जब सम्पत्ति पर अपना शिकंजा कसा, तब वे

साधना तोड़कर साधना से चलित हो गए। धन के अभाव से होने वाली परेशानियों से वह त्रस्त हो गया और साधना भंग कर दी। अपनी भूल समझ आने पर उन्होंने भी शीघ्र प्रायश्चित्त कर आत्मशुद्धि की।

सातवें अध्ययन में सद्दालपुत्र को भी देव ने ऐसे ही उपसर्ग दिए, पुत्रों की हत्या करने के बाद भी वे अपनी साधना से चलायमान नहीं हुए, परन्तु पत्नी की हत्या से वे व्याकुल हो उठे। पत्नी मोह में आकर उन्होंने अपनी साधना खण्डित तो कर दी, परन्तु अपनी भूल समझ आने पर उन्होंने भी शीघ्र प्रायश्चित्त कर आत्मशुद्धि की।

मानव मन बड़ा दुर्बल होता है, इसे पल-पल सावधान रखना पड़ता है। सावधानी हटी नहीं कि दुर्घटना घट जाती है। ये सभी श्रावक तो महाभयंकर उपसर्ग आने पर विचलित हुए, परन्तु हम छोटे-छोटे उपसर्गों से हार मान लेते हैं। साथ ही इन सभी श्रावकों ने शीघ्र ही प्रायश्चित्त कर आत्मशुद्धि की, जिससे आगे बढ़ पाए। प्रायश्चित्त का अर्थ है अपनी भूल को स्वीकार करना और पुनः नहीं दोहराने का संकल्प करना। हममें से बहुत से लोग गलती स्वीकार तो कर लेते हैं, परन्तु उसे पुनः दोहराने का संकल्प नहीं करते। इन श्रावकों के जीवन से हमें यह सीख लेनी चाहिए कि अधूरा प्रायश्चित्त न करके हम अपनी भूल को न दोहराकर पूर्ण प्रायश्चित्त के अधिकारी बनेंगे।

छठे अध्ययन में कुण्डकौलिक श्रावक का वर्णन आता है जिसने देव को नियति और पुरुषार्थ के संवाद में निरुत्तर कर दिया। भगवान के सिद्धान्तों को सर्वोपरि रखने के लिए कुण्डकौलिक श्रावक ने देव से कोई भय नहीं खाया और सत्य पर अडिग रहे। अन्त में देव ने निरुत्तर होकर अपनी हार स्वीकार कर ली और सत्य एवं प्रभु महावीर के सिद्धान्तों की विजय हुई। इस अपूर्व साहस के कारण प्रभु ने साधु-साध्वियों को कहा कि शास्त्रों का अध्ययन करने वाले साधु-साध्वियों में तो ऐसी योग्यता होनी ही चाहिए। प्रभु महावीर के शासन को जीवन्त रखने के लिए हमें प्रभु के सभी सिद्धान्तों की गहन जानकारी होनी चाहिए, तब ही हम समय आने पर महावीर के शासन को दिपाने का काम कर पाएँगे। संवाद में समर्थता साबित करने का अर्थ कदापि यह नहीं कि हम सामने वाले व्यक्ति से भिड़ जाएँ, परन्तु हमारे अन्दर ऐसा कौशल होना चाहिए कि हम युक्ति से समाधान कर पाएँ और अपने सिद्धान्तों पर अडिग रह सकें।

आठवें अध्ययन में प्रभु ने महाशतक श्रावक के बारे में बतलाया है। महाशतक श्रावक के 13 पत्नियाँ थीं। उनमें से एक पत्नी रेवती कामभोगों में अत्यन्त लिप्त थी। वह सप्त कुव्यसनों का सेवन करती और नित्य प्रति महाशतक श्रावक को साधना से च्युत करने का प्रयत्न करती। एक बार महाशतक श्रावक को डिगाने के उद्देश्य से पौषधशाला में रेवती का आगमन होता है। उस दिन महाशतक श्रावक की सहनशीलता का बाँध टूट जाता है और उत्पन्न अवधिज्ञान के बल पर वे रेवती को उसका भविष्य वर्णन कर देते हैं। वे कहते हैं कि अपने कुकर्मों के फलस्वरूप अगले 7 दिनों में वह भयानक रोग से पीड़ित होकर दुःखी और व्यथित होकर नरक में जाएगी। यह सुनकर रेवती वापस लौट जाती है। परन्तु प्रभु महावीर महाशतक श्रावक को आलोचना-प्रायश्चित्त करने को कहते हैं, क्योंकि भगवान फ़रमाते हैं कि हमें ऐसा सत्य नहीं बोलना चाहिए जो अनिष्ट, अप्रिय और अमनोज्ञ हो। हमारा धर्म तो हमें सत्य और यथार्थ होने पर भी ऐसा कहने से बचने का उपदेश देता है, जो भय, त्रास और पीड़ा उत्पन्न करे। ऐसे में ऐसा भाषण जो मिथ्या हो, झूठ हो, ऐसा बोलना तो हमें कदापि नहीं कल्पता। हमें वीर के शासन को शोभायमान करना है तो हमें वचन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

नौवें एवं दसवें अध्ययन में वर्णित श्रावक नन्दिनीपिता एवं सालिहीपिता पर भले ही कोई देवकृत उपसर्ग नहीं आया, परन्तु उनकी साधना एवं व्यक्तित्व भी अन्य श्रावकों जैसा ही श्रेष्ठ था। समाज में अत्यन्त विश्वसनीय ये श्रावक अनेकों की गोपनीय बातों को जानते थे और विश्वसनीय होने के कारण इनको सभी

अपने रहस्य बतलाते थे। आजकल जहाँ धोखाधड़ी और असत्य वचन आम बात हो गयी है, उस समय सत्यता और विश्वास का बोलबाला था। हमें इन श्रावकों के उत्तम चरित्र से सीख लेनी चाहिए कि हम कभी किसी के साथ विश्वासघात नहीं करें। हमें इस युग का श्रावक बनना है तो हमें उस युग के श्रावकों के जीवन से प्रेरणा लेकर उसे आचरण में लाना होगा।

इन सभी श्रावकों ने दृढ़ निश्चय कर सम्पत्ति त्याग करके धर्म पथ पर चरण बढ़ाए। आज का नौजवान तो इस मामले में कुछ असफल होता जा रहा है। रात को किया निश्चय सुबह तक नहीं टिकता और सुबह किया निश्चय रात को नहीं टिकता। नियम आदि लेने में शिथिलता या कोई कार्य पूर्ण करने में विलम्ब होता है। कभी ऑफ़िस की डेडलायन चूक जाते हैं तो कभी कुछ और। प्रमाद में जीवन व्यतीत करते हुए पुरुषार्थ से दूर भागते हैं। ऐसे में इन श्रावकों का वर्णन अत्यन्त प्रेरणादायी है जो हमें जीवन में संकल्प और दृढ़ निश्चय का पाठ पढ़ाता है।

इन सभी श्रावकों ने समय आने पर 12 व्रत ग्रहण किए, परन्तु व्रत ग्रहण करने से पूर्व भी इनका जीवन सात्त्विकवृत्ति का था। इनके जीवन में व्यसनों का कोई स्थान नहीं था। व्रत ग्रहण करने का भाव भी उसी जीव को आता है जो मन से सरल और सच्चा होता है। इसलिए अगर हम सोचें कि व्रत ग्रहण करने से स्वतः ही जीवन बदल जाएगा तो ऐसा नहीं है। हम व्रत ग्रहण करने का विचार तब ही ला पाएँगे जब हम अपना जीवन सुन्दर बनाएँगे। यह चामत्कारिक बदलाव नहीं है, यह तो निज मन की कोमल वृत्तियाँ हैं जो हमें धर्म करने को सहयोग देती हैं। इसलिए आज और अभी से एक सुन्दर जीवन की रचना करेंगे तब ही आगे जाकर हम आगमसम्मत बन पाएँगे।

अब यह हमें तय करना है कि हमें इस भव में क्षणिक सफलता प्राप्त कर अखबार में नाम चाहिए, जो कि हर रोज़ नया आता है और बदलता रहता है अथवा आगम में स्थान चाहिए जो परम सत्य और शाश्वत है।

इतना ही नहीं, इन महापुरुषों का जीवन तो एक ऐसा आदर्श है जो हमें एक healthy and happy lifestyle का भी secret बताता है। आज हमारा जीवन डिप्रेशन, स्ट्रेस, हार्टप्राब्लम्ज़ और अन्य कई बीमारियों से जूझ रहा है। हर किसी का जीवन कोई न कोई परेशानी से घिरा हुआ है। दूसरी तरफ़ जब हम इन श्रावकों का वर्णन पढ़ते हैं तो देखते हैं कि ये अत्यन्त निश्चिन्त और सदा प्रसन्न रहते थे, तो आइए जानते हैं इनकी प्रसन्नता के राज़ 4 F's के माध्यम से :

1. Fresh
2. Freedom
3. Finance
4. Fulfilment

1. पहला सूत्र है फ्रेश, यानी Eat fresh and stay fit, इन सभी श्रावकों ने 12 व्रत अंगीकार किए और 7वें व्रत में आनन्द श्रावक के वर्णन में हम पढ़ते हैं कि उन्होंने सिर्फ़ 4 सब्ज़ियाँ खुली रखकर बाक़ी सबका त्याग कर दिया। उन 4 सब्ज़ियों में आता है–पालक, बथुआ, लौकी और भिंडी। सम्भवतया ये सब्ज़ियाँ 4 ऋतुओं की प्रतीक हैं। अतः हमेशा सीज़न की सब्ज़ी, फ्रूट आदि का सेवन करना चाहिए, क्योंकि उसमें पौष्टिक तत्त्व अधिक होते हैं और वह ऋतु के अनुसार हमारे शरीर के पाचन को भी स्वस्थ रखता है। साथ ही उन्होंने एक प्रकार के चावल को रखकर बाक़ी का त्याग किया। व्याख्याकार कहते हैं कि आनन्द श्रावक बिहार के आस–पास रहते थे, जहाँ आज भी चावल भोजन का प्रमुख अंग है। वैश्वीकरण के इस दौर में हम local और Seasonal को छोड़ अन्य सभी खाद्य पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, जिसका हमारे जीवन और स्वास्थ्य पर ग़लत असर पड़ रहा है। मोटापा, हृदय रोग और अन्य बीमारियाँ इसी अनियमित भोजन के फल हैं। भारत के मौसम, ऋतु और हमारी शरीर की बनावट के अनुसार भोजन न करने से हमारे शरीर का नुक़सान होता ही है।

इसलिये Eat fresh and stay fit.

2. Freedom to choose : आनन्द आदि श्रावकों ने भगवान महावीर से जिनधर्म का उपदेश सुनकर उसे हृदय में धारण किया और पालने का निश्चय किया। सभी ने घर आकर अपनी-अपनी पत्नियों को प्रभुदर्शन की प्रेरणा दी और गृहस्थ श्रावक धर्म स्वीकार करने को कहा। परन्तु यह ध्यान देने योग्य है कि उन्होंने सिर्फ़ निवेदन किया, कोई दबाव नहीं डाला। आज हम अपने साथी से या अन्य परिवारजन पर हमें जो श्रेष्ठ लगता है उसको करने का दबाव डालते हैं, बुजुर्ग बच्चों पर अपनी सोच थोपते हैं और छोटे-बड़ों को बदलना चाहते हैं, जबकि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तो सभी का अधिकार है। हम दूसरों पर अपना आधिपत्य समझ कर उन्हें आदेश देते हैं, जिससे हम उनका मन दुःखाते हैं, यह आपसी अनबन ही तनाव का कारण बनती है। इसलिए हमें सबको फ्रीड़म देना चाहिए जिससे वह अपने जीवन को अपने अनुसार मोड़ सके। लेकिन सम्यक् शिक्षाएँ देना उनकी स्वतन्त्रता में बाधक नहीं है। ये तो समय-समय पर देनी ही चाहिए।

यह भी समझना आवश्यक है कि अपेक्षा करने में निराशा निहित है। इसलिये निराश होने से बचना हो तो, अपेक्षाएँ न रखें। हमारी तरह सभी अपनी समझ और बुद्धि से अपने लिए निर्णय लेने में सक्षम हैं।

3. Financial Management : यूँ तो सभी श्रावकों के पास अथाह धन-सम्पत्ति थी जिसे वे अपने घर, व्यापार और अन्य सुख-सुविधाओं के प्रयोग में लेते थे, परन्तु यह सम्पत्ति उनके स्ट्रेस का नहीं उनके डी-स्ट्रेस रहने का कारण थी। उनकी सम्पत्ति का 1/3 हिस्सा सुरक्षित कोश के रूप में रहता था, 1/3 हिस्सा घर खर्च में लगता था और 1/3 हिस्सा व्यापार में लगा हुआ था। आए दिन लोगों का दिवालिया निकल रहा है, इससे समाज में विश्वसनीयता कम होती है और समाज में अविश्वास का वातावरण पैदा होता है। ये सभी श्रावक सम्पत्ति से निश्चिन्तता की ओर बढ़ रहे थे, अगर कभी व्यापार में नुक़सान हो भी जाए तो सब कुछ नहीं लुट जाता था। आज हम अपनी क्षमता से ज़्यादा का व्यापार करते हैं, इधर-उधर से कर्ज लेकर अपनी सम्पत्ति का विकास करने में लगे रहते हैं। क्रेडिट कार्ड पर जीवन चलते हैं और बुरे समय में हमारे पास सुरक्षा के नाम पर कुछ नहीं रह जाता है। इसलिए इन श्रावकों के जीवन से हमें वित्तीय प्रबन्धन सीखना ज़रूरी है जिससे हम अपनी सम्पत्ति से निश्चिन्तता प्राप्त करें, अनिश्चिन्तता नहीं।

4. Fulfilment and pass on : आनन्द आदि 10 श्रावकों ने कई वर्षों तक अपने परिवार और कुटुम्ब का निर्वहन किया। कई वर्षों तक वे परिवार के मुखिया और केन्द्र बिन्दु रहे। परन्तु समय आने पर अपने पुत्र को योग्य जानकर सारा भार पुत्र को सौंपकर अपने जीवन को त्याग के पथ पर ले गए। हमें भी अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूर्ण होने पर घर से चिपके नहीं रहना चाहिए, अपनी गद्दी ख़ाली कर अगले उत्तराधिकारी को स्थान देना चाहिए, फिर वह चाहे घर हो या ऑफ़िस। यह सोच रखना कि ज़िम्मेदारी छोड़ने पर मेरा कोई महत्त्व नहीं रहेगा, यह ग़लत है, क्योंकि परिवर्तन संसार का नियम है और स्वैच्छिक निवृत्ति सदैव अधिक आत्मसम्मान का कारण होती है। आज नहीं तो कल हम वह सब करने के काबिल नहीं रहेंगे जो हम आज आसानी से कर पा रहे हैं। इसलिए समय रहते समझ जाएँ कि क्या करना है? अतः समय पर अपने कर्त्तव्य पूर्ण करें और समय रहते उन्हें आगे दूसरे को सौंप दें।

अगर इन महापुरुषों के जीवन के कुछ मोती हम ग्रहण कर लेंगे तो हमारा नाम भी आगम में अंकित होने योग्य हो जाएगा। गुरुदेव से पूछा-जीवन कैसा हो? उत्तर मिला-आगम में लिखने जैसा हो।

-सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग,
कनोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय, जयपुर
(राज.)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 40
ISSN 2249-2011

English-section

THE SPIRIT OF RECONCILIATION OF DIFFERENT IDEOLOGIES AND FAITH AS EXPOUNDED BY TĪRTHAṄKARA MAHĀVĪRA IN SŪTRAKṚTĀṄGA SŪTRA

D. Reshma

(In continuation of the last month)

ANEKĀNTVĀDA IN SŪTRAKṚTĀṄGA SŪTRA

Sūtrakṛtāṅga Sūtra sowed the seeds of Anekāntavāda. In this text we find description of 363 schools and all these schools claimed that their views regarding reality were only right view while the rest were wrong: much like the present times. But according to Tīrthaṅkara Mahāvīra all of them have a one-sided view of reality. This one-sided view was due to lack of analysis and resultant incomplete interpretation of reality. Reality is complex and any answer regarding it cannot be absolute or categorical. Absolute or categorical posturing leads to one-sidedness as it explains only part of the problem and leaves the other part unexplained and is termed as Mithyādarśana. An absolutistic attitude leads to violence and is a result of passion and attachment. The analytical approach to solving philosophical questions is termed as Vibhajja and Tīrthaṅkara Mahāvīra along with Gautham Buddha were called Vibhajjavadis. Vibhajjavāda refers to answering a question after analysing from various parts. The need for an analytical approach is urgently needed as blind faith leads to fanatism and intolerance.

Saṅkejjayāsaṅkitabhāvabhikku.
***vibhajjavādam ca viyagarejja.* (1/15/22)**

A monk must speak the language of vibbhajjavāda, so as not to create doubts in the mind of the listener. He should speak relatively with the principle of Anekānta.

It is from Vibhajjavāda that the theory of Anekant was developed. Jaina practice of Anekānta meant respecting the views, faiths and ideologies of others and Sūtrakṛtāṅga Sūtra laid the foundation stone with its analysis of various philosophies. In Sūtrakṛtāṅga, Tīrthaṅkara Mahāvīrahas advised ascetics to speak the language of Vibhajja.

In the Anācārasruta adhyayana again Tirthankara Mahavira calls for rejection of Ekānta perspective and calls for Sāpekshavāda or theory of relativity. The adhyayana talks about seventeen opposing pairs which exist as reals and an absolute acceptance of any one is considered as ekānta and anācara. Though acāra deals with conduct, in this adhyayana it is applied to saidhanthika principles as well. Thus, Ekāntavadi is one who is bereft of Right Faith, Right Knowledge and Right Conduct.

Ekehiṁ dohiṁ ṭhaṇehiṁ,
vavahāro ṇa vijjatī |
Ekehiṁ dohiṁ ṭhaṇehiṁ,
aṇāyāraṁ tu jāṇae || (2/5/9)

The above sutra is repeated five times for the Munis to be aware of the contrary views and remain alert. Even the Tirthankaras cannot explain the whole truth in absolute terms and use Sāpekshavāda and Syādvāda to express reality.

Anekānta is the application of multiplicity of perception. Thus, it is not a philosophy but a philosophical standpoint just as there is the Advaitic standpoint of Śaṅkara and the standpoint of the Middle path of the Buddhists. Anekānta literally means non-absolution. Though the Anekānta period in Jaina philosophical literature comes after the end of the Āgamic period, the genesis of the

Anekāntic idea is already present in the Āgamic literature in the form of Vibhajjavāda and rejection of ekanta in Sūtrakṛtāṅga Sūtra. The Bhagavatī Sūtra (16.6) refers to the dreams dreamt by Tīrthaṅkara Mahāvīra just before He attained Omniscience (Kevala-jñāna). The third vision in the dream was of a Pansakholibird with multi-coloured(citra-vicitra) wings. It symbolizes that Tīrthaṅkara Mahāvīra will deliver the Dvadaśanga which will highlight the principles of sva-samaya and para-samay. The multi-coloured wings of the Pansakholi bird signify the promulgation of Anekānta by Tīrthaṅkara Mahāvīra.

Anekānta accepts the possibility of two contrary and opposing viewpoints existing together in the same reality. In Sūtrakṛtāṅga Sūtra we find mention of Kṣṇikavāda of the Buddhist, the Eternityconcept of the Naya – Vaiśeṣika school. Jaina philosophy acknowledged a degree of truth in these principles. They neither dismiss the Kṣṇikavāda entirely nor do they dismiss the ideology of Eternity entirely. They establish the relative truth in both the contrary thoughts. Kṣṇikavāda was interpreted from the perspective of Ṛjusūtra Naya. (It only considers the modification of the momentary present). From the perspective of Ṛjusūtra Naya the present moment is the only reality. There is no past or future reality in this Naya, thus Kṣṇikavāda is relatively true. From the perspective of substance, eternality is accepted. Momentary existence is attributed to Paryāyārthika Naya and eternal existence to Dravyārthika Naya are found in the same substance. To consider anyone point of view real is ekānta. The Vedanta system advocates Brahman as the only reality and the rest as illusion this also is reconciled in the Jaina philosophy under Sangraha Naya.It looks only at generality of the substances. According to Sangraha Naya the undivided is pure while the divided is impure.

Avaropparamavirohesavvam atthittisuddhasaṅgahaṇe |
Hoe tamevaasuddham igijāīvisesagahaṇeṇa || (Nayacakra 208)

In fact, the most fundamental aphorisms which explain the Jaina philosophy are written with the spirit of Anekānta. Be it ***Samyag-darśana-jñāna-cāritraṇi moksamārgaḥ*** from Tatvārtha Sūtra or ***utpāda-vyaya-dhravyayuktaṃ sat*** again from Tatvārtha Sūtra and the opening line of Sūtrakṛtāṅga Sūtra ***Bujjhejjā tiuṭṭejjā bandhaṇam parijāṇiyā.***

Anekāntavāda promotes religious pluralism over exclusivism. Exclusivism leads to intolerance and fundamentalism. The only way to overcome it is by promoting religious pluralism by practising Anekānta.

Sayaṃ Sayaṃ pasansantā garahantā paraṃ vayaṃ /
Je u tattha viusamti sansāramte viussiya // 1/1/2/23.

Tīrthaṅkara Mahāvīra in Sūtrakṛtāṅga Sūtra states that those who praise their own faith and ideologies and blame that of their opponents thus distort the truth, will remain confined to infinite cycles of birth and death.

Communication is the way to conflict resolution. Once again Sūtrakratāṅga teaches us how to interact with people of opposing ideologies. In the sixth Adhyayana dialogues between Ārdraka Kumar - a Jaina ascetic, Gausālaka – propagator of Niyativada, a Buddhist Bhikṣu and Hastitāpasa. The dialogues an example of inter-faith dialogue helps in understanding the etiquettes to be followed during such discussions.Those who believe that their belief alone is right and that of others is wrong project an absolutistic attitude which creates conflicts. Religious fundamentalism and all other problems can be solved by accepting an Anekānta or non-absolute point of view. It resists philosophical

dogmatism and recognizes the good qualities of many different points of view. Communication is the key to resolve rifts. Another example of positive communication is seen in the seventh adhyayana. The conversation between Udaka Peḍhālaputra, belonging to Tirthankara Pārśvanātha tradition and Indrabhuti Gauthama, the first Ganadhara of Tirthankara Mahāvīra. The conversation between them is polite and respectful and at the same time differing views are discussed with great sincerity, the sole objective being ascertainment of the truth.

Only those who take different viewpoints together can grasp all aspects of a phenomenon and attain right understanding. It is this broader outlook that can establish harmony among conflicting views of various religions.

In Sūtrakṛtāṅga Sūtra, Tīrthaṅkara Mahāvīra has given us the way to read and understand various apparently differing viewpoints. The pragmatic approach of Tirthankara Mahavira in Sūtrakṛtāṅga Sūtra is the need of the hour. He has criticised those views which promote a one-sided narrative of reality. Though the text refutes the various schools it does not disregard them entirely. Though Tīrthaṅkara Mahāvīra was critical of these one-sided narratives he discussed them with great respect. We do not find names of any of the teachers belonging to various schools in Sūtrakṛtāṅga Sūtra which once again highlights the respect he had for his contemporaries. He refrained from name calling which we need to practice today as it will help establish goodwill amongst different religions and their leaders.

The spirit of religious tolerance expounded by Tīrthaṅkara Mahāvīra in Sūtrakṛtāṅga Sūtra was carried forward by later Jaina Ācāryas. In the Isibhāsiyāim text the views of both Śramanic and Brahminic teachers like Nārada, Bharadvaja, Buddha and Gośālakaare held in great esteem. They are called Arhat Ṛṣis and their preaching's are regarded as Agamas. The tradition of religious tolerance was carried on by Jaina Ācārya like Ācārya Haribadra (8th CAD) and Ācārya Hemachandra(12th CAD) in their works, respectively.

Ācārya Haribadra says –

Na me pakṣapāto vire na dveso Kapilādiṣu/
Yuktimadvacanam yasya tasya karyaḥ
parīgrahaḥ //

'I have no bias towards Lord Mahavira and no disregard for Kapila and other saints and thinkers.whatsoever is rational and logical must be accepted'.

Acarya Hemachandra says –

Bhava bijānkurajanana rāgadya
kṣayamupāgata yasya /
Brahmā va viṣnurva haro va jino-va
namastasmiai //

I bow to all those who have overcome attachment and aversion which are the cause of worldly existence, be they Brahmā, Viṣṇu, Śiva or Jina.

Ācārya Siddhasena in Sanmati Tarka highlights the diversities in philosophical ideologies.

Jāvaiya vayaṇavaha tāvaiya ceva honti
ṇayavāya /
Jāvaiya nayavaya, tāvaiya ceva
parasamaya //

As many forms of expressions are there, so are the relative statements and as many relative statements are there, so many are the philosophies.

Ideological distinction is natural as there are many ways to know truth which leads to these distinctions. All schools of thought are valid when they are understood from their own viewpoint and so far, as they do not discard the truth value of others.

Another aspect of Reconciliation requires all involved to look within and

address their own prejudices. To initiate a dialogue within the community is also equally important and necessary in the current scenario. The dialogue between Udaka Peḍhālaputra and Indrabhuti Gauthama is an example of intra-faith dialogue. We see similar intra faith dialogue in the Uttarādhyayana Sūtra between Kesī Muni and Indrabhuti Gauthama. From time to time these dialogues are required to remove any kind of ill-feeling in the community. An intra-faith dialogue amongst leaders of the various sub-sects will help the community progress together and prepare us for challenges ahead. It will create unity. Today, there is a marked shift from spiritual values to religious ritualist rigidity and a supremist / egoistic attitude is being groomed covertly.

We are born as Jains. It was not a choice; the question we need to ask ourselves is that would we still call Jainism the greatest religion if we were born in a Christian or Muslim family? In most cases the answer will be big no. We hear this a lot nowadays, a sense of entitlement in being born as a Jain and to express ourselves rather pompously that Jainism is the best or greatest religion in the world. Ironically, 90% of those who claim that Jainism is the greatest religion in the world have hardly studied other religions. This is not upholding the spirit of Anekānta. Jaina philosophy has always been the flag bearer of Non-violence and seeing its followers taking to a path that leads to religious exclusivism is rather alarming. Tīrthaṅkara Mahāvīra understood reality in its totality and was critical of certain viewpoints; but to ignorantly criticize someone is dangerous. This again highlights the importance of how to interpret the Agamas correctly. In some sub-sects, reading of scriptures is limited and demands certain qualifications for the same, in the current scenario, probably a wise move. Our scriptures have been written in different Nayas and without the understanding of Anekāntavāda and Syādvāda the meaning and essence is likely to be distorted. Young Jains must be encouraged to read other philosophies as well. Our forefathers showed immense faith in their belief system and were open to scrutiny by others. Their confidence was due to a perfect amalgamation of Right Faith and Right knowledge. We must also nurture the same ideology; Tīrthaṅkara Mahāvīra never promoted religious supremacy though he influenced and inspired millions. Those people choose the path laid by Tīrthaṅkara Mahāvīra after logical deliberations and made a self-realized choice.

To study any philosophical school under the lens of Vedic or Śramanic, Āstika or Nāstika narrows its reach and message. We need to study philosophy with an open mind to promote oneness and paving the path of peace and harmony in the society.

CONCLUSION

The Sūtrakratāṅga Sutra begins with the words ***Bujjhejjā tiuṭṭejjā*** which hold great spiritual significance and deeper contemplation reveals subtle realities. ***Bujjhejjā*** means to know and tiuṭṭejjā means to break or to destroy. From a meta-physical perspective, it refers to reconciliation of knowledge and conduct. In the context of varying philosophical beliefs, it can be interpreted as first to know all these beliefs and schools and then renounce them after due diligence.

To finish with an anecdote, An Ācārya taught his disciple the lesson of Anekānta and asked him to travel and study all philosophies and make a note of all false/pseudo/ delusional beliefs and bring it to him. The student travelled all over and studied all schools and

returned to his gurū. After exchange of pleasantries the gurū asked him for his note and all the philosophies he thought were untrue. The disciple with humility replied that his hands were empty. The gurū asked was it because he did not have paper to write. The disciple said no, he had paper. Again, the gurū asked if he did not prepare a list due to lack of ink, again the disciple replied in the negative. He said he had the ink. Again, the gurū asked if it was because he did not have a nib. The disciple replied he had one. The gurū asked again if he did not make a list because he did not find anything untrue.To this the disciple replied in the affirmative. He said nothing seemed untrue and hence he did not make a list. Pleased the gurū replied that he can go home now;his education was complete. This is the true essence of Anekānta. This is the need of the hour. Anekānta is the integrity of multiplicity.

In the Sūtrakṛtāṅga Sūtra the root of violence is given as the attachment and the will for possession leads to violence. Promoting Right knowledge and letting go of ignorance and delusion by giving up non-absolutistic beliefs is the crux of Sūtrakṛtāṅga Sūtra.

Citamantamacitam vā Parigijjha kisāmavi/
Annaṁ vā aṇujāṇāti, evaṁ dukhā ṇa muccaī // (1/1/2)

To uphold the spirit of reconciliation all religions need to come together and accept the Anekāntika principle preached by Tīrthaṅkara Mahāvīra. Rather than sticking to their absolutistic viewpoints all religions need to accept the relativity of truth and accept that they represent a part of the truth and not the complete truth. The pragmatism shown by Tīrthaṅkara Mahāvīra is required today to build peace, brotherhood, and social harmony in our society.

REFERENCES

1. Sutrakratanga Sutra, Madhukar Muni M.S., Sri Agama pravacana samiti, Byavar, Rajasthan
2. Suyagado, AcaryaTulsi, Jain Vishwa Bharati, Ladnun, Rajasthan.
3. Sri SutrakratangaSutram, Muni Jyanandavijayadi Munimandal, Gurusriramchandraprakashan samiti, Bhinmal, Rajasthan.
4. Sutrakratnga ka darshinika adhyayana, Sadhvi Dr. Nilanajana Shree, Bhai ji Prakashan, Jodhpur, Rajasthan.
5. Peace, religious harmony and solutions to the world problems from Jaina perspective, Prof. Sagarmal Jain, Parshvanath Vidyapeeth, Varanasi.
6. Jaina Darshana aur Anekant, AcaryaMahaprajya, Jain Vishwa Bharati, Ladnun, Rajasthan.
7. Jinvani – Agama Sahitya Visheshanka, Ed by Dr.Dharmachand Jain, SamyagjnanaPrakashak Mandal, Jaipur.
8. Jaina Dharma – Darshana, Dr. Mohanlal Mehta, Seth Mutha Chaganmal Memorial foundation, Banglore.
9. Philosophy in Jaina Agamas, Samani Mangal Pragya, Jain Vishwa Bharati, Ladnun
10. Concept of Vibhajjavada, Aspects of Jainology volume VI.
11. Svadhyaya Shiksha – Agama Anupreksha, Sutrakratangaanka, Ed Prakashchand Jain, Sri Sthanakvasi Jain Svadhyaya Sangh Jodhpur.
12. A history of Indian Philosophy, Surendranath Dasgupta, Motilal Banarsidas, Delhi.
13. Jaina darshanakemool sutra, AcaryaMahaprajya, Jain Vishwa Bharati, Ladnun, Rajasthan.
14. A source book in Jaina philosophy, Devendra Muni Shastri, Sri Tarak Guru Jain Grantalaya, Udaipur, Rajasthan.
15. Isibhasiyam, ed by Walter Schubring, L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
16. Darshana Aur Anekantvada, Pandit Hansraj ji Sharma, Sri ATīrthaṅkara Mahāvīra ananda Jain Pustakpracarak Mandal, Agra, UP.
17. Ekant mei Anekanta, Acarya Mahaprajya, Jain Vishwa Bharati, Ladnun, Rajasthan.
18. SaddarshanaSamucchaya, Acarya HaribadraSuri, ed Mahendra Kumar Jain, Bhariya Jnanapita Prakashan, Varanasi.

-Guest faculty @ Shri ShankarlalSundarbaiShasun Jain College for Women, Chennai
Guest Faculty @ University of Madras, Chennai
5/4 Lodikhan Street, Sri Ganesh, Pondy Bazar, T. Nagar, Chennai – 600017

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 45
ISSN 2249-2011

प्रासङ्गिक

आभार गुरुदेव!

सुश्री दिशा जैन

गुरु हीरा का नाम शक्ति का सञ्चार है
गुरु हीरा का नाम ऋजुता का उच्चार है
गुरु हीरा का नाम धर्म का विस्तार है

आपके अनन्त उपकार हैं,
मम् मन एवं स्मृति पटल पर उभर रहे हैं,
फिर भी न सारे सिमट रहे हैं,
अनन्त उपकार और
कृपाप्रसाद के लिए जितना 'आभार' बोलूँ कम है,
फिर भी एक प्रयास है.....

सूर्योदय सहित उदित आशा
सशक्त-व्यसन मुक्त समाज की अभिलाषा
ऋषभ प्रभु सी सृजनात्मकता, ऊर्जा की परिभाषा
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

अशरण-अनित्य भावना है संयम का आधार
नित्य, अविचल बहती सम्यक्त्व की धार
अजितनाथ सी सत्य-सरल शिक्षा से जग-उद्धार
करने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

तपश्चरण से आत्मोत्थान
प्रसन्नमय मुद्रा का भक्तों को सोपान
सम्भवनाथ जैसी पूर्णता का अवस्थान
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

गुरु-भक्ति की आदर्श मूर्ति
विकार से विकृत न होकर, विनय की संस्तुति
अभिनन्दन से उत्कृष्ट पुरुषार्थ की प्रस्तुति
इसका दर्श दिखाने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

कठिनतम उलझन का सरलतम आशय
चाहना आपकी शुद्ध, निश्चय रूप अक्षय
सुमतिनाथ की सन्मति का परिचय
देने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

न्याय और निरपेक्षता का संवर्धन
सत्कार्यता और सजगता का संरक्षण
पद्मप्रभ सी निर्लिप्तता का वर्णन
देने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

स्व-पर भेद का विकसित विज्ञान
हेय-ज्ञेय-उपादेय का भान
सुपार्श्व सी आत्म-शोभना का आख्यान
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

चन्द्रमा से भी अति निर्मल अवस्था
कृपा रूपी रोशनी/अमृत की वर्षा
चन्द्रप्रभ सी स्व-पर कल्याण कथा
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

क्रियानिष्ठा और कृतज्ञता का संयोग
पुष्पदन्त सी कोमलता और लययोग
सुविधिनाथ सी विधि-व्यवस्था का उपयोग
बताने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

बतलाया-मोह-बीज से होता दुःख का विकास
और मोक्ष-मार्ग यत्न से कर्म ज्वर का नाश
शीतलनाथ सी शीतलता और आत्मविश्वास
इसका दिग्दर्शन कराने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

हर मुरझाए मन को प्रफुल्लित करने वाले बसन्त
अतिशय-युक्त होते हुए भी मान मर्दन वाले सन्त,
श्रेयांसनाथ सी श्रेष्ठता सहित निर्ग्रन्थ

बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

संयम को सुरक्षित रखा ब्रह्मचर्य से
चरण जहाँ कहीं पड़ते, भूमि को करते धर्ममय,
नहीं कोई इसमें आश्चर्य
वासुपूज्य सी विराटता से सुशोभित आचार्य
होने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

तन-मन-चेतन में पलती संवेग और स्फूर्ति
हर नगर-प्रान्त में फैली आपकी यशोकीर्ति
विमलनाथ सी विमल आकृति
इसका दर्श दिखाने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

एकाग्रता है-विचारों को विराम दें,
निर्विचार होने का साधन
आत्मबल सुदृढ़, अनन्त वीर्यवान का आराधन
अनन्तनाथ सा आनन्द झरना
बहाने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

विशुद्धतम भावों की करते मन-इन्द्रिय भी दासता
निज स्वरूप समझाने वाले शास्ता
धर्मनाथ सी धर्ममय दास्ताँ
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

आन्तरिक-बाह्य रोगों पर योगगुप्ति से विजय
आत्मा-द्रव्य सर्वोत्तम, यह भाषा निश्चय
शान्तिनाथ से शान्ति धारे, कषाय संग्राम में विजय
बनने/बनाने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

स्वयं गुरु-हस्ती के घड़े रत्न
निरन्तर कर रहे मुक्ति-मञ्ज़िल के लिए यत्न
कुन्थुनाथ सा निखरा चेतन,
ऐसी साधना के लिए 'आभार' गुरुदेव!

अद्वितीय योगीश्वर, आपकी छवि निराली है
युगों तक गाई जाएगी,
आपकी गुण-गाथा प्रियकारी है
अरनाथ से जग अलंकार आप अनन्त उपकारी हैं,
अनन्त उपकारों के लिए 'आभार' गुरुदेव!

वाणी है मंगलकारी, प्रवचन कला में दक्ष
कषाय-विषय के मर्दन का चित्रण प्रत्यक्ष
मल्लिनाथ से दृढ़ निश्चय का अक्स
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

महाव्रतों की पालना एवं संरक्षणा गहरी
बहुश्रुत अनमोल, आत्मगुणों के प्रहरी
मुनिसुव्रत से उत्तम मुनि, मुखमण्डल की
उज्ज्वलता सुनहरी
इसका दर्शन दिखाने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

आपकी सौम्यता से स्वतः प्रकृति में शुद्धि
दूरदर्शिता, अति निर्मल बुद्धि
नमिनाथ सी निर्मलता और संसार से उन्मुक्ति
ऐसा रूप बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

अरि (कोई अज्ञानी) निर्बल हो जाते, करते वन्दन
अन्य आचार्य, प्रबुद्धजन आपका करते अभिनन्दन
अरिष्टनेमि सी कान्ति लिए, पीर निकन्दन
ऐसी कृति बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

आप करुणा और अनुकम्पा का भव्य कोष हो
निन्दा-प्रशंसा में समदृष्टि का उद्घोष हो
पार्श्व सी बुद्धि कौशलता, न रोष न दोष हो
मात्र सन्तोष धारण करने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

पलट दिया कषाय वेग को,
धैर्य और आत्मशक्ति से
मैत्री भाव को पुष्ट किया, क्षमा की अभिव्यक्ति से
महावीर सी सहनशक्ति से
कर्म मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

ऐसे चौबीस जिनेश्वर भगवन्तों का दर्श
चौबीस जिनेश्वर के समान आदर्श
चौबीस तीर्थंकरों का आदेश/सन्देश
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

जिनशासन गौरव बन, इतिहास बनाने
गणि गजेन्द्र की गहनता का शंख गुञ्जाने
संघ, सन्त-सतीवृन्द को, श्रावक-श्राविका जन को
साधना में वर्द्धमान बनने की प्रेरणा
करने के लिए 'आभार' गुरुदेव!

दूर देश में होते हुए भी कृपा
विशेष बनाए रखने के लिए
अशान्त मन रूपी तूफान में,
शान्त किनारा बनने के लिए
प्रश्नों का समाधान देने और
बनने के लिए 'आभार' गुरुदेव!
हे गुरुदेव! अबोध का ज्ञान,
भटके हुए का भगवान और संघ के संविधान
बनने के लिए, अनन्त अनन्त 'आभार' गुरुदेव!!

-सुपुत्री डॉ. राजीव जैन, आर. के. पुरम्, कोटा

यही तो है जीवों का परस्पर उपकार

सौ. अनिता किशोर लुंकड़

जीओ और जीने दो का नारा देकर,
प्रभु ने किया जीवों का उद्धार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
एक जीव सिद्ध बना तो, एक ने पाया व्यवहार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
केवल ज्ञान से अरिहन्तों ने, जन-जन का किया उद्धार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
संघ को संगठित करके, आचार्य बने संघ का आधार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
भ्रान्ति मिटाये उपाध्यायजी, पाकर चौदह पूर्वों का सार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
चारित्र आत्माओं ने लिया, सभी जीवों की रक्षा का भार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
गुरु ने दी तिरने की कला, और दिये धर्म संस्कार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
माता-पिता ने जीवन दिया और दिये सुसंस्कार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
शिक्षक ने दिया ज्ञान, और सिखाया जीवन व्यवहार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
परिवार ने दिया प्यार-दुलार,
बुजुर्गों ने दिया अनुभवों का आधार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
सिखाया संघ ने संगठन, और सामाजिक व्यवहार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
लेकर जैनत्व का आधार, समाज ने दिया प्यार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
दानियों ने दिया दान, किया दीनों का उद्धार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
ज्ञानियों ने दिया ज्ञान, भगाया अज्ञान का अन्धकार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
एक-दूसरे को सुख देने में जो माने जीवन का सार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
दु:खियों के प्रति मन में होता, करुणा का सञ्चार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
गुरु कृपा से मन निर्मल बनता, आते उच्च विचार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
कृतज्ञता के भाव हैं आते, अन्तर से जुड़ जाते तार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
षट्द्रव्यों से चलता है संसार,
लोक संस्थान जीवाजीव आधार
यही तो है जीवों का परस्पर उपकार।
दूसरों के आधार से ही, चलता जीवन व्यवहार
अब तो जीवड़ा मान ले, विश्व मैत्री से ही सच्चा सार
जीवन का सच्चा सार, मान लो परस्पर उपकार।

-गेट नं. 74, प्लाट नं. 27-29, कल्पतरु, फ्लेट नं. 102, शान्तिनगर, जलगाँव-425001

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 48
ISSN 2249-2011

अध्यात्म

आत्मा का ध्यान कैसे करें?

डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन

ध्यान-ध्यान हरकोई कहे, ध्यान न जाने कोय।
निज आतम के ज्ञान बिन, ध्यान कहाँ से होय।।

आज ध्यान के क्षेत्र में भी व्यवसाय चल पड़ा है। ध्यान के नाम पर कक्षाएँ शुरू हो गई हैं। लेकिन वास्तव में ध्यान कक्षाओं में नहीं होता। जो कक्षाओं में होता है, वह ध्यानाभ्यास है। कक्षाओं के नियम एवं समयप्रबन्धन आदि में वास्तव में ध्यान नहीं होता है, क्योंकि वे सब विकल्पजाल हैं और ध्यान तो निर्विकल्प होता है।

दूसरी बात है कि कक्षाओं में जो ध्यान कराया जाता है वह वास्तव में परद्रव्य से सम्बन्धित ध्यान होता है, जबकि अध्यात्म के क्षेत्र में ध्यान स्वद्रव्य का होना चाहिए। ध्यानाभ्यास की कक्षाओं में श्वास, शरीर, रंग आदि का ध्यान करने के लिए कहा जाता है और मध्य-मध्य में विभिन्न प्रकार के निर्देश भी दिये जाते हैं, जबकि ध्यान में मग्न व्यक्ति के लिए निर्देश महत्त्वपूर्ण नहीं है, वह तो मग्न होता है। जो निर्देश सुनता है, वह वास्तव में ध्यानमग्न नहीं है।

इस प्रकार यह तो स्पष्ट है कि ध्यान कक्षाओं की परिधि में नहीं किया जा सकता है। कक्षाओं में तो ध्यान का प्रारम्भिक अभ्यास कराया जाता है।

ध्यान के बारे में दूसरा भ्रम यह है कि ध्यान सदा पद्मासन लगाकर किया जाता है, किन्तु आसन आदि शारीरिक क्रियाओं से ध्यान का कोई सम्बन्ध नहीं है। ध्यान आत्मा की एक अवस्था है, इसमें चित्त की एकाग्रता पर बल दिया जाता है, अत: सभी आसनों से निरपेक्ष ध्यान सम्भव है। यद्यपि ध्यान के समय कोई न कोई आसन अवश्य होता है, किन्तु ध्यान उन आसनों में बँधा नहीं है। कुछ आसन यद्यपि हमें जागरूक बनाये रखने में मदद करते हैं, अत: ध्यान की प्रारम्भिक अवस्था में उन आसनों का आश्रय लिया जा सकता है, किन्तु ध्यान उन सबसे भिन्न प्रक्रिया है।

जब भी हम सामायिक आदि करने बैठते हैं तो कुछ न कुछ वाचन, पठन, चिन्तन, मनन, स्मरण आदि का सहारा लेकर ध्यान करने की कोशिश करते हैं। यद्यपि ध्यान की प्रारम्भिक अवस्था में अनेक मन्त्रों, आसनों आदि का सहारा लिया जाता है, किन्तु वास्तव में वे सब एक प्रकार से विकल्पजाल ही हैं। निर्विकल्प आत्मानुभूति में वे सब साधक नहीं हैं, अपितु बाधक ही हैं।

उपर्युक्त विवेचन से हम उन सब आसनों, मन्त्रों आदि का निषेध नहीं कर रहे हैं और न ही किसी प्रकार की आलोचना कर रहे हैं, किन्तु वे सब साधना के दौरान एक सीमा तक ही उचित हैं, तत्पश्चात् उन सबसे दृष्टि हटाकर अन्तरङ्ग शुद्धात्मा के प्रति उपयोग एकाग्र होता है, तभी सच्चा ध्यान होता है।

समस्त जिनागम का सार निजात्मा को जानना है, यदि उसे न जानकर चाहे जो कुछ किया जाये, तो वास्तव में वह सार्थक ध्यान नहीं है। निजात्मा को जानना ही सच्चा ध्यान है और उसी से आत्मकल्याण होता है एवं सच्चा सुख प्राप्त होता है। उसी के ध्यान से सामायिक होती है।

भेदविज्ञान और सामायिक में बहुत बड़ा अन्तर है। भेदविज्ञान में विकल्प होते हैं, क्योंकि वहाँ भेद है। कम से कम दो वस्तुओं में भेद करना है, किन्तु ध्यान में विकल्प नहीं होते, वह तो निर्विकल्प होता है, अत: भेदविज्ञान तो हम यदा-कदा भी कर सकते हैं, किन्तु ध्यान के लिए तो सभी आरम्भादि का त्यागकर एकाग्र होना ही पड़ता है।

कुछ लोग कहते हैं कि आत्मा का ध्यान करने बैठते हैं तो विकल्प तो होते ही हैं, उन्हें कैसे रोकें? और ध्यान में क्या देखें? उनके प्रश्न उचित हैं। ऐसे प्रश्न उत्पन्न होना भी एक प्रकार से आत्मा के प्रति रुचि को ही प्रदर्शित करते हैं। आत्मा का ध्यान न केवल बन्द आँखों से होता है, अपितु खुली आँखों से भी हो सकता है, किन्तु अभ्यास के दौरान बन्द आँखों द्वारा अधिक सुविधा रहती है। जब आत्मध्यान हेतु आँखें बन्द की जाती हैं तो अन्धेरा ही दिखाई देता है, आत्मा तो दिखता नहीं है। कुछ लोगों को बहुत देदीप्यमान प्रकाश का पुञ्ज दिखने की बात आती है। लेकिन वास्तव में अन्धकार और प्रकाश तो पुद्गल की पर्याय हैं। इनको देखा तो समझो परद्रव्य रूप पुद्गल को देखा, आत्मा को नहीं देखा।

तो फिर क्या करना चाहिए? इसके उत्तर में कहा जायेगा कि जो दिखता है, उसे छोड़ो और जो देखने वाला है, उसे देखो। उस अन्धकार अथवा प्रकाश को देखने वाली जो ज्ञानशक्ति है, वही मैं स्वयं हूँ, वही तो निजात्मा है। जिस प्रकार जगत की वस्तुएँ किसी न किसी धातु से बनी होती हैं, उसी प्रकार आत्मा ज्ञानधातु से बना हुआ है, उसका कोई रंग-रूप नहीं है। स्पर्श-आकारादि नहीं है। इस कारण वह अव्याबाध है और यथा शरीर तथा आकार धारण कर लेता है। अन्त में सभी शरीरों से मुक्त होने पर अन्तिम शरीर की अवगाहना के अनुसार दो तिहाई भाग वाला हो जाता है।

ऐसे आत्मा को जानना ज्ञान है और उसे निरन्तर जानते रहना ध्यान है। बिना आत्मा के ज्ञान के ध्यान सम्भव ही नहीं है। जिसका ध्यान करना है, उसका ज्ञान तो अवश्यम्भावी ही है। आत्मा यद्यपि अरूपी है, अमूर्तिक है, जबकि इन्द्रियाँ तो रूपी अथवा मूर्तिक पदार्थों को ही जानती हैं, अत: इन्द्रियों से आत्मा कदापि जानने में नहीं आ सकता। हमारा ज्ञान मतिज्ञान, श्रुतज्ञान रूप है, जो कि केवल मूर्तिक पदार्थों को ही जानता है। अमूर्तिक पदार्थों को जानने में तो एकमात्र केवलज्ञान ही समर्थ है।

अब प्रश्न होता है कि जब आत्मा जानने में ही नहीं आ सकता तो इसमें हमारा क्या दोष है? जब केवलज्ञान होगा तभी हम आत्मा को देख लेंगे। परन्तु भाई! यह कहना तो ऐसा हुआ कि जब तैरना आयेगा तब पानी में उतरेंगे, जबकि पानी में उतरे बिना तैरना आता ही नहीं है। दरअसल आत्मा दिख तो नहीं सकता, किन्तु अनुभव में तो आ ही सकता है। नहीं दिखता है तो कोई चिन्ता की बात नहीं, लेकिन ध्यान के दौरान उसका अनुभव करने का प्रयास अवश्य कीजिए।

कुछ लोग ध्यान के लिए शान्त और एकान्त स्थान खोजकर वहाँ ध्यान करना चाहते हैं और यदि उस स्थान पर कुछ शोर आदि होने लगे तो उन्हें लगता है कि ध्यान में विघ्न हो रहा है, लेकिन वास्तव में आत्मा का स्वभाव जानना है, अत: जब भी कोई शब्दादि होता है तो उसे वह आत्मा जानेगा ही। यदि आप चाहते हैं कि आत्मा उन्हें जाने ही नहीं, तो इसका अर्थ है आपको आत्मा का ज्ञानस्वभाव पसन्द ही नहीं। वास्तव में ज्ञानशक्ति ही ऐसी है, जो स्वयमेव जानती ही है। यदि न जाने तो चिन्ता की बात जरूर है, क्योंकि तब तो आत्मा के अनात्मा अथवा जड़ होने का प्रसङ्ग आयेगा।

आत्मा कहीं भी रहे, वह अपने प्रदेशों में ही रहकर दूर स्थित पदार्थों को अनायास ही जान लेता है और जगत के सभी पदार्थों का भी ऐसा स्वभाव है कि वे बिना कुछ आपत्ति किये आत्मा के जानने में आते हैं। इसके लिए आत्मा को कहीं जाने-आने की जरूरत नहीं है। ऐसी अद्भुत ज्ञानशक्ति का ध्यान करना ही वास्तव में सच्चा ध्यान है। यहाँ बहुत ही संक्षिप्त में आत्मध्यान को प्ररूपित करने का प्रयास किया गया है, जिज्ञासु पाठकों को जिनागमों से इसका गहरा स्वाध्याय करना चाहिए।

-अध्यक्ष, जैन अध्ययन केन्द्र, के. जे. सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ धर्मा स्टडीज, सोमैया विद्याविहार विद्यापीठ, मुम्बई

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 50
ISSN 2249-2011

चिन्तन

अहिंसा है तो जीवन सम्भव है

श्री जयदीप ढड्ढा

बचपन में एक किसान और उसके चार बेटों की कहानी सुनी थी। बेटों में एकता नहीं थी। वे झगड़ते रहते थे। किसान को चिन्ता थी कि ये आपस में यूँ ही लड़ते रहे तो मेहनत और ईमानदारी के बावजूद खेती में पिछड़ जाएँगे। किसान ने उन्हें अपने पास बुलाकर लकड़ियों का एक गट्ठर तोड़ने को कहा। उनमें से कोई भी नहीं तोड़ पाया। फिर एक-एक लकड़ी तोड़ने को दी, जिसे उन्होंने आसानी से तोड़ दिया। किसान ने समझाया-''बच्चों, एकता में ही बल है। मिलजुल कर रहोगे तो तुम्हारे बीच में कोई भी फूट नहीं डाल पाएगा। संग में कार्य करने से खेत में भी पैदावार बढ़ेगी।'' यह एक परिवार की कहानी थी, जो राष्ट्रों पर ही नहीं, पूरे विश्व पर लागू होती है। जब तक परिवारों में शान्ति, सद्भाव, सहिष्णुता और एकता नहीं होगी, परिवार में समृद्धि नहीं आएगी। जब तक देश में एकता नहीं होगी, विकास की गति अवरुद्ध रहेगी। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सभी धरातलों पर हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। यही पूरे विश्व का परिदृश्य है कि आन्तरिक और बाहरी कलह से, हिंसा और असहिष्णुता से पूरी सृष्टि पीड़ित है। आज लोग एक-दूसरे के लिए ही असहिष्णु नहीं हैं, बल्कि पशु-पक्षी और प्रकृति के सभी घटकों के लिए उनमें हिंसा है। सहिष्णुता और अहिंसा केवल समृद्धि के लिए ही जरूरी नहीं है, जीवन को बचाने के लिए भी जरूरी है। जीवन ही नहीं होगा तो समृद्धि का क्या करेंगे?

प्रकृति को बचाए रखने के लिए जब तक पूरा विश्व मिलकर नहीं सोचेगा, हम कोविड जैसी बीमारियों से उबर नहीं पाएँगे। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख टेडरोस एडहनॉम ने पिछले दिनों कहा कि लोग इस भ्रम में हैं कि कोरोना वायरस पर हम काबू पा चुके हैं, पर जिस तरह से विश्व भर में नए मामले सामने आ रहे हैं, उससे कोविड महामारी का पूरी तरह से चले जाना अभी दूर की बात है। असम्भव-सा ही है। बहुत सावचेत रहने की ज़रूरत है वरना यह हमें पहले की तरह ही गिरफ्त में ले लेगी।

टाइम्स ऑफ इंडिया (24 सितम्बर) ने सरकारी आँकड़ों का हवाला देते हुए लिखा है कि अकेले भारत में 24 घण्टे में कोविड-19 के 4912 नए मामले सामने आए हैं और 38 लोगों की मौत हो गई है।

जीवन को बचाने के लिए शान्ति, सद्भाव, सहिष्णुता और अहिंसा आवश्यक है। वर्तमान समय में धर्म और जाति के नाम पर हो रहे रक्त-रञ्जित दंगे देश की एकता को कमज़ोर कर रहे हैं। जबकि किसी समय धार्मिक सहिष्णुता देश को बाँधे रखने की मजबूत कड़ी थी। आज देशवासियों को इससे भी आगे समझने की ज़रूरत है। सहिष्णुता ही देश को बाँधे रखने की मजबूत कड़ी थी। आज देशवासियों को इससे भी आगे समझने की ज़रूरत है। सहिष्णुता की जरूरत राष्ट्र के उत्थान के लिए ही नहीं, पूरे विश्व को बचाने के लिए जरूरी है। ज़रूरत है सभी स्तरों पर आपसी संवाद, एक-दूसरे का सम्मान करने और सहिष्णुता रखने की एवं प्रकृति के सभी अंगों को बचाने की।

एकता में बल है। सब मिलजुल कर रहते हैं, तो हमारी ताकत बढ़ जाती हैं। काम करने की क्षमताएँ कई गुना बढ़ जाती हैं। एकता और अहिंसा राष्ट्र की सफलता का सूत्र है। पूरी सृष्टि को बचाने का मन्त्र है। अहिंसा है तो जीवन सम्भव है।

-ढड्ढा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 51
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (22)

(मोहनीय कर्म)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

समाधान–जो कर्म आत्मा को मोहित करे, सम्मोहित करे, उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। दूसरे शब्दों में जो कर्म आत्मा को अपने स्वरूप तथा हित-अहित को पहचानने, परखने तथा तदनुरूप आचरण करने में बाधा उत्पन्न करे, उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। इस कर्म को मदिरा के उदाहरण से समझाया गया है-जिस प्रकार से मदिरापान करने वाले व्यक्ति को अपना-पराया, हित-अहित आदि का विवेक नहीं रहता है, उसी प्रकार मोहनीय कर्म से ग्रसित जीव की बुद्धि एवं आचरण भी विपरीत होने लगते हैं।

जिज्ञासा– मोहनीय कर्म के प्रमुख भेद कौन-कौनसे हैं?

समाधान–मोहनीय कर्म के प्रमुख दो भेद बतलाये हैं- 1. दर्शन मोहनीय और 2. चारित्र मोहनीय। दर्शन शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, किन्तु यहाँ पर दर्शन शब्द का अर्थ श्रद्धा, विश्वास, आस्था, दृष्टिकोण, मान्यता आदि समझना चाहिए। चारित्र शब्द का अर्थ है-जो सावद्य योगों से विरति दिलाये, आत्मा को कर्मों से रिक्त बनाये, संवर-निर्जरा की साधना में जीव को आगे बढ़ाये, उसे चारित्र कहते हैं।

जिज्ञासा– दर्शन मोहनीय के कौन-कौनसे भेद होते हैं?

समाधान–दर्शन मोहनीय के तीन भेद होते हैं-1. मिथ्यात्व मोहनीय, 2. मिश्र मोहनीय तथा 3. सम्यक्त्व मोहनीय।

दर्शन मोहनीय कर्म आत्मा के श्रद्धा गुण को प्रभावित करता है। मिथ्यात्व मोहनीय से विपरीत श्रद्धान, मिश्र मोहनीय से मिश्रित श्रद्धान तथा समकित मोहनीय से काफी कुछ अंशों में सम्यक् श्रद्धान जीव को प्राप्त होता है।

जिज्ञासा– मिथ्यात्व मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

समाधान–जिस कर्म के उदय से जीव को देव, गुरु, धर्म तथा अपनी आत्मा, इनका सही श्रद्धान नहीं हो सके, विपरीत श्रद्धान हो, उस कर्म को मिथ्यात्व मोहनीय कर्म कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिन कर्म दलिकों में मिथ्यात्व के परिणाम लाने की विकारक, घातक शक्ति है, उन अशुद्ध कर्म पुद्गलों को उदय में लाकर भोगना मिथ्यात्व मोहनीय कर्म कहलाता है।

जिज्ञासा– प्रवृत्ति की अपेक्षा मिथ्यात्व के कौन-कौनसे भेद बतलाये हैं?

समाधान–प्रवृत्ति की अपेक्षा मिथ्यात्व के चार भेद बतलाये हैं-1.प्ररूपणा मिथ्यात्व, 2. प्रवर्तन मिथ्यात्व, 3. परिणाम मिथ्यात्व और 4. प्रदेश मिथ्यात्व।

तीर्थंकर भगवन्तों के उपदेश, सिद्धान्त, सूत्र, आगम एवं आज्ञा के विपरीत/विरुद्ध उपदेश करना, प्रवचन करना, चर्चा-वार्त्ता करना, प्ररूपणा मिथ्यात्व कहलाता है।

तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी, उनके उपदेश एवं आज्ञा के विपरीत आचरण करना, व्यवहार करना, प्रवृत्ति करना, प्रवर्तन मिथ्यात्व कहलाता है।

तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी एवं उनकी आज्ञा तथा निदेर्शों में सम्यक् श्रद्धा नहीं रखना, कुदेवादि में श्रद्धा-आस्था के भाव रखना, परिणाम मिथ्यात्व कहलाता है।

मिथ्यात्व मोहनीय के कर्म दलिकों का आत्मा के साथ सम्बन्ध बना रहना, उन दलिकों को उदय में लाकर भोगना, प्रदेश मिथ्यात्व कहलाता है।

जिज्ञासा– जीवों की अपेक्षा मिथ्यात्व के कितने भेद बताये हैं?

समाधान– जीवों की अपेक्षा मिथ्यात्व के दो भेद हैं–1. व्यक्त मिथ्यात्व और 2. अव्यक्त मिथ्यात्व।

व्यवहार राशि (जीव के 563 भेद) में स्थित जीवों का मिथ्यात्व किसी अपेक्षा से व्यक्त मिथ्यात्व तथा अव्यवहार राशि (सूक्ष्म और साधारण वनस्पति) में स्थित जीवों का मिथ्यात्व अव्यक्त मिथ्यात्व समझा जा सकता है।

जिज्ञासा– अभिग्रह आदि की अपेक्षा से मिथ्यात्व के कौन-कौन से भेद बतलाये हैं?

समाधान– अभिग्रह आदि की अपेक्षा से मिथ्यात्व के 5 भेद बतलाये हैं–1. आभिग्रहिक मिथ्यात्व, 2. अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व, 3. सांशयिक मिथ्यात्व, 4. आभिनिवेशिक मिथ्यात्व और 5. अनाभोगिक मिथ्यात्व।

जिज्ञासा– आभिग्रहिक आदि भेदों का संक्षिप्त स्वरूप बतलाइए?

समाधान– कदाग्रह-दुराग्रह-हठाग्रह आदि के कारण मात्र स्वयं के धर्म को सत्य मानना तथा अन्य धर्मों को बिना जाँचे, बिना परखे असत्य मानना, आभिग्रहिक मिथ्यात्व कहलाता है।

लोक में प्रचलित सभी धर्मों एवं उनकी मान्यताओं को एक समान मानना, उनमें विशेष अन्तर नहीं समझ पाना, अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व कहलाता है।

जिनेश्वर भगवन्तों की वाणी, उनका धर्म, उनके सिद्धान्त पूर्णत: सही हैं अथवा नहीं ? सूक्ष्म, गूढ़ एवं अरूपी तत्त्वों के बारे में संशय बना रहना, सांशयिक मिथ्यात्व कहलाता है।

स्वयं की कमी, झूठ आदि को जानते हुए भी, अपनी मान्यताओं को पकड़े रखना तथा उसे सही प्रमाणित करने की चेष्टा करना, आभिनिवेशिक मिथ्यात्व कहलाता है। यह मिथ्यात्व बुद्धिशाली, प्रतिभाशाली लोगों में अधिक मिलता है।

विचार मूढ़ता, ज्ञान की कमी, समझ की कमी के कारण जीव-अजीव, पुण्य-पाप, आस्रव, संवर-निर्जरा, बन्ध-मोक्ष आदि का सही ज्ञान नहीं होना, वस्तु तत्त्व को सम्यक् रूप से नहीं जान पाना, अनाभोगिक मिथ्यात्व कहलाता है।

जिज्ञासा– स्थानाङ्गसूत्र के दसवें ठाणे में मिथ्यात्व के कौन-कौनसे भेद बतलाये गये हैं?

समाधान– स्थानाङ्गसूत्र के दसवें ठाणे में मिथ्यात्व के दस भेद इस प्रकार से बतलाये हैं–

1. धर्म को अधर्म श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (धर्म सम्बन्धी)
2. अधर्म को धर्म श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (धर्म सम्बन्धी)
3. साधु को असाधु श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (गुरु सम्बन्धी)
4. असाधु को साधु श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (गुरु सम्बन्धी)
5. मुक्त को अमुक्त श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (देव सम्बन्धी)
6. अमुक्त को मुक्त श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (देव सम्बन्धी)
7. जीव को अजीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (आत्मा सम्बन्धी)
8. अजीव को जीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (आत्मा सम्बन्धी)
9. सुमार्ग को कुमार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (मार्ग सम्बन्धी)
10. कुमार्ग को सुमार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व। (मार्ग सम्बन्धी)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

जब आत्मा में सम्यग्ज्ञान की सहस्र-सहस्र किरणें फैलती हैं और उस आलोक से जीवन परिपूर्ण हो जाता है, तब काम, क्रोध और लोभ का सघन अन्धकार टिक ही नहीं सकता।

-आचार्यश्री हस्ती

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 53
ISSN 2249-2011

प्रासङ्गिक-चिन्तन

धोवन धाम (2)

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

(क्रमशः गतांक का शेष)

राष्ट्रीय अध्यक्ष :: पञ्चपरमेष्ठी को नमन और आप सभी को सादर जय जिनेन्द्र ! सबसे पहले मैं यह कहना चाहूँगा कि यदि आज मैं इस धोवन धाम के शुभारम्भ समारोह में उपस्थित नहीं होता ...तो अवश्य ही जीवन में एक स्वर्णिम अवसर को खो देता। इस शुभारम्भ में ...देश भर से पधारे हुए सभी क्षेत्रों के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय प्रधान तथा जैन समाज के लगभग सभी सम्प्रदायों के प्रतिनिधिगण सहित ...सभी श्रावक श्राविकाओं का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। मैंने पिछले सप्ताह संघ समाज के सभी वरिष्ठ पदाधिकारीगण के साथ मीटिंग करके ...धोवन धाम की रूपरेखा को जाना एवं समझा। फिर कल शाम को सम्पन्न हुई बैठक में इस महत्त्वपूर्ण योजना को रखा गया एवं आप सभी को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा ...कि इस योजना को सर्वसम्मति से पारित किया गया है। समय की मर्यादा को देखते हुए ...मैं संक्षिप्त में धोवन धाम की भूमिका के बारे में कहना चाहूँगा।

पानी की वास्तविक अहमियत क्या है ...वह रेगिस्तान में एक प्यासे मुसाफ़िर से बेहतर कौन बता सकेगा भला? हम सभी ने कभी न कभी जीवन में उस प्यास को महसूस किया है। यदि पानी से प्यास बुझाना श्रेष्ठ है ...तो धोवन पानी से प्यास बुझाना सर्वश्रेष्ठ है ...और यह हमारा उद्देश्य है कि हम धोवन धाम पर आने वाले हर इंसान की प्यास बुझाये ...पर कच्चे पानी से नहीं ..बल्कि धोवन पानी से। इसके साथ ही सोने पर सुहागे के समान ...यदि धोवन धाम पर सन्त-सती को निर्दोष धोवन पानी बहराने का लाभ भी सहज रूप से मिले ...तो हम उस अलौकिक लाभ से भी वञ्चित क्यों रहें? सबसे पहले आज हम सभी यह संकल्प करें कि ...हमारे घरों में साल के 365 ही दिन धोवन पानी ही पिया जाए और पिलाया जाए ...यानी धोवन के उपयोग से स्वयं के जीवन को विराधना से बचाया जाए और सुपात्र दान का महान लाभ भी कमाया जाए। ज्ञानीजन ने नौ प्रकार के जो पुण्य बताये हैं ...उनमें पान-पुण्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जल जीवन है और प्यासे व्यक्ति को पानी पिलाकर नवजीवन प्रदान करना भी धर्म है। इस धोवन धाम को साक्षात् देखकर सिर्फ मुझे ही नहीं ...बल्कि पधारे हुए **सभी लोगों को यह अवश्य लग रहा होगा कि ऐसे धोवन धाम देश के अनेक हिस्सों में ...कम से कम हर दस किलोमीटर की दूरी में बनने चाहिए।**

आज समाज की वास्तविक स्थिति हम सभी से छुपी हुई नहीं है ....अनेक जैन परिवार आर्थिक तंगी से गुजर रहे हैं। हमने अनेक बार सन्त महापुरुषों के प्रवचनों में भी सुना है कि ...छोटे-छोटे ग्रामीण परिवारों में ...कुछ साधर्मिक परिवार ऐसे भी है जिनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त कमजोर है ...उन्हें आर्थिक सहायता की अपेक्षा भी है, किन्तु ...संकोचवश वें अपनी परिस्थिति किसी को बता भी नहीं पा रहेहैं। धोवन धाम पर प्रबन्धन सेवाओं के लिए हम ऐसे अनेकों साधर्मिक परिवारों को रोजगार दे सकते हैं। वे साधर्मिक परिवार प्याऊ पर धोवन जल पिलाने के कार्य तो करें ही साथ ही ...विहार करते हुए सन्त-सती मण्डल के पधारने पर यदि उनको स्थान की आवश्यकता हो तो उसकी उचित्त व्यवस्था करें। एक धोवन धाम से लगभग 10 किलोमीटर आगे वाले धोवन धाम तक अथवा नजदीकी क्षेत्र तक विहार सेवा का लाभ लेते हुए ...सन्त-सती मण्डल को सुरक्षित रूप से उनके अपेक्षित स्थान तक पहुँचने में सहयोगी बनें।

इसके साथ ही मैं अति महत्त्वपूर्ण बात ...कुछ

वेदना के साथ ...यहाँ रखना चाहूँगा कि...हमारे जैन समाज की अनेक श्रेष्ठ योजनाएँ सम्प्रदायवाद के कारण शुरू ही नहीं हो पाई ...तथा अनेक जनहितकारी योजनाएँ शुरू तो हुई ...लेकिन उनमें से कुछ सम्प्रदायवाद के जहरीले धुएँ में जीवन्त ही नहीं रह पाई। गुरुदेव ने अनन्त कृपा बरसाते हुए हम सभी को गुरु एक सेवा अनेक का ब्रह्म वाक्य प्रदान किया है एवं यह समझाया है कि परेशानी सम्प्रदाय में नहीं बल्कि सम्प्रदायवाद में है ...क्योंकि सम्प्रदाय कोई भेद नहीं बल्कि व्यवस्था है। यह सर्वविदित ही है कि हमारे महान् जिनशासन का हर सम्प्रदाय धोवन पानी के अमूल्य महत्त्व को पूर्ण स्वीकार करता है। धोवन धाम सम्प्रदायवाद की काली परछाई से कभी ग्रस्त नहीं होगा तथा सर्वजनहिताय को पुष्ट करेगा। इसलिए धोवन धाम पर हम जन-जन की प्यास बुझाने में भी श्रेष्ठ माध्यम तो बन ही सकते हैं ...साथ ही सहज रूप में वहाँ पधारने वाले जैन समाज के सभी सम्प्रदायों के साधु-साध्वीगण को निर्दोष धोवन-पानी बहराकर ...उनके संयम-जीवन में उत्तम सहयोगी बनने का अद्वितीय लाभ भी अवश्य कमा सकते हैं।

पहली बार जब मैंने इस धोवन धाम की योजना के बारे में सुना तब ...मेरे मन में भी आया कि यह सब कैसे सम्भव होगा ...लेकिन आज हम सब अपनी आँखों से देख पा रहे हैं ...कि इस भयंकर गर्मी में कितने ही प्यासे राहगीर ...इस प्याऊ में धोवन पानी से तृप्त होकर ...आशीर्वादों की बौछार कर रहे हैं। इस हाईवे पर सफ़र करते कितने ही लोग ...अपनी गाड़ियों से उतरकर ...धोवन-पानी से अपनी प्यास बुझाकर ...अपार सन्तुष्टि के साथ मुस्कुराते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रथम धोवन धाम में श्रावकजी, माँजी एवं भाई मोहन को अन्तर्मन से आभार देता हूँ कि ....इन सभी के माध्यम से संघ समाज को एक नई दिशा प्रदान करती एक सम्यक् क्रान्ति वाली योजना मिली। अनेक अपेक्षाओं से सामूहिक मन्थन करने के पश्चात् इस योजना के मुख्य प्रस्तावित बिंदु मैं आप सभी के सामने निवेदन कर रहा हूँ-

- भगवान महावीर धोवन धाम फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में संयोजित ...इस योजना का नाम रहेगा **भगवान महावीर धोवन धाम** ...जिसके अन्तर्गत देश भर के चयनित क्षेत्रों में धोवन धाम का निर्माण एवं शुभारम्भ किया जायेगा एवं प्रत्येक धोवन धाम का सञ्चालन फाउण्डेशन की क्षेत्रीय कमेटी करेगी।
- प्रत्येक धोवन धाम में मुख्य रूप से मूलभूत सुविधाओं से युक्त चार कमरों का निर्माण होगा ...जिसमें मुख्य बरामदे में धोवन पानी की प्याऊँ, दो कमरे प्रबन्धक परिवार के उपयोग के लिए एवं दो कमरे साधर्मिक विश्राम कक्ष के रूप में उपयोग किये जायेंगे। कोई भी जैन परिवार यात्रा के समय कोई आकस्मिक दुर्घटना या अस्वस्थता जैसी परिस्थिति अथवा किसी भी तरह की इमरजेंसी होने पर ...क्षेत्रीय कमेटी की अनुमति से नजदीकी धोवन धाम में बने साधर्मिक विश्राम कक्ष का सदुपयोग कर सकेगा।
- इस प्रथम धोवन धाम के निर्माता इन श्रावकजी से जब विस्तृत जानकारी पूछी गयी तब उन्होंने बताया कि इस धोवन धाम में प्रयुक्त 5000 वर्ग फीट जमीन का बाजार भाव और चार कमरों के निर्माण का कुल खर्चा लगभग तीन लाख रुपये का हुआ एवं हर महीने अनुमानित 12 से 15 हजार रुपए इस को सञ्चालित करने पर खर्च होंगे। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि ....इस राशि में इतने विराट् पुण्य की कमाई कोई घाटे का सौदा तो कदापि नहीं है। आगे बनने वाले धोवन धाम के निर्माण हेतु ...कोई भी पुण्यवान अपनी रुचि अनुसार जमीन देकर अथवा निर्माण कार्य में आर्थिक सहयोग एवं अन्य सेवाएँ प्रदान करके भी निर्जरा की अमूल्य कमाई कर सकता है।
- धोवन धाम सिर्फ कुछ वर्षों अथवा कुछ पीढ़ियों की योजना न रहकर ...युग-युग तक जलप्रदाता

बनकर जीवनप्रदाता बनी रहे ...इसलिए अत्यन्त आवश्यक है संघ समाज के सभी सदस्यगण सम्प्रदायवाद से परे हटकर ...आगे आकर अपने सामर्थ्य अनुसार धोवन धाम के निर्माण में सहयोगी तो बने ही ...साथ ही कम से कम एक अथवा एक से अधिक धोवन धाम को गोद लेकर उसके संरक्षण की जिम्मदारी को भी वहन करे।

- हर धोवन धाम की प्याऊँ के ऊपर मार्बल की श्वेत पट्टी पर **भगवान महावीर धोवन धाम** अंकित किया जायेगा। साइड की दीवारों पर **णमो पंच परमेष्ठी, अहिंसा परमो धर्म, जय जिनेन्द्र, अतिथि देवो भव:, जल ही जीवन है, जीओ और जीने दो** इत्यादि के स्लोगन पेंट किये जायेंगे। साथ ही निर्माण सहयोगी परिवार एवं गोद लेने वाले परिवार की नामावली एवं क्षेत्रीय कमेटी के सम्पर्क सूत्र की जानकारी भी वहाँ अंकित होगी।
- प्रत्येक धोवन धाम में प्रतिदिन यानी 365 दिन ...प्रबन्धक परिवार द्वारा पूर्ण विधि सहित धोवन-पानी बनाया जायेगा। कुछ मात्रा में गरम पानी भी बनेगा ...जिससे किसी भी रोगी अथवा जरूरतमन्द व्यक्ति को भी लाभ मिल सके।
- साधारण प्याऊँ में भी हर प्यासे इंसान को ...उसका धर्म या जाति पूछकर पानी नहीं पिलाया जाता ...क्योंकि महत्त्व प्यास का है जाति का नहीं। तो यह तो धोवन धाम है ...यहाँ प्रत्येक आने वाले को जय जिनेन्द्र बोलकर नमस्कार पुण्य का एवं आदर सहित धोवन-पानी पिलाकर पान-पुण्य का सञ्चय किया जायेगा। हमारे शासननायक भगवान महावीर के कोई भी सम्प्रदाय के सन्त-सती के धोवन धाम में पधारने पर ...सही विधिपूर्वक एवं पूर्ण आदर सहित उनको धोवन पानी बहराया जायेगा। साथ ही किसी भी पंथ को मानने वाले ...कोई भी त्यागी अथवा संन्यासी हो अथवा साधारण जन हो या स्कूल के विधार्थीगण ...धोवन पानी पिलाकर सभी की प्यास को बुझाने का पूर्ण पुरुषार्थ किया जायेगा।
- प्रत्येक धोवन धाम के प्रबन्धन हेतु एक परिवार को नियुक्त किया जायेगा ...जिसमें प्राथमिकता साधर्मिक परिवार की होगी एवं विशेष स्थिति में सेवाभावी शुद्ध शाकाहारी परिवार को भी नियुक्त किया जा सकता है।
- उस प्रबन्धक परिवार के मुख्य सदस्य को प्रत्येक महीने वाज़िब तनख़्वाह दी जाएगी तथा आवश्यकता होने पर उस परिवार के बच्चों की स्कूली शिक्षा की प्रायोजित व्यवस्था भी स्थानीय स्कूल में की जाएगी। उस परिवार के प्रमुख कर्त्तव्यों में ... सभी को धोवन-पानी पिलाना एवं विहार करते हुए धोवन धाम पधारने वाले सन्त-सती मण्डल की सभी तरह से निर्दोष सेवा करना ...जैसे अनेक कार्य सम्मिल्लित होंगे। क्षेत्रीय कमेटी के निर्देशानुसार अगले धोवन धाम तक अथवा अगले क्षेत्र तक विहार सेवा की जिम्मेदारी भी प्रबन्धक का कार्यक्षेत्र होगी। कदाचित् विहार करते समय ...कोई दुर्घटनावश अथवा स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से ....सन्त-सतीवृन्द को स्थान की आवश्यकता होने पर ...उपयुक्त स्थान दिलाने की जिम्मेदारी भी यह परिवार सहर्ष निभाएगा।
- धोवन धाम में धोवन अथवा गरम पानी पूर्णतया नि:शुल्क पिलाया जायेगा। यदि राहगीर अपनी स्वेच्छा से कुछ भी अनुदान करना चाहे ...तो वहाँ रखी जीवदया की पेटी में कर सकता है। क्षेत्रीय कमेटी द्वारा जीवदया की इस राशि को हर महीने के अंत में ...पक्षियों के दाने-पानी की व्यवस्था ...पशुओं के चारे इत्यादि की व्यवस्थाओं जैसे सद्कार्यों में सदुपयोग किया जायेगा।
- कोई भी व्यक्ति अपने घर-परिवार में कोई भी मंगल प्रसङ्गों के उपलक्ष्य में या श्रदाञ्जलि अथवा पुण्य-स्मृति दिवस इत्यादि पर ...अपनी स्वेच्छा से

सहयोग राशि धोवन धाम की क्षेत्रीय कमेटी को प्रदान कर सकता है। छोटी से छोटी सहयोग राशि को भी पूर्ण सम्मान के साथ स्वीकार किया जायेगा ...चाहे कोई एक रुपया देवे या एक करोड़ ...हरेक की भावनाओं का पूर्ण मान रखा जायेगा।

- धोवन धाम पर पानी पिलाकर ...हम प्यासे इंसान की प्यास बुझाने में जितने सहयोगी बनेंगे उससे अधिक महत्त्वपूर्ण सोच यह है कि हरेक प्यासा इंसान यहाँ पानी ग्रहण करके हमारे पुण्य के बन्ध में निमित्त बनकर हम पर उपकार कर रहा है ...यदि हम इस वाक्य को स्थायी रूप से हमारे दृष्टिकोण में जमा लेंगे ...तो कभी भी किये हुए सद्कार्य का अहंकार नहीं होगा ...बल्कि अनेक सद्कार्यों को और भी अधिक समर्पण और पूर्ण उत्साह से करने का मानस बनेगा।
- और एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात यह है ...कि संसार में निरन्तर बढ़ती गर्मी और पीने योग्य पानी की निरन्तर हो रही कमी ...जैसी विकट परिस्थितियों के बीच ...समय की अनिवार्य माँग है यह धोवन धाम योजना ...जो अवश्य ही एक मील का पत्थर साबित होगी। मैं जानता हूँ कि ...इस राष्ट्रव्यापी योजना को सही तरीके से सञ्चालित करना आसान नहीं होगा ...लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि यह असम्भव भी नहीं होगा ! हमें बस हरेक क्षेत्र से कम से कम एक ऐसे शेर को जगाना होगा ...जो अपने अपने क्षेत्र में धोवन धाम की सफल शुरुआत कर सकें। जिसमें जैनत्व के साथ शेरत्व होगा वो स्वयमेव जुड़ जायेगा ...क्योंकि ऐसे शेर किसी मनुहार की प्रतीक्षा नहीं करते ...बल्कि स्वयं आगे होकर मजबूत इरादों के साथ ऐसी जिम्मेदारियों को अपने सक्षम कन्धों पर स्थान देकर ...सुनहरे इतिहास का निर्माण करते हैं। हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि .... इस योजना के लिए सिर्फ तन-मन-धन के दान के अलावा जीवनदान एवं समयदान देने वाले रत्नों ...की नितान्त आवश्यकता होगी। हमें संघ-समाज से ऐसे जीवनदानी और समयदानी रत्नों को तलाश कर ...उनकी प्रतिभाओं को तराश कर ...उनकी उर्जा और समर्पण का सम्यक उपयोग धोवन धाम जैसी अमूल्य योजनाओं में करना है।

अन्त में इस बात के साथ कि ...पुनः पुनः मैं अपने आप को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हूँ कि इस स्वर्णिम योजना से जुड़ने का मुझे अवसर मिला एवं इस मंगल शुभारम्भ में ...मैं और मेरे परिवार ने अलग-अलग क्षेत्रों में कुल 21 धोवन धाम का निर्माण करके उनकों गोद लेने का निर्णय किया है।

हर्ष हर्ष ! जय जय ! पूरी सभा एक साथ पूर्ण उत्साह के साथ यह उदघोष कर रही है।

अभी अभी मुझे बताया गया है कि गाँव के सरपंच श्री जगदीशजी अपने साथीगण के साथ सभा में अभी पधारे हैं मैं उन सभी का भी हार्दिक स्वागत करता हूँ। आप सभी के उत्साह को देखकर मैं अत्यन्त अभिभूत हूँ और लग रहा है कि आप सभी भी धोवन धाम योजना का हिस्सा बनना चाहते हैं। मैं आप सभी से यह विनती करूँगा कि अपने-अपने क्षेत्र में धोवन धाम की विस्तृत रुपरेखा तैयार करे...इसमें किसी भी तरह की जानकारी अथवा सहायता के लिए हर सम्भव सहयोग करना मैं अपना सौभाग्य समझूँगा। धोवन धाम की यह पावन योजना निरन्तर प्रगतिशील रहते हुए ...हम सभी के जीवन में निर्जरा का निमित्त बनेगी ...ऐसी मंगल भावना भाते हुए ...मैं अपने वक्तव्य को यही विराम देता हूँ एवं आप सभी श्रोताओं से यह भी विनम्र निवेदन करता हूँ कि ...इस योजना से सम्बन्धित किसी भी तरह का सुझाव अथवा पहल हो तो अपनी बात अवश्य रखें। जय जिनेन्द्र ...जय महावीर !

सभा :: हर्ष हर्ष ! जय जय ! ..... हर्ष हर्ष ! जय जय !.... हर्ष हर्ष ! जय जय !

राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रभावशाली उदबोधन के बाद देखा मैंने ...पूरी सभा में एक उत्साह की लहर व्याप्त हो गई है ...और तभी देश के नामी बिल्डर चन्द्रप्रकाशजी

अपनी जगह पर खड़े हुए और उन्होंने अत्यन्त भावुकता भरे शब्दों में कहा कि मैं धोवन धाम की सुन्दर योजना से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ ...चूँकि हम लोग पचास वर्षों से कंस्ट्रक्शन लाइन में है और देश भर में हमारे अनेकों प्रोजेक्ट चल ही रहे हैं ...हार्दिक प्रसन्नता के साथ मैं यह एलान करता हूँ कि देश भर में जितने भी धोवन धाम बनेंगे ...उन सब में सीमेंट, मिट्टी, ईंट इत्यादि मुख्य निर्माण सामग्री की पूरी सप्लाई ...हमारे ग्रुप की तरफ से पूर्ण नि:शुल्क की जाएगी। माननीय अध्यक्ष महोदय से ...बस मैं इतना सा निवेदन करता हूँ कि यह योजना कभी रुके नहीं ...किसी भी तरह की दिक्कत भी अगर आये तो आप मुझ सेवक को याद कर ले ...ऐसी संघसेवा के लिए मैं हमेशा तत्पर भी रहूँगा और समर्पित भी।

हर्ष हर्ष ...जय जय ! की ध्वनि से सभा गूञ्ज उठी। राष्ट्रीय अध्यक्ष के चेहरे पर छाई अपार प्रसन्नता को हर कोई देख पा रहा है।

विनोदजी (मार्बल वाले) :: हमारे मित्र चन्द्रप्रकाशजी की भावनाओं की खूब अनुमोदना करते हुए ...मैं यह घोषणा करता हूँ कि सभी धोवन धाम में लगने वाले मार्बल, ग्रेनाइट, टाइल्स अथवा किसी भी तरह के पत्थर को नि:शुल्क भिजवाने की जिम्मेदारी मेरी

मुकेशजी :: प्रत्येक धोवन धाम में ग्यारह हजार की सहयोग राशि हमारे परिवार की ओर से

निहाल जी :: हमारी लाड़ली पौत्री नायरा के जन्म के उपलक्ष्य में पाँच धोवन धाम का निर्माण हमारे परिवार की तरफ से।

अनिताजी :: क्षेत्रीय श्राविका मण्डल की तरफ से चार धोवन धाम को गोद लेने की जिम्मेदारी लेते हैं।

सुभाष जी :: हमारे दादाजी की पुण्य स्मृति में दो धोवन धाम का निर्माण हमारे परिवार की तरफ से।

लाडकँवर बाईजी : मेरी पौत्री के दीक्षा अङ्गीकार करने की ख़ुशी में हरेक धोवन धाम में एक-एक हजार की सहयोग राशि मेरी ओर से।

राजेशजी :: माताजी के 11 दिवसीय संथारा की पावन स्मृति में 11 धोवन धाम का निर्माण हमारी ओर से।

हरिकिशन जी :: मैं आदरणीय अध्यक्ष महोदय से नम्र निवेदन करूँगा कि मैं जैन समाज से नहीं हूँ ...लेकिन इतनी पुण्यदायी योजना से जुड़े बिना नहीं रह सकूँगा ...इसलिए हमारे गौशाला ट्रस्ट की ओर से पाँच धोवन धाम का निर्माण और सात धोवन धाम को गोद लेने की स्वीकृति प्रदान करें...और यह मेरा 10 साल का बेटा गोपाल भी मेरे साथ है और उसकी भावना बनी है कि उसकी गुल्लक के 510 रुपए भी धोवन धाम में स्वीकार करें।

अध्यक्ष महोदय की मुस्कराहट ही मौन स्वीकृति बन गई ....सभा में प्रत्येक सदस्य भी बिना मुस्कुराए नहीं रह सका ...और ....हर्ष हर्ष ! जय जय ! से माहौल अत्यन्त हर्षमय बन गया।

सिद्धार्थजी :: मेरे छोटे भाई के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में एक धोवन धाम का निर्माण हमारी ओर से।

रक्षिताजी :: क्षेत्रीय युवती मण्डल की तरफ से 3 धोवन धाम को गोद लेने की स्वीकृति है।

ललितजी :: नेशनल हाईवे पर धोवन धाम के लिए पाँच-पाँच हजार वर्ग फीट की 31 जमीनें हमारी कम्पनी की तरफ से।

डिम्पलजी :: मेरे पूज्य सासूजी के वर्षीतप के उपलक्ष्य में दो धोवन धाम का निर्माण।

नवरतनजी :: शादी की पच्चीसवीं सालगिरह की उपलक्ष्य में पच्चीस धोवन धाम का निर्माण हमारी ओर से।

कविता जी :: मेरी बहूरानी के मासखमण तप के उपलक्ष्य में तीन धोवन धाम के निर्माण और गोद लेने की राशि हमारे परिवार से।

लोकेशजी :: 21 धोवन धाम के निर्माण में लगने वाले इलेक्ट्रिक तार और बिजली के सामान हमारी कम्पनी की तरफ़ से।

विपुलजी :: बाल संस्कार केन्द्र की तरफ से एक धोवन धाम का निर्माण।

फिर तो अनेक लोग ...एक-एक करके उत्साहपूर्वक अनेक तरह के छोटे-बड़े सहयोग की

घोषणाएँ करने लगे।

जगदीशजी सरपंच :: सभी को जय जिनेन्द्र करता हूँ सा ...यह मेरे और मेरे गाँव वालों के लिए अत्यन्त ख़ुशी का विषय है कि इस ऐतिहासिक धोवन धाम की शुरुआत हमारे गाँव से हुई। इतने बड़े पुण्य के काम की शुरुआत करने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ ...साथ ही मैं आप सभी को यह विश्वास दिलाता हूँ कि इस धोवन धाम योजना में पूरा गाँव मिलकर सहयोग करेगा ...और हमारे गाँव में पधारने वाले सभी साधु-साध्वियों की भगवान तुल्य सेवा की जाएगी सा।

रिखबचंदजी :: मैं करीब 30 वर्षों से गाँव-गाँव घूम-घूम कर जरूरतमन्द जैन परिवारों से मिलकर ... उनकी परिस्थितियों को समझ कर ...उनके लिए आवश्यक राशन पानी अथवा वस्त्र इत्यादि की व्यवस्था ...दानवीर भामाशाहों के माध्यम से करवाता हूँ ...और ऐसे सैकड़ों सेवाभावी जैन परिवार मेरे ध्यान में है ...जिन्हें रोजगार अथवा रहने योग्य छत की नितान्त आवश्यकता है ...एवं उन सभी को अलग-अलग धोवन धाम पर प्रबंन्क के कार्य हेतु नियुक्ति करवाने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। मैं धोवन धाम में ...भले ही धन से कुछ विशेष सहयोग नहीं कर पा रहा हूँ ...लेकिन तन और मन से सदैव इस योजना से जुड़ा रहना मैं अपना सौभाग्य समझूँगा ....और जब तक साँस रहेगी तब तक अनेक दानवीर भामाशाहों को ..जन जन को ...धोवन धाम से जोड़ने का अथक प्रयास करता रहूँगा।

सभा :: हर्ष हर्ष ! जय जय !

मैं सोच रहा था ...बहूरत्ना वसुंधरा !...वास्तव में समाज में सभी कितने सम्पन्न हैं ...कोई मन से, कोई तन से तो कोई धन से ...तो कोई समर्पण से ...सब जुड़कर...एकजुट होकर...कितनी विराट् योजनाओं को पूर्ण कर सकते हैं ...कितने सद्कार्यों को निर्विरोध रूप से सम्पन्न कर सकते हैं ...मैं समाज की अथाह सामूहिक शक्ति को आज महसूस कर पा रहा था।

किसी ने एक ...किसी ने दो ...किसी ने पाँच धोवन धाम के निर्माण अथवा गोद लेने की घोषणा की और देखते ही देखते दो घण्टे के कार्यक्रम में लगभग 101 धोवन धाम के निर्माण एवं 71 गोद लेने वाले दानवीरों की सूची तैयार हो चुकी है। आपस में बात करते समय भी सकारात्मक परिणामों की खूब चर्चा हो रही है। अनेक लोग मोबाइल पर अपने-अपने क्षेत्रों में रिश्तेदारों एवं मित्रों को मेसेज भेजकर ...धोवन धाम की जानकारी भी प्रदान कर रहे हैं तथा जुड़ने की प्रेरणा भी कर रहे हैं। अन्त में श्रीसंघ के मन्त्रीजी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभा का समापन किया।

हर्ष हर्ष ! जय जय ! ...हर्ष हर्ष ! जय जय ! ...पूरी सभा एक साथ पूर्ण उत्साह के साथ उद्घोष कर रही है। देव-गुरु-धर्म के जयकारों से सभा गूञ्ज रही है ....और उस उद्घोष की पावन ध्वनि जब मेरे कानों में आई ...तो मेरी नींद खुल गई ....पर अहो आश्चर्य .... ऐसे लग रहा है कि जो दृश्य स्वप्न में दिख रहे थे ... उन दृश्यों को साक्षात् महसूस कर रहा हूँ ...बन्द आँखों से जो एक सपना देखा था ....उसको अब खुली आँखों से देख रहा हूँ। देख पा रहा हूँ एक बीज को वटवृक्ष का रूप धारण करते हुए ...और देख पा रहा हूँ ...भविष्य के उस दृश्य को ....जिसमें अनेकानेक प्यासे व्यक्तियों की प्यास ...धोवन पानी से बुझाने ...जैसे पवित्र उद्देश्य के लिए बने ...देश भर में हजारों धोवन धाम ...हर दिन लाखों प्यासे राहगीरों को धोवन-पानी से तृप्त तो कर ही रहें हैं ...और साथ ही तीर्थंकर प्रभु महावीर के सर्वश्रेष्ठ तीर्थ यानी सन्त-सती के आगमन से ...पदार्पण से ...उनके पवित्र चरणों से ...पावन भी हो रहे हैं।

.....और मेरे क़दम बढ़ चुके हैं ....गाँव की ओर....एक नई दिशा की ओर ...अपने जीवन के एक सुन्दरतम स्वप्न को साकार करने के लिए ...एक मजबूत संकल्प को पूरा करने के लिए ...प्रथम धोवन धाम की शुभ शुरुआत करने के लिए ...!

तीर्थ

-'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्ताद्रीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 59
ISSN 2249-2011

परिवार-स्तम्भ

घर की नींव बहुएँ

संकलयिता : श्री एस. कन्हैयालालजी गोलेछा

दीपा और नीता दोनों जेठानी-देवरानी थी। दीपा नौकरी करती थी और नीता घर सम्भालती थी। भरापूरा परिवार था। सास-ससुर थे एवं दोनों के दो-दो बच्चे थे, इस प्रकार कुल दस लोगों का परिवार था। कई सालों के बाद दोनों की बुआ सास कुछ दिन अपने भाई के पास रहने आई। सुबह उठते ही बुआजी ने देखा दीपा जल्दी-जल्दी अपने काम निपटा रही थी। नीता ने सबका नाश्ता, टिफिन पैक किया और अपने ऑफिस चली गई। नीता ने फिर दोपहर का खाना बनाया और थोड़ी देर सास और बुआ सास के पास बैठ गयी।

बुआजी से रहा नहीं गया और वह बोली-''छोटी बहू! तेरी जेठानी तो तुझ पर अच्छा हुकूम चलाती है। सुबह से देख रही हूँ रसोईघर में तू अकेली लगी है और वह महारानी दिखावा करने के लिए सबको नाश्ता परोस रही है, जैसे उसी ने बनाया हो।'' नीता और सास ने एक-दूसरे को देखा। नीता बोली-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है बुआजी। तब बुआजी बोली-तू भोली है, पर मैं सब समझती हूँ।

नीता से अब रहा नहीं गया और बोली-''बुआजी आपको दीपा दीदी का सबको नाश्ता परोसना दिखा, शायद यह नहीं दिखा कि उन्होंने मुझे भी सबके साथ नाश्ता करवाया। मुझे डाँटकर पहले चाय पिलायी, नहीं तो सबको खिलाकर और टिफिन पैक करने में मेरा नाश्ता तो ठण्डा हो चुका होता। दीदी सुबह जल्दी उठकर घर की सफाई करती है जिससे मम्मीजी का सामायिक करने में अच्छा मन लगता है। मैं तो नहाकर आते ही रसोई में घुस जाती हूँ। शाम को आते हुए दीदी सब्जियाँ भी लेकर आती है, क्योंकि आपके भतीजों को रात में लेट हो जाता है, तब ताजी सब्जियाँ नहीं मिलती। ऑफिस में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। फिर ऑफिस में काम करके घर आकर शाम को खाना बनाने में मेरी मदद भी करती है। वह मेरी जेठानी नहीं, मेरी बड़ी बहन है, मैं नहीं समझूँगी तो उसे कौन समझेगा।'' बुआजी चुप हो गई।

शाम को दीपा सब्जी का थैला नीता को पकड़ाते हुए बोली-''इसमें तुम्हारी पसन्दीदा लेखक की पुस्तक है, निकाल लेना।'' नीता खुश हो गई और बोली-''धन्यवाद दीदी।'' नीता ने सब्जी का थैला लेकर रसोईघर में रखा और पुस्तक रखने अपने कमरे में चली गई। बुआजी ने दीपा को आवाज दी-बड़ी बहू यहाँ आना। दीपा बोली-जी बुआजी। बुआजी बोली-''तुम इतनी मेहनत करके कमाती हो और ऐसे फालतू पुस्तकों में पैसे बरबाद करती हो, वह भी अपनी देवरानी के लिए। वह तो वैसे भी घर में करती ही क्या है? तुम दिन भर मेहनत करती हो और वह घर पर आराम। दीपा मुस्कुराई और बोली-आराम? बुआजी! नीता को तो जबरदस्ती आराम करवाना पड़ता है। सुबह से बेचारी लगी रहती है। रसोईघर में सबकी अलग-अलग पसन्द का खाना, चार बच्चों का टिफिन, ये सब बनाती है वह भी प्यार से। सुबह की चाय पीने का भी उसे सुख नहीं रहता, दोपहर में जब बच्चे आते हैं तब फिर उनका खाना, उनकी पढ़ाई सब वही देखती है। वह है इसलिये मुझे ऑफिस में बच्चों की चिन्ता नहीं रहती। मैं अपना पूरा ध्यान ऑफिस में लगा पाती हूँ। कुछ दिन पहले ही मुझे पदोन्नति मिली है। मम्मी-पापा की दवाई, कब खत्म हुई, कब लानी है उसे पता होता है। बाहर रिश्तेदारों के यहाँ कब उत्सव है, क्या देना है, सब उसे ही ध्यान रहता है। मेहमानों की आवभगत बिना किसी शिकायत के करती है। उसे बस पढ़ने का शौक है, फिर मैं अपनी छोटी बहन की छोटी-सी इच्छा पूरी नहीं

करूँगी तो कौन करेगा? बुआजी की बोलती बन्द हो गई।

दीपा वहाँ से उठकर चली गई। ये सारी बातें सास दूसरे कमरे में बैठी हुई सुन रही थी। बुआजी के पास आकर बोली-''जीजी, ये दोनों देवरानी-जेठानी से ज्यादा सगी बहन जैसी हैं और एक-दूसरे का अधूरापन पूरा करती हैं। ये दोनों मेरे घर की मजबूत नींव है, जिसे हिलाना नामुमकिन है। ऐसी बातों से तो कई लोगों ने दोनों को पढ़ाना चाहा, पर मज़ाल है कि कोई सफल हो पाया। दोनों ने सामने वाले की बोलती ही बन्द कर दी, ऐसा कहकर सास मुस्करा दी। बुआजी की बोलती अब पूरी तरह बन्द हो गई।

घर को स्वर्ग बनाने के लिए आवश्यक है आपस में प्रेम, स्नेह, आत्मीयता, कर्त्तव्य परायणता और एक-दूसरे को समझने की भावना। इन सब आत्मगुणों से घर का गुलदस्ता सजा रहेगा तो दुनिया की कोई ताकत नहीं जो हमारे घर को नरक बना दें।

-7/25, कामराज सालै, आर.ए. पुरम्, चेन्नई-600028 (तमिलनाडु)

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 60वाँ दीक्षा-दिवस 30 अक्टूबर, 2022 को

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, निर्व्यसनता के प्रबल प्रेरक, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का कार्तिक शुक्ला षष्ठी रविवार 30 अक्टूबर, 2022 को 60वाँ दीक्षा-दिवस उपस्थित हो रहा है। इस अवसर पर देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में तप-त्याग एवं निर्व्यसनता के कार्यक्रम अभियान के रूप में आयोजित किए जायेंगे। सभी श्रावक-श्राविका उत्साहपूर्वक अपने ग्राम-नगरों में व्यसनी व्यक्तियों को निर्व्यसनी बनाएँ एवं छात्र-छात्राओं को निर्व्यसनता के संकल्प कराएँ। निर्व्यसनी सामायिक का अभियान चलाएँ।

-निवेदक : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार

समग्र जैन चातुर्मास सूची-2022 का प्रकाशन

श्री बाबूलालजी जैन 'उज्ज्वल', मुम्बई द्वारा उज्ज्वल प्रकाशन के माध्यम से विगत 44 वर्षों से समग्र जैन चातुर्मास सूची जैन साधु-साध्वी के चातुर्मास स्थल की पूर्ण जानकारी प्रदान करती है। गत वर्ष तक जैन साधु-साध्वियों की संख्या 17,051 थी। इस वर्ष इनमें 754 की वृद्धि होकर 17,805 हो गई है।

वर्तमान साधु-साध्वियों की संख्या

कुल जैन साधु-साध्वी	श्वेता. मूर्तिपूर्जक	श्वेता. स्थानकवासी	दिगम्बर	श्वेताम्बर तेरापंथी
17,805	11,291	4,190	1,601	723

● जो आत्मा को शुद्ध-बुद्ध बनाने में सहायक हो, वह साधना चाहे विचार-सम्बन्धी हो या आचार सम्बन्धी, 'धर्म' है। इसके विपरीत जो क्रिया; जीवन की अशुद्धि बढ़ावे, आत्मा को स्वभाव से दूर करे, वह सब अधर्म है।

-आचार्यश्री हस्ती

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 61
ISSN 2249-2011

69वाँ जन्म-दिवस

भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के प्रति भावाभिव्यक्ति

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा घोषित भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 69वें जन्म-दिवस पर 6 अगस्त, 2022 को जैन स्कूल, महामन्दिर-जोधपुर में सन्तों एवं महासतीवृन्द के द्वारा भावपूर्ण अभिव्यक्ति।
-सम्पादक

श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ने 'बोलो जय-जयकार, महेन्द्र गुरुवर की।' स्तुति से प्रारम्भ करके कहा कि आज हमारे भावी आचार्यश्री का 69वाँ जन्म-दिवस है। भावी आचार्यश्री में सरलता-सादगी-सहिष्णुता है तो विनय-विवेक-विरागता भी कूट-कूट कर भरी हुई है। हमारे भावी आचार्यश्री में अनेकानेक सद्गुण हैं। मैं एक-एक गुण की व्याख्या करूँ इसके बजाय हमारे जीवन में भी वे सद्गुण आयें, ऐसा प्रयास करना है। मैं आपश्री के सुदीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

नवदीक्षिता **महासती श्री सुप्रियाजी म.सा.** ने अपने उद्गारों में कहा-''हीरा-महेन्द्र सी होती है साधना।'' महासतीजी ने गद्य-पद्य भाषा-भाव में गुण कीर्तन करते हुए भावी आचार्यश्री के प्रति शुभकामना व्यक्त की। महासतीजी ने फरमाया कि उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. जैसी सादगी भावी आचार्यश्री में है। एक छोटा-सा बच्चा भी मांगलिक सुनाने हेतु कहे तो आपश्री उसे भी निराश नहीं करते।

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने कहा-''कुछ बातें सरल होती हैं तो कुछ बातें कठिन। मैं भावी आचार्यश्री के बारे में बहुत-कुछ कह सकती हूँ मगर शब्द सीमित हैं और समय भी सीमित है। महासतीजी ने कहा कि हमारे भावी आचार्यश्री टॉप 25 में हैं। भारत में जैन सन्त-सतियाँजी की संख्या हजारों में हैं और स्थानकवासी परम्परा के संघनायकों में 25 टॉप हैं जिनमें हमारे भावी आचार्यश्री भी एक हैं। महासतीजी ने कहा कि भावी आचार्यश्री की घोषणा पश्चात् एक साथ तेरह दीक्षाएँ होना बड़ी उपलब्धि है। मैं श्रद्धा-भक्ति के साथ भावी आचार्यश्री को वन्दन-नमन करते हुए आपश्री के स्वास्थ्य-समाधि की शुभकामना व्यक्त करती हूँ।''

महासती श्री शारदाजी म.सा. ने कहा-''गुरु हीरा की सुखद छाँव में ईर्या-भाषा-एषणा समिति का ध्यान रखकर मैं भावी आचार्यश्री के प्रति शुभकामना व्यक्त करती हूँ। आपश्री का जन्म इसी महामन्दिर क्षेत्र में हुआ और भावी आचार्य की घोषणा के बाद प्रथम चातुर्मास भी इस क्षेत्र में हो रहा है, यह प्रमोद का कारण है। हमें गुप्त शक्तियों से रूबरू होना है तो हम आपश्री की सेवा-सन्निधि का लाभ लें। मैं भावी आचार्यश्री को बधाई देती हूँ एवं शुभकामना व्यक्त करती हूँ।''

श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनिजी म.सा. ने कहा-''जो व्यक्ति अपने अहं को त्याग कर गुरु चरणों में समर्पित होता है उसका जीवन श्रेष्ठ और सुन्दर बनता ही है। एक युवा जब दीक्षित होता है तो माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों को छोड़कर कैसे आगे बढ़ता है, यह भावी आचार्यश्री के जीवन से जाना जा सकता है। दीक्षा लेकर जिसे भी स्नेह-प्रेम और आत्मीयता-अपनत्व मिलता है, वह एक-न-एक दिन महापुरुष बनता है।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने आपको दीक्षित किया और अन्त समय भोलावण में कहा कि गुरु हीरा की सेवा करते रहना। भावी आचार्यश्री की अनेकानेक विशेषताओं में सेवा का गुण विशेष है। भावी आचार्यश्री तो सबको कहते हैं कि कोई भी काम करो, उसे छोटा मत समझो। आपके द्वारा प्रदत्त समाधान सबको सन्तुष्टि देते हैं।''

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य भगवन्त के

पीपाड़ से जोधपुर विहार के दौरान जब वयोवृद्ध एवं तपस्वी सन्तरत्न श्री मोहनमुनिजी म.सा. की एकाएक अस्वस्थता के समाचार विदित हुए तो तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. को भोपालगढ़ की ओर विहार करवाने में भावी आचार्यश्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। ऐसे ही वयोवृद्ध श्रावकरत्न श्री मोतीलालजी कटारिया की दीक्षा एवं संथारा आचार्यश्री हीरा के द्वारा करवाने में भी भावी आचार्यश्री का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। पीपाड़ में भावी आचार्यश्री की घोषणा होने के बाद एक साथ तेरह दीक्षाएँ होना बड़ी उपलब्धि है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि भावी आचार्यश्री दूरदर्शी तो हैं ही, संघहित में आपश्री की सोच गहरी है।

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने एक भजन के माध्यम से अपनी बात प्रारम्भ की। भजन के बोल थे-'तेरे बिन गुरुवर हमारा नहीं कोई रे।' मुनिश्री ने कहा-मैं जब छोटा था तब माँ के उपकारों से उपकृत रहा। लेकिन दीक्षा लेने के पश्चात् भावी आचार्यश्री ने धाय माता की तरह जो आत्मीयता और प्रेम दिखाया, वह मैं कभी नहीं भूल सकता।

क्या कहूँ-कैसे कहूँ, कहना मुझे आता नहीं।
पर मञ्जरी को देखकर, कोयल से रहा जाता नहीं।।

गुरु की सेवा-भक्ति से जीवन में प्रभुता आती है। भावी आचार्यश्री की गम्भीरता इतनी गहरी है कि आपको यदि कोई बात कह दी जाय तो वह कुएँ में डालने जैसी है। बात को पचाना आपश्री से सीखा जा सकता है।

आचार्यश्री हस्ती ने आपको महान् अध्यवसायी की पदवी दी, आपने उसे साकार किया है। अध्यवसायी के अनेक अर्थ होते हैं। उसमें पुरुषार्थ भी एक अर्थ है। अध्यवसायी के साथ महान् शब्द लगाकर उन्हें महापुरुष की श्रेणी में ला खड़ा किया है, वह सार्थक है।

भावी आचार्यश्री को गोचरी में और लोंच करने में महारथ हासिल है। आपकी गोचरी कभी परठने के लिए उपयोग में नहीं आई। सन्त-मुनिराज भी आपसे लोंच करवाने की प्राथमिकता रखते हैं। प्रमाद आपश्री के नजदीक नहीं फटकता। गुणों के सागर आपश्री ने हम सबको जो दिया है वह सदा-सर्वदा स्मृति-पटल पर रहेगा। आपश्री का यशस्वी जीवन निरन्तर गति-प्रगति करे, यही शुभकामना है।

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने कहा-''आज भावी आचार्यश्री के जन्म-दिवस पर हम सब गुणगान-गुण कीर्तन करते हैं। जिसे देख-सुनकर सभी भक्तों का आनन्दित होना स्वाभाविक है। सामाचारी और प्रायश्चित्त के विशेषज्ञ आपश्री रात्रि में सन्त मर्यादानुसार सोते हैं और जब भी हम देखते हैं तो आपश्री को जागृत अवस्था में ही पाते हैं। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव की सेवा और सन्निधि में रात्रि में भी आपश्री प्राय: बैठे ही मिलते हैं।

आपका सोना-उठना-बैठना-गोचरी लाना-लोंच करना-अप्रमत्त रहना जैसे अनेकानेक गुण हैं। हममें भी वे गुण आयें एतदर्थ हम आपश्री का जन्म-दिवस, दीक्षा-दिवस, भावी आचार्य पद की घोषणा जैसे दिनों को त्याग-तप के साथ मनाने की प्रेरणा करते हैं। आपश्री में निस्पृहता है और संघ-सेवा का जज्बा है। आपका संघ-दीप्ति और शासन-प्रभावना में योगदान है। इसीलिये आपश्री को गुरु हीरा ने भावी आचार्य पद से सुशोभित किया गया है। आपका शासन पूर्वाचार्यों के साथ आचार्यश्री हीरा के मार्गदर्शन में निरन्तर फलता-फूलता रहे, यही हमारी मंगल कामना है।''

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने अपनी बात के प्रारम्भ में कहा-''आपश्री की पुण्यवानी का ही सुपरिणाम है कि आपको जन्म के साथ ही तख्त मिला है। आपका जन्म नाम तख्तराज है आपश्री न नेता है, न अभिनेता, लेकिन आपका यशस्वी जीवन तो प्रणेता है।

आपश्री के जीवन में निस्पृहता है। जिसके जीवन में निस्पृहता होती है वह जीवन श्रेष्ठ होता ही है। आपश्री के जीवन में कोई चाहना नहीं, कोई कामना नहीं, कोई

इच्छा नहीं, कोई आकांक्षा नहीं इसीलिये आपश्री का जीवन हमारे लिए प्रेरणादायी है। जिसके जीवन में चाहना-कामना होती है, वह दु:ख पाता है।

आपश्री की त्याग की रुचि प्रेरणादायी तो है ही, प्रभावी भी है। आपश्री ने बीजापुर में मासखमण तप किया, आज भी वर्षों से आपश्री एकान्तर तप करते हैं। बड़ी-छोटी तपस्या में गोचरी लाना, पलेवणा करना और स्वाध्याय में रत रहना आपश्री का स्वभाव बन गया है। आपका सबके प्रति सहज स्नेह है, आत्मीयता-अपनत्व है और छोटे-बड़े सबकी बात सुनते हैं एवं समस्या का सम्यक् समाधान करते हैं।

मुनिश्री ने अपनी ओर से तथा सन्त-सतीवृन्द की ओर से आपश्री की स्वस्थता-प्रसन्नता के साथ उत्तम समाधि की शुभकामना व्यक्त करते हुए कहा कि सन्त-सतीवृन्द सब आपके गुणों के अनुरागी हैं, वे अपनी बात रखना चाहते हैं, लेकिन समय-सीमा के कारण सबको बोलने का मौका नहीं दिया जा सकता। इसलिये ही तो मैंने सभी सन्त-सतियों की ओर से आपके सुदीर्घ आयु की शुभकामना की है।

युवक संघ जोधपुर के अध्यक्ष **श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा** जो एक आशुकवि तो हैं ही, पूरे मनोयोग से काव्यमय प्रस्तुति देने में सिद्धहस्त हैं। आपने काव्य में भावी आचार्यश्री के प्रति भावनात्मक प्रस्तुति दी। जनता-जनार्दन ने स्वर में स्वर मिलाकर गुरु गुणगान करके अपनी-अपनी जिह्वा पवित्र की।

महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. लम्बा इन्तजार करने पर प्रवचन-सभा में पधारे और संक्षेप में अपने विचार रखते हुए कहा-''मेरे जीवन-निर्माण में मातुश्री का बड़ा योगदान रहा है। गुरु हस्ती की कृपा से मैं संयम-साधना में आया, उस महापुरुष के उपकारों से मैं सदा उपकृत रहूँगा। गुरु हस्ती पट्टधर गुरु हीरा ने जो मुझे आत्मीयता-अपनत्व दिया है, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। माता-पिता परिवारजनों के साथ गुरुदेव पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., गुरुदेव पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं मेरे सभी गुरुभ्राताओं का तथा सन्त-मुनिराज और महासतीवृन्द का स्नेहपूर्वक सहयोग सदा से रहा है, सदा रहेगा, यह मेरी अन्तर्मन की शुभ-भावना है।

आचार्य भगवन्तों ने मुझको आगम-ज्ञान सिखाने में और सामाचारी के सम्यक् परिपालन में सहयोग बनाए रखा, वह कभी मैं भूल नहीं सकता।

अभी सन्त-मुनिराजों ने एवं महासतीवर्याओं ने मेरे गुणगान किए, इसमें तो मेरा कुछ भी नहीं है। मेरे गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती और आचार्य श्री हीरा ने मुझे बहुत कुछ दिया है, दे भी रहे हैं तो उनके गुणगान गाना तो ठीक है। मैं तो इस क्षेत्र और इसी स्कूल में खेला-कूदा हूँ। मैं तो आज भी एक डाकिये की तरह काम कर रहा हूँ। मैं चाहता था कि संघसेवा में पहले की तरह लगा रहूँ, आज्ञा आराधना में रत रहूँ, पर नहीं चाहते हुए भी संघ का भार पूज्य गुरुदेव ने दे दिया है। मैं पूज्य गुरुदेव के शुभाशीर्वाद, स्नेह, कृपा से अपना उत्तरदायित्व निभा सकूँ, चतुर्विध संघ की आशा और अपेक्षानुसार कार्य-दायित्व का निर्वहन कर सकूँ, इसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। मुझे चतुर्विध संघ का सन्त-मुनिराजों के साथ महासतीवर्याओं का स्नेहपूर्वक सहयोग मिलेगा, यही अपेक्षा है।

लगभग तीन घण्टे का कार्यक्रम अपूर्व उल्लास के साथ अनुशासनपूर्वक सम्पन्न हुआ। लम्बे समय तक श्रोतागण वक्ताओं के अभिप्रायों को सुनते रहे यह अपने-आपमें एक विशिष्ट उदाहरण है।

-नौरतनमल मेहता, सह सम्पादक, जिनवाणी, जोधपुर (राज.)

■ बाहरी विषमता दूर करने से शान्ति नहीं होगी। उससे कुछ समस्याएँ हल हो सकती हैं, पर शान्ति के लिए समता आवश्यक है। **-आचार्यश्री हस्ती**

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 64
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

अनमोल मोती (7)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

100. प्रभु के समवसरण में विजातीय वैर (साँप-नेवला आदि का) भी समाप्त हो जाता है, परन्तु यदि प्रभु के संघ में यदि कोई सजातीय वैर रखते हैं तो वे जिनशासन से बहुत दूर हैं।
101. दूल्हा (निश्चय धर्म), दुल्हन (मुक्ति), बारात (व्यवहार धर्म) : दूल्हा बारात लेकर दुल्हन के यहाँ जाता है तो आदर सम्मान के साथ दुल्हन को लेकर लौटता है। अकेला जायेगा तो दुल्हन भले ही मिल जाए, किन्तु तिरस्कृत होने की सम्भावना बनती है।
102. अज्ञानी संयोगों को हटाता है, ज्ञानी हटाता दोष को।
103. गरम पानी शीतल होना चाहता है, लेकिन अग्नि का सम्पर्क न छोड़कर उसी से लड़ाई करता है। वह यह नहीं सोचता कि अग्नि से दूर होने पर स्वयं शीतल हो जायेगा, ज्ञानी फरमाते हैं कि जो निमित्तों से दूर हटेगा तो उसे स्वतः शान्ति मिलेगी।
104. एक गरीब घर की कन्या की अरबपति सेठ के यहाँ सगाई होते ही उस कन्या की जीवनशैली बदल जाती है, वैसे ही व्यक्ति जब आत्मार्थी बन जाता है तो उसकी जीवनशैली संसार की शैली से बदल जाती है।
105. भक्ति = स्वभाव में स्थिर होना।
106. ध्यान के मुख्य साधक कारण हैं-वैराग्य, तत्त्व ज्ञान, अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह का त्याग, मन को वश में रखना, परीषह विजय।
107. यह कमजोर क्षतिग्रस्त झोंपड़ी (शरीर) सर्दी, गर्मी और वर्षा आदि से रक्षा करने वाली नहीं है, यदि झोंपड़ी छोड़कर महल (मोक्ष) में जाना है तो सम्यक् पुरुषार्थ आवश्यक है।
108. ज्यों-ज्यों चन्दन के वृक्ष के समीप जायेंगे, त्यों-त्यों मनभावन महक मिलती जाएगी, वैसे ही जैसे-जैसे मोक्ष के समीप जायेंगे वैसे-वैसे आत्मा की अलौकिक महक मिलती जाएगी।
109. पेट और पेटी को भरने वाले को नहीं, बल्कि जो बिगड़ी को बनाये उसे बनिया कहते हैं।
110. दो शाश्वत सत्य : संसार में जो आया है वह अवश्य जाएगा। न कुछ साथ लाया है न कुछ साथ ले जायेगा।
111. लोभ का पूर्ण बलिदान (शुद्धभावपूर्वक प्रिय पुदगलों का त्याग) = मुक्ति।
112. भेदज्ञान से हर परिस्थिति में धर्म सम्भव है।
113. आत्मधर्म के अभिलाषी को मानवधर्म अवश्य पलेगा, पर जो केवल मानवधर्म तक ही सीमित है वह आत्मधर्म से वञ्चित रह जायेगा।
114. जिस प्रकार खेत की रक्षा बाड़ से होती है उसी प्रकार स्वभाव रूपी खेत को विषय-कषाय उजाड़ न दे, इसलिए व्यवहार धर्म उसकी रक्षा करता है।
115. व्रत-नियम जीवन को व्यथित नहीं, बल्कि व्यवस्थित करते हैं।
116. संसार के सभी मुख्य धर्म जिन शब्दों से प्रचलित है, वें उनके उत्तम अर्थ को ही प्रतिपादित करते हैं- जैन : वीतरागी जिन के अनुयायी जैन।
बौद्ध : ज्ञान स्वरूप बोधि को माने वह बौद्ध।
हिन्दू : जो हिंसा से दूर रहे वह हिन्दू।
मुसलमान : जो ईमान पर कायम रहे वह मुसलमान।
वेदान्त : जिसके विकल्प विचारों का अन्त हो जाए वह वेदान्त।
विष्णु : व्यापक ज्ञान को मानने वाला वैष्णव।
ईसाई : जिसने ईर्ष्या की आग बुझाई वह इसाई। ◆

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौत्तमचन्द जैन

घर से वन तक-दीप नारायण पाण्डेय। **प्रकाशक**-प्रभात प्रकाशन प्रा. लि., 4/19, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली-110002, **संस्करण**-प्रथम, 2022, **पृष्ठ**-288, **मूल्य**-995/- रुपये। Email : prabhatbooks@gmail.com, ISBN : 978-93-94534-54-4

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने उष्णकटिबन्धीय शुष्क वनों के पुनः स्थापन के लिए अपने अनुभव और पारम्परिक ज्ञान के आधार पर वैज्ञानिक शोध के अनुसार परीक्षण कर अपने विश्लेषण को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक स्वयं की अनुभूत जंगली जीवन की सुन्दर एवं अतीव उपयोगी कहानी है। प्रस्तुत पुस्तक के 21 अध्यायों में लेखक ने अपने सुदीर्घ जीवन के श्रेष्ठ अनुभवों एवं ज्ञान के आधार पर सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करते हुए उष्णकटिबन्धीय शुष्क वनों में पुनः स्थापन बाबत कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये हैं। पुस्तक लेखन का उद्देश्य बताते हुए लेखक ने लिखा है कि ज्ञान और कार्य का जोड़ होना आवश्यक है। पुस्तक में लेखक ने रहस्यमय नरो पहाड़, पुराने प्राकृतिक वन और प्राचीन विशालकाय वृक्षों का भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक चित्रण किया है। वन-प्राणियों और वनों के अटूट रिश्ते का विशद वर्णन किया है। वन से सम्बन्धित विषयों यथा-डण्डारोपण, स्थानीय बीज, बड़े बीज, सीधी बुआई, पुराने वृक्षारोपणों का सुधार और उत्तरजीविता आदि के बारे में विस्तृत प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध करायी गई है।

पुस्तक में यथास्थान वनों एवं वन्य-जीवों के आकर्षक चित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं। पुस्तक के अन्त में कतिपय वानस्पतिक नाम भी दिये गये हैं और 1165 ग्रन्थों की सन्दर्भ सूची भी दी गई है। अन्त में अकारादि क्रम से अनुक्रमणिका प्रस्तुत की गई है।

पुस्तक सभी सुधीजनों, कृषकों तथा शासन के लिए उपयोगी है।

भारतीय वाङ्मय को आचार्य विद्यासागर महाराज का योगदान-प्रो. अशोक कुमार जैन। **प्रकाशक**-जैन बौद्ध दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005 **पृष्ठ**-468 + 16 + 19 = 503 कुल, **मूल्य**-500/- रुपये। ISBN : 978-93-5457-689-8

संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय के जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में दिनांक 16-17 अप्रेल, 2018 को द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था-'भारतीय वाङ्मय को आचार्य विद्यासागर महाराज का योगदान।' इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के द्वारा शोध-पत्रों का वाचन किया गया। उन सभी शोधपत्र/आलेखों का संकलन कर प्रस्तुत स्मारिका में प्रकाशन किया गया है।

प्रस्तुत स्मारिका के प्रारम्भ में संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् आचार्य विद्यासागर महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत वर्णन किया गया है। अलग-अलग विद्वानों के द्वारा आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की विभिन्न संस्कृत, हिन्दी तथा प्राकृत भाषा में रचित रचनाओं के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला गया है और उनके महत्त्व एवं उपयोगिता के बारे में बतलाया गया है। आचार्यश्री ने श्रमणशतक, निरञ्जनशतक, भावनाशतक, सुनीतिशतक आदि संस्कृत काव्यशतकों की रचना की है। हिन्दी साहित्य में 'मूकमाटी महाकाव्य' ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है और अन्य भाषाओं में भी इसके अनुवाद किये गये हैं। आचार्य विद्यासागरजी महाराज ने प्राकृत-ग्रन्थों का काव्यानुवाद भी किया है। 'विज्जाणुवेक्खा' आपकी प्राकृत भाषा में लिखित प्रथम

रचना है।

प्रस्तुत स्मारिका में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा से संस्थापित शैक्षणिक संस्थाओं और लोकोपकारी एवं पारमार्थिक संस्थाओं की सूची भी प्रस्तुत की गई है। परिशिष्ट में जैन-बौद्ध दर्शन विभाग के परिचय के साथ-साथ सम्पादक प्रोफेसर अशोक कुमार जैन का परिचय भी दिया गया है।

प्रस्तुत स्मारिका के अध्ययन करने से आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ-साथ भारतीय वाङ्मय को उनके द्वारा प्रदत्त योगदान की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

सम्पादकीय टिप्पणियाँ-प्रो. ऋषभ चन्द्र जैन। **प्रकाशक**-इम्प्रेशन पब्लिकेशन, सालिमपुर अहरा 'बालिया', कदम कुआँ, पटना-800003, मो. 08877663597, **संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-151 + 8 = 159 कुल, **मूल्य**-250.00/- रुपये। ISBN : 978-81-953230-9-8

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपनी 35 प्रकाशित सम्पादकीय टिप्पणियों का संकलन प्रस्तुत किया है, जो विभिन्न लेखकों के प्राकृत एवं जैन विद्या से सम्बन्धित ग्रन्थों पर है। सभी सम्पादकीय टिप्पणियाँ जिज्ञासु पाठकों के लिए अतीव उपयोगी हैं। यथा-नियमसार, आचार्य कुन्दकुन्द का अवदान, तित्थयर भावणा, कुवलयमाला कहा, तित्थोगाली, प्रभावक चरित आदि लेख महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। इसके साथ ही पाँच लेख अंग्रेजी भाषा में भी प्रस्तुत किये गये हैं। पुस्तक के तृतीय भाग में वैशाली इन्स्टीच्यूट रिसर्च बुलेटिन नम्बर 18 से 30 तक कुल 13 बुलेटिन भी प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक जैन विद्या एवं प्राकृत भाषा के जिज्ञासु विद्वज्जनों एवं शोधार्थी पाठकों के लिए विशेष उपयोगी है और सामान्य पाठकों के लिए भी ज्ञानवर्धक है।

पाइयभासाए बिहाररज्जस्स भासाण जोगदाणं-प्रो. ऋषभ चन्द्र जैन। **प्रकाशक**-इम्प्रेशन पब्लिकेशन, सालिमपुर अहरा 'बालिया', कदम कुआँ, पटना-800003, मो. 08877663597, **संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-73 + 6 = 79 कुल, **मूल्य**-150.00/- रुपये। ISBN : 978-81-953230-8-1

प्रस्तुत पुस्तक 'पाइयभासाए बिहाररज्जस्स भासाण जोगदाणं' शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें प्राकृत भाषा में बिहार राज्य की भाषाओं के योगदान का विवेचन किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ में लेखक ने प्राकृत/अपभ्रंश, अंगिका भाषा तथा बज्जिआ भाषा और हिन्दी भाषा के शब्दों को उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया है। साथ ही भोजपुरी भाषा के बहुत से शब्दों को प्रस्तुत किया है। मागधी और मैथिली भाषा के भी बहुत से शब्दों, सर्वनाम तथा क्रियापदों की तुलनात्मक प्रस्तुति की है। इसके साथ ही आचार्य श्री विमलसागर अष्टक और बाहुबली अष्टक का भी वर्णन किया गया है।

अन्तिम चतुर्थ अध्याय में बिहार में प्राकृत एवं जैन संस्कृति के संरक्षकों का विस्तृत वर्णन है, जिनमें कतिपय तीर्थङ्करों का भी वर्णन है, जिनकी जन्म और निर्वाणभूमि बिहार राज्य के अन्तर्गत थी। बिहार के प्रमुख जैन मनीषी विद्वानों का भी परिचय प्रस्तुत किया गया है और साथ में उनकी कृतियों/रचनाओं की सूची भी प्रस्तुत की गई है। कतिपय जैन विदुषियों का भी उल्लेख किया गया है। मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज का भी प्रस्तुत पुस्तक में परिचय दिया गया है। जिससे विदित होता है वे भी बिहार राज्य के निवासी हैं।

वास्तव में प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन से स्पष्ट है कि बिहार राज्य का प्राकृत भाषा में कितना महान् योगदान रहा है और वर्तमान में भी बिहार राज्य के कितने मनीषी विद्वान् एवं विदुषियाँ प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार में प्रशंसनीय योगदान कर रहे हैं? पुस्तक ज्ञानवर्धक एवं सभी जिज्ञासु पाठकों के लिए पठनीय है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 67
ISSN 2249-2011

पर्युषण-रिपोर्ट

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 359 स्वाध्यायियों द्वारा 154 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वञ्चित ग्राम/नगरों में विद्वान, क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1100 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। पर्युषण पर्व दिवस में सभी स्वाध्यायी अपना अमूल्य समय निकालकर सेवा प्रदान करने के लिए उत्साहित रहते हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व 24-31 अगस्त, 2022 तक मनाया गया। पर्वाराधना में उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मेवाड़, मारवाड़, पोरवाल, पल्लीवाल, आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े दूर एवं निकट के 154 क्षेत्रों में 359 स्वाध्यायियों द्वारा अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की गईं। सभी स्थानों पर सामायिक, दया, संवर, उपवास, पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई। स्वाध्यायियों द्वारा इस वर्ष दी गई सेवाओं की सूची इस प्रकार है-

महाराष्ट्र

इचलकरंजी	श्री प्रकाशजी जैन-जयपुर
	सौ. छायाजी भंडारी-जलगाँव
	सौ. योगिताजी जैन-मुकटी
	सुश्री अमृताजी भण्डारी-जलगाँव
	श्री महावीरजी बोथरा-जलगाँव
मुम्बई	श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर
	श्री तरूणजी बोहरा-चेन्नई
	श्री इन्द्रप्रसादजी जैन-मुम्बई
माण्डल	सौ. शोभाजी ललवाणी-भुसावल
	सौ. सीमाजी कोटेचा-भुसावल
लोहारा	श्री राजेन्द्रजी कावड़िया-जलगाँव
	श्री सुरेशजी विनायक्या-जलगाँव
मुक्ताईनगर	सौ. अनिताजी लूंकड़-जलगाँव
	सौ. शिल्पाजी श्रीश्रीमाल-जलगाँव
	कु. साक्षीजी खिंवसरा-मुकटी
मुकटी	सौ. मंगलाजी कोटेचा-भुसावल
	सौ. लताजी सिसोदिया-भुसावल
छिन्दवाड़ा	श्री रोशनजी चौपड़ा-जलगाँव
	श्री अमृतजी मुथा-अमरावती
बुरहानपुर	श्री रितेशजी सुराणा-जलगाँव
	श्री नरेशजी कांकरिया-जलगाँव
	श्रीमती विमलाजी सुराणा-जलगाँव
ताहराबाद	सौ. सरलाजी बम्ब-भड़गाँव
	सौ. मनीषाजी बम्ब-लासुर
जायखेड़ा	सौ. विनिताजी साभद्रा-जलगाँव
	सौ. वैशालीजी खिंवसरा-जलगाँव
वालुज	सौ. सुजाताजी पारख-वाघली
	सौ. संगीताजी अलीझाड़-चालीसगाँव
	कु. आंचलजी खिंवसरा-तोंडापुर
इच्छापुर	सौ. तिलोत्तमाजी ओस्तवाल-भड़गाँव
	सौ. मायाजी श्रीश्रीमाल-भड़गाँव
	कु. प्रिंसीजी देड़िया-वरणगाँव
उम्बरखेड़	सौ. मनीषाजी भण्डारी-शिरूड़
	श्री राजेन्द्रजी सुराणा-शिरूड़
कामठी	श्री नन्दलालजी जैन-उनियारा
	श्री सोमनाथजी पतंगपुरे-जलगाँव
चिखली	सौ. मंगलाजी वेदमुथा-वाघली

	सौ. शांताजी नाहर-नांदुरा
	कु. प्रांजलजी सुराणा-वाघली
वरणगाँव	श्री तुषारजी संकलेचा-पुणे
	श्री सुभाषजी सुराणा-वाशिम
	श्री प्रणवजी धाड़ीवाल-नासिक
भराड़ी	सौ. सुनंदाजी सांखला-जलगाँव
	सौ. चन्द्रकलाजी सुराणा-जलगाँव
तोंडापुर	श्रीमती ताराजी जैन-जलगाँव
	सौ. सुनीताजी बरड़िया-जलगाँव
रत्नागिरी	श्री प्रकाशजी बांठिया-पाचोरा
	श्री सचिनजी देड़िया-वरणगाँव
फत्तेपुर	श्री मनोजजी संचेती-जलगाँव
	श्री धर्मेन्द्रजी जैन-अमरावती
	सौ. किरणजी बोरा-जलगाँव
	कु. ईशाजी वेदमुथा-चालीसगाँव
चिपलुण	श्री महावीरजी आंचलिया-मुम्बई
	सौ. अंजलिजी आंचलिया-मुम्बई
	श्री दक्षजी आंचलिया-मुम्बई
नागद	श्रीमती विजयाजी मल्हारा-जलगाँव
	श्रीमती उषाजी धोका-धामणगाँव
	श्रीमती शोभाजी बोहरा-जलगाँव
सिल्लोड़	श्री पारसमलजी बांठिया-घोड़नदी
	श्री चन्द्रकान्तजी हिरण-घोड़नदी
	श्री संजयजी भटेवड़ा-घोड़नदी
शिरूड़	सौ. रसिलाजी बरड़िया-जलगाँव
	सौ. अंजलिजी डोसी-जलगाँव
होलनांथा	श्रीमती उषाजी कोठारी-जलगाँव
	सौ. सरलाजी दुधेड़िया-जलगाँव
	सौ. शोभाजी संकलेचा-जलगाँव
भड़गाँव	सौ. सुरेखाजी चोरड़िया-पाचोरा
	कु. मृणालजी खिंवसरा-माण्डल
	कु. राशिजी जैन-जलगाँव
पलासखेड़ा	श्रीमती उषाजी चोरड़िया-भड़गाँव
	सौ. सुनंदाजी रांका-जलगाँव
वाघली	सौ. लताजी मुथा-नासिक
	सौ. जयश्रीजी छाजेड़-धुलिया
धरणगाँव	सौ. मधुबालाजी ओस्तवाल-नासिक
	सौ. सुशीलाजी समदड़िया-नासिक
	कु. युतिजी कोठारी-नासिक
	कु. सिद्धिजी समदड़िया-जलगाँव
बडनेरा	श्री सुरेशजी हिंगड़-पहुँना
	सौ. ज्योतिजी गादिया-भुसावल
	कु. दियाजी कोठारी-जलगाँव
	सौ. ऐश्वर्याजी बाफना-शहादा
खलना	श्री चेतनजी धाड़ीवाल-कजगाँव
	श्री संजयजी बोहरा-धुलिया
देवलगाँवमही	श्री शुभमजी बोहरा-जलगाँव
	श्री किशोरजी सांखला-जलगाँव
कासारे	सौ. मंगलाजी पारख-कासारे
केलसी	श्री कपिलजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री कप्तानजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
कारंजा (लाड़)	श्री मुकेशजी चोरड़िया-पारोला
	श्री निलेशजी चोरड़िया-पारोला
	श्री कल्याणमलजी धाड़ीवाल-कजगाँव
पिलखोड़	सौ. मंगलाजी बागरेचा-शिरपुर
	सौ. पुष्पाजी बागरेचा-शिरपुर
	कु. पायलजी पारख-होलनांथा
विटनेर	सौ. चन्द्रकलाजी बाफना-शिरपुर
	सौ. चन्द्रकलाजी सेठिया-शिरपुर
मांग्लादेवी	सौ. निर्मलाजी दुधेड़िया-जलगाँव
	सौ. पदमाजी ललवाणी-जलगाँव
दुसरबीड़	श्रीमती निर्मलाजी बांठिया-पाचोरा
	कु. रियाजी जैन-जलगाँव
हीरापुर	श्री पुखराजजी कोठारी-लासुर

मध्यप्रदेश

कालुखेड़ा	श्री राजेशजी भंडारी-जोधपुर
	श्रीमती सरलाजी भंडारी-जोधपुर
आकोदियामण्डी	श्रीमती शकुंतलाजी जैन-बैतुल
	श्रीमती कमलाजी गोठी-बैतुल
बागली	श्री देशराजजी मीणा-उखलाणा

	श्री धनरूपजी मीणा–उखलाणा
सिद्धिकगंज–	श्री नगीनजी डाकलिया–इन्दौर
(मगरदा)	श्री विमलजी खिंवसरा–खरगौन
बैतुल	श्री अजयजी राखेचा–जलगाँव
	श्री विरागजी कोठारी–जलगाँव
भोपाल–	श्री वर्धमानजी लोढ़ा–मालेगाँव
(अरेरा कॉलोनी)	सौ. उषाजी लोढ़ा–मालेगाँव
	कु. दर्शनाजी देड़िया–वरणगाँव
भोपाल–	सौ. शोभाजी लुणावत–भड़गाँव
(कोहिफिजा)	सौ. मंजूजी लुणावत–भड़गाँव
	सौ. चन्द्रकलाजी रांका–भड़गाँव
हातोद	श्री महावीरजी रांका–पहुँना
	श्री इन्द्रसिंहजी कोठारी–भीलवाड़ा
सिवनी मालवा	सौ. बसंताजी संकलेचा–नरडाणा
	श्रीमती चन्दनबालाजी अलीझाड़–शिरूड़
बेरछा मंडी	श्री विमलजी पोरवाल–इन्दौर
	श्री अरिहंतजी गोखरू–दूणी
जबलपुर	श्री निपुणजी डागा–जयपुर
	श्री अलंकारजी मुणोत–कटंगी
नीमच सिटी	श्री धर्मेन्द्रजी जैन–सवाईमाधोपुर
	श्री लक्ष्मीचंदजी छाजेड़–समदड़ी
कन्जाड़ा	श्री संजयजी देशलहरा–इन्दौर
	श्री सागरमलजी सर्राफ–उदयपुर
खण्डवा	श्री मुकेशजी बुरड़–शिरपुर
	श्री राकेशजी संकलेचा–शिरपुर
जामुनिया कलाँ	श्री धर्मचन्दजी जैन–कुश्तला
	श्री रतनलालजी जैन–कुश्तला
	श्री विनोदजी छल्लाणी–सूरत
	सुश्री स्नेहाजी जैन–कुश्तला
कुकडेश्वर	श्री अखिलेशजी नाहर–इन्दौर
	श्री आस्तिकजी जैन–इन्दौर

मेवाड़

दरीबामाइन्स	श्री महावीरजी कोठारी–निमाज
	श्री जिनेन्द्रजी पारख–धनारीकलाँ
अरनोदा	सुश्री दक्षाजी पुंगलिया–इन्दौर
	सुश्री रितिषाजी पोरवाल–इन्दौर
	सुश्री एकताजी जैन–इन्दौर
बाडी	श्री पारसचन्दजी पारलेचा–चित्तौड़
	श्री कानसिंहजी चौधरी–भीलवाड़ा
सावरियाँजी	श्री अमितजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री मनीषजी चोरड़िया–सिद्धान्तशाला
	श्री रितिकजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री लक्ष्यजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
भादसोड़ा	श्री शिखरचन्दजी छाजेड़–करही
	श्री विमलचन्दजी तातेड़–इन्दौर
दलोट	श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया–इन्दौर
	श्री राजेशजी कोठारी–उज्जैन
पुटोली	श्री सक्षमजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री आर्यनजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
आजाद नगर	श्री पुखराजजी चौधरी–भीलवाड़ा
(भीलवाड़ा)	श्री पंकजजी चौधरी–भीलवाड़ा

मारवाड़

गोटन	श्री सुभाषजी हुण्डीवाल–जोधपुर
	श्री धैर्यजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री रोहितजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	सुश्री पूजाजी मुथा–जोधपुर
धनारीकलाँ	श्री अरूणजी मेहता–जोधपुर
	श्री गोपालजी अबानी–जोधपुर
भोपालगढ़	श्री मुन्नालालजी भण्डारी–जोधपुर
	श्री भँवरलालजी लोढ़ा–चेन्नई
आसोप	श्री दिलरूपचन्दजी भण्डारी–जोधपुर
	श्री शान्तिलालजी सिंघवी–आसोप
आगोलाई	श्रीमती सायरबाईजी मेहता–जोधपुर
	सुश्री आयुषीजी जैन–नदबई
	श्री रौनकजी जैन–नदबई
पाली	श्री हस्तीमलजी गुलेच्छा–ब्यावर
	श्री संयमजी जैन–पीपाड़ सिटी
समदड़ी	श्री जिनेन्द्रजी जैन–जयपुर
	सुश्री वृतिकाजी जैन–सवाई माधोपुर
	सुश्री अक्षिताजी जैन–अलीगढ़

पोरवाल क्षेत्र

अलीगढ़	श्रीमती सुनीताजी मेहता–जोधपुर
	श्रीमती अनीताजी सालेचा–बालोतरा
	सुश्री लक्ष्मीजी जैन–आलनपुर
उनियारा	श्री बाबूलालजी जैन–सवाईमाधोपुर
	श्री कमलेशजी जैन–सवाईमाधोपुर
कुशतला	श्रीमती विमलाजी चोपड़ा–जोधपुर
	सुश्री राजुलजी शर्मा–जोधपुर
	सुश्री नैनाजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
चौरू	श्री पंकजजी जैन–चौथ का बरवाड़ा
जरखोदा	श्री उम्मेदचन्दजी जैन–जरखोदा
	श्री शिवकुमारजी जैन–जरखोदा
देई	श्री बाबूलालजी जैन–महा. नगर–स. मा.
	श्री ताराचन्दजी जैन–देई
	सुश्री माधुरीजी जैन–अलीगढ़
	सुश्री अंतिमाजी जैन–अलीगढ़
पचाला	श्री महावीर प्रसादजी जैन–बजरिया
	श्री श्यामसुन्दरजी जैन–आवासन मण्डल
बाबई	श्रीमती ममताजी गोखरू–दूनी
	सुश्री कोमलजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
दूनी	श्री कमलेशजी जैन–देई
	श्री ताराचन्दजी नाबेडा–देवली
इन्द्रगढ़	श्री पारसचन्दजी जैन–इन्द्रगढ़
	सुश्री श्रुतिजी जैन–देई
	सुश्री श्रेयाजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
जैनपुरी	श्री घनश्यामजी जैन–अलीगढ़
	श्री राकेशजी जैन–अलीगढ़
सुमेरगंजमंडी	श्री सुमतिजी मेहता–पीपाड़ सिटी
	श्री रविन्द्रजी गिड़िया–जोधपुर
श्योरपुर कलाँ	श्री नरेशजी जैन–श्योपुर कलाँ
देवली	श्रीमती शशिकान्ताजी जैन–भरतपुर
	श्रीमती शकुंतलाजी जैन–भरतपुर
मांगरोल	श्रीमती सुजाताजी जैन–चौथ का बरवाड़ा
	सुश्री तृप्तिजी जैन–चौथ का बरवाड़ा
	सुश्री साक्षीजी जैन–चौथ का बरवाड़ा

पल्लीवाल क्षेत्र

हरसाना	सुश्री निशाजी जैन–हरसाना
नदबई	श्रीमती मधुजी चोरड़िया–जयपुर
	श्रीमती संगीताजी सेठ–जोधपुर
महुवा	श्री अशोक कुमारजी जैन–महुवा
बरगमा	श्री महावीरजी जैन–गंगापुर सिटी
गंगापुरसिटी	श्री कुशलचन्दजी जैन–सवाईमाधोपुर
	श्री हेमन्तजी डागा–जयपुर
भरतपुर	श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन–सवाईमाधोपुर
	सुश्री भावनाजी वैद–भोपालगढ़
	सुश्री एकताजी जैन–भोपालगढ़
गोपालगढ़–	श्री सुरेशजी जैन–खेरली
(भरतपुर)	श्री महेन्द्र जी–खेरली
मण्डावर	श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन–करौली
	श्री पुलकितजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
खेरली	श्री त्रिलोकचन्दजी जैन–सवाईमाधोपुर
	श्री हार्दिकजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री तनिष्कजी जैन–खेरली
करौली	श्रीमती खुशबूजी जैन–करौली
बडौदामेव	श्रीमती सुशीलाजी जैन–नदबई
	श्रीमती आरतीजी जैन–कठुमर
अलवर	श्रीमती सुभद्राजी जैन–अलवर
(अम्बेडकर कॉलोनी)	

जयपुर क्षेत्र

दूदू	श्री प्रकाशजी पारख–धनारीकलाँ
	श्री महेन्द्रजी जैन–जयपुर
जोबनेर	श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा–जोधपुर
	श्रीमती कंचनजी रांका–जोधपुर
	सुश्री अंजलीजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
विद्याधर नगर	श्रीमती मोहनकौरजी जैन–जोधपुर
	सुश्री नेहाजी जैन–गंगापुर सिटी
	सुश्री निधिजी जैन–सवाई माधोपुर
पांच्यावाला–	श्रीमती शकुंतलाजी हिंगड़–पाली
	सुश्री प्रियाजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला
	सुश्री प्रियांशीजी जैन–जयपुर सिद्धान्तशाला

मानसरोवर	श्री चंचलमलजी चोरड़िया-जोधपुर
	श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर
	श्री प्रकाशचन्दजी गेलड़ा-जलगाँव

गुजरात

उधना	श्री कन्हैयालालजी जैन-भीलवाड़ा
	श्री हंसराजजी चौपड़ा-गोटन
सिलवासा	श्री जगदीशजी जैन-कोटा
	श्री अनिलजी जैन-कोटा
सूरत	डॉ. सुषमाजी सिंघवी-जयपुर
	श्री शांतिलालजी बाफना-सूरत
	सुश्री दिव्याजी सिंघवी-जोधपुर
खेडवर्मा	श्री नेमीचन्दजी जैन-पुणे
	श्री चेनकरणजी कटारिया-जलगाँव
	श्री सुरेशजी लोढ़ा-पुणे
उमरगाँव	सौ. कांताजी जैन-जयपुर
	सौ. आशाजी खिंवसरा-तोंडापुर
	कु. गरिमाजी जैन-तोंडापुर

अन्य

बलरामपुर	श्री हर्षितजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री नमनजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री यशराजजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
विजयवाड़ा	श्री अम्बालालजी चंडालिया-प्रतापगढ़
	श्रीमती लीलाजी सालेचा-जलगाँव
	डॉ. रश्मिजी कोटेचा-भुसावल
देहरादून	श्री दिलीपजी जैन-जयपुर
	श्री कविशजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री अजयजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
कानपुर-	श्री गौतमचन्दजी जैन-जयपुर
(आनंदपुरी)	श्री अशोकजी जैन-जयपुर
	श्री अमनजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
कानपुर-	श्री नीरजजी जैन-चौथ का बरवाड़ा
(रूक्मणी)	श्री राकेशजी जैन-चौथ का बरवाड़ा
	श्री अखिलेशजी जैन-कुस्तला
कोलकाता	डॉ. दिलीपजी धींग-चेन्नई
	श्री सुजलजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
	श्री हार्दिकजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला

तमिलनाडु

अंकुरवाणी	श्रीमती ताराजी ओस्तवाल-चेन्नई
आरकाट	श्री नेमीचन्दजी कर्णावट-भोपालगढ़
	श्री शान्तिलालजी पगारिया-अयनावरम
चंगलपेठ	श्रीमती पुष्पाजी मेहता-पीपाड़ सिटी
	श्री अखिलजी लुणावत-पीपाड़ सिटी
	सुश्री अंजलिजी लुणावत-पीपाड़ सिटी
चेटपेट	श्री अनिलजी ढेलड़िया-नगरी
केएलपी	श्री अशोकजी रांका-चेन्नई
	श्री सुनील कुमारजी सांखला-चेन्नई
चिन्तादरी पेठ	श्रीमती विनीताजी सुराणा-कलाकुर्ची
	सुश्री अंतिमाजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
गुडवांचेरी	सौ. कमलाजी पगारिया-धरणगाँव
	सुश्री जागृतिजी छाजेड़-फागणा
	सुश्री पूजाजी छाजेड़-फागणा
होसुर	श्री मनीषजी जैन-चेन्नई
	श्री कमलजी ओस्तवाल-चेन्नई
कड़म्बतूर	श्रीमती आशाजी कोठारी-जामनेर
	सुश्री सिमरनजी जैन-मेड़ता सिटी
कालाडीपेठ	श्रीमती बसन्ताजी गुगलिया-हैदराबाद
	कु. प्रेक्षाजी गुगलिया-हैदराबाद
कावेरीपाकम	श्री अशोकजी बाफना-चेन्नई
	श्रीमती कुसुमजी बाफना-चेन्नई
कोलीडम	श्रीमती विमलाजी चोरड़िया-चेन्नई
	सुश्री याशिकाजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
	सुश्री अक्षिताजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
कृष्णागिरी	श्री ज्ञानचन्दजी बागमार-चेन्नई
	श्री नीलमजी बागमार-चेन्नई
एम सी रोड़	श्री मानसिंहजी खारीवाल-भीलवाड़ा
	श्री निर्मलजी बोहरा-चेन्नई
एम.एम.डी.ए	श्री प्रसन्नजी भंसाली-वड़पलनी
	श्रीमती मालाजी भंसाली-वड़पलनी

मनली	श्रीमती मंजूजी टपरावत-सेल्यूर
	श्रीमती उषाजी गुगलिया-सैदापेठ
मायावरम	श्री रमेशजी जांगड़ा-ओस. गार्डन-चेन्नई
	श्रीमती सज्जनबाईजी बोहरा-क्रोमपेठ
	श्रीमती आरतीजी गुलेच्छा-चेन्नई
नेलीकुपम	श्रीमती श्वेताजी सिंघवी-पनरूटि
	सुश्री ट्विंकलजी सिंघवी-पनरूटि
न्यूवाशरमेन पेठ	श्री विलासजी कोचर-फत्तेपुर
	श्री संदेशजी जैन-पुणे
	श्री रोहनजी जैन-अडावद
ओसवाल गार्डन	श्री राजेशजी ललवाणी-चिन्तादरीपेठ
	श्री सुपार्श्वजी चोरड़िया-चिन्तादरीपेठ
पल्लावरम्	श्री अशोकजी जैन-जयपुर
	श्री जम्बूकुमारजी जैन-जयपुर
पल्लीपेठ	श्री जवाहरलालजी कर्णावट-चेन्नई
	श्री विमलजी मुथा-पल्लीपेठ
पम्मल	श्री नवरतनमलजी बाघमार-चेन्नई
	श्री नवरतनमलजी गाँधी-नंगनल्लुर
	श्री गौतमजी कटारिया-नंगनल्लुर
पटाभिराम	श्रीमती मंजूलाजी पीपाड़ा-कोंडीतोप
	श्रीमती इन्द्राजी चोरड़िया-कोंडीतोप
पोलूर	श्री धर्मेन्द्रजी जैन-जयपुर
	श्री प्रशान्तजी बाघमार-चेन्नई
सैदापेठ	श्री सुमेरजी बाघमार-चेन्नई
	श्री आकाशजी चौपड़ा-जोधपुर
शहनोई नगर	श्री सम्राटजी बाघमार-चेन्नई
	(प्रतिक्रमण सेवा)
शोरापुर	श्री सतीशजी जैन-मैसूर
	श्री सम्पतजी बाघमार-मैसूर
श्रीकालाहस्ती	श्री नवरतनजी चोरड़िया-चेन्नई
	श्री महावीरजी जैन-चेन्नई
स्वाध्याय भवन	श्रीमती संगीताजी बोहरा-पुरुषवाक्कम
	श्रीमती प्रियाजी मुथा-पुलीयान्तोप
थाउजेन्ट लाइट	श्री विरेन्द्रजी कांकरिया-चेन्नई
	श्री विरेन्द्रजी ओस्तवाल-चेन्नई
चिदंबरम	श्रीमती पुष्पाजी चतुर-क्रोमपेठ
	श्री निखिलजी कांकरिया-चेन्नई
	सुश्री सोनलजी सुराणा-चेन्नई
तिरमसी	श्रीमती चन्दनबालाजी रांका-सेलम
	श्रीमती मीनूजी छाजेड़-सेलम
तिरवन्नामलई	श्री विनोदजी जैन-चेन्नई
	श्री सुनीलजी बाघमार-चेन्नई
उलन्धर पेठ	श्री रिखबचन्दजी बाघमार-अयनावरम
	श्री रमेशजी कांकरिया-कालाडीपेठ
विल्लीपुरम	श्री सुनीलजी ललवाणी-चिंतादरीपेठ
	श्री दिलीपजी चौपड़ा-वड़पलनी
विरदाचलम	श्री महावीरजी बाघमार-चेन्नई
	श्री गौतमचन्दजी मुणोत-चेन्नई
वालाजाबाद	श्री उगमराजजी कांकरिया-कालाडीपेठ
	श्री रविन्द्रजी बोथरा-चेन्नई
तिन्नानुर	श्रीमती ताराजी बाघमार-अयनावरम
	सुश्री आरचीजी जैन-जयपुर सिद्धान्तशाला
निम्कुंबाकम	श्री आशीषजी सुराणा-क्रोमपेट
	श्री राजमलजी बंगाणी-वड़पलनी
	श्री राजेशजी गादिया वड़पलनी

पर्युषण के अतिरिक्त स्वाध्यायी सेवा

नागद

श्री विनोद जी सांखला मालेगाँव (13 से 25 जुलाई)
श्री सम्पतराज जी पगारिया उदयपुर (13 से 25 जुलाई)

विजयवाड़ा

श्रीमती मंजूजी सिंघवी भीलवाड़ा (13 से 27 जुलाई)
श्री मानसिंहजी खारीवाल भीलवाड़ा (13 से 27 जुलाई)
श्री विनोदजी सांखला मालेगाँव (27 जुलाई से 10 अगस्त)
श्री सम्पतराजजी पगारिया उदयपुर (27 जुलाई से 10 अगस्त)
श्री मानसिंह जी खारीवाल भीलवाड़ा (11 से 22 अगस्त)
श्री सुशीलजी सुराणा बेगूँ (11 से 22 अगस्त)
श्री अम्बालालजी चंडालिया प्रतापगढ़ (22 से 31 अगस्त)

-संयोजक सुभाष हुण्डीवाल
-सचिव सुनील संकलेचा
श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर (राज.)

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 73
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यप्रवर की सन्निधि में महामन्दिर में तपाराधना एवं अपूर्व धर्मोल्लास

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, **आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा–10** श्री ओसवाल जैन स्कूल महामन्दिर में, **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5** शक्ति नगर स्थित सामायिक–स्वाध्याय भवन में तथा **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा–4** सामायिक–स्वाध्याय भवन महामन्दिर में चातुर्मासार्थ सुखे–समाधौ जोधपुर में विराजित हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व में अपूर्व धर्मोल्लास–यूँ तो व्याख्यान आदि में चातुर्मास प्रारम्भ से श्रावक–श्राविकाओं की गजब की उपस्थिति रही है, परन्तु पर्युषण के दिनों में तो जैन स्कूल का विशाल प्रांगण भी छोटा पड़ने लगा। चारित्रात्माओं द्वारा प्राप्त आगमवाणी तथा व्याख्यानादि सुनकर सभी श्रावक–श्राविका प्रमुदित थे तो साथ ही भावी आचार्यप्रवर के सरस व्याख्यानों ने जनमानस में अपूर्व जागृति का सञ्चार किया है।

सांवत्सरिक क्षमायाचना और दर्शन हेतु श्रद्धालुओं का उमड़ा जनसैलाब–सांवत्सरिक क्षमायाचना हेतु ज्ञानगच्छीय श्रद्धेय श्री पारसमुनिजी म.सा., समर्थगच्छीय सतीवर्ग तथा समतासंघीय साध्वीवर्ग पधारे एवं परस्पर क्षमायाचना और साता–पृच्छा हुई।

हैदराबाद, मण्डीरोड़–सवाईमाधोपुर, पीपाड़, पाली, सवाईमाधोपुर, बेंगलोर, फत्तेपुर, नागपुर, लासूरस्टेशन, शिरपुर, जयपुर–महिला मण्डल, धुलिया, निफाड़, मुम्बई, रालेगाँव, हिण्डौन, किशनगढ़ आदि स्थानों से श्रीसंघ गुरुचरणों में उपस्थित हुए। इनके अतिरिक्त अनेक स्थलों से सुदूरवर्ती–निकटवर्ती ग्राम–नगरों से श्रद्धालुगण दर्शन–वन्दनार्थ आये। श्री संघ तथा श्रद्धालुओं का आवागमन निरन्तर जारी है।

नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचन्दजी कटारिया तथा संघ के अनेक पदाधिकारीगण स्वास्थ्य पृच्छा एवं दर्शनार्थ उपस्थित हुए। बेंगलोर से श्री यशवन्तराजजी सांखला सपरिवार एवं जयपुर से संघ संरक्षक सदस्य श्री विमलचन्दजी डागा सपरिवार धर्मसहायिका के देवलोकगमन हो जाने पर दर्शन, वन्दन, मांगलिक श्रवणार्थ गुरुचरणों में आये।

भावी आचार्यश्री ने पच्चक्खाए एक साथ नौ मासखमण–परमाराध्य पूज्य गुरुदेव के अतिशय और भावी आचार्यश्री की प्रेरणा से पर्युषण में शताधिक अठाइयाँ तथा सहस्राधिक उपवास आदि हुए। भावी आचार्यश्री ने एक साथ नौ तपस्वियों को मासक्षपण का प्रत्याख्यान कराया। ये तप एवं श्रद्धार्घ्य तपस्वियों के विशिष्टभाव का परिचायक है।

युवारत्न श्री रजतजी सुपुत्र श्री दिलीपजी चौपड़ा ने 20 वर्ष की आयु में मासक्षपण कर श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। श्रीमती जयन्तीजी–श्री राजेन्द्रजी बाघमार (कोसाना वाले) चेन्नई, श्री गणेशमलजी जौहरीलालजी लुंकड़ ने भी मासक्षपण तप किया तथा अहमदाबाद से आकर श्री अरुणजी भण्डारी ने 36 के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। अभी तक कुल 17 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं।

श्री अनिलजी सुपुत्र श्री जेठमलजी जैन ने अपने परिवार के 14 सदस्यों द्वारा पूरे चार माह के लिए तेले की लड़ी चला रखी है। यह भावी आचार्यप्रवर के सांसारिक बुआजी का परिवार है। श्रीमती कंचनदेवी (श्री अनिलजी

की बहिन) तथा श्रीमती रेखाजी सुराणा (भावी आचार्यश्री की सांसारिक भतीजी) ने 'परदेशी राजा तप' किया है, जिसमें निरन्तर 12 बेले और एक तेला किया जाता है।

सुश्रावक श्री रोशनजी सालेचा के सत्प्रयास से पूरे जोधपुर में प्रतिदिन 10 आयम्बिल हो रहे हैं। वीरभ्राता श्री अमितजी आंचलिया, शोरापुर ने 40 वर्ष की वय में सपत्नीक शीलव्रत के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव से ग्रहण कर साधना में गति बढ़ाई है।

इस मास में श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ने पचोला एवं महासती श्री शारदाजी म.सा. ने अठाई की तपस्या की। तपस्या पारणक उपरान्त स्वास्थ्य समाधिमय है।

परमाराध्य पूज्य आचार्यदेव की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य लाभ–आचार्य भगवन्त के श्रमणोचित उपचार के दौरान भावी आचार्य सहित सन्त-मुनिराज सेवार्थ सजग, तत्पर, सन्नद्ध रहे। श्रमणोचित चिकित्सा के उपरान्त, पूर्वापेक्षया आचार्य भगवन्त के स्वास्थ्य में सुधार प्रवर्धमान है। चिकित्सा समिति के उपाध्यक्ष श्री मनमोहनजी कर्णावट के साथ-साथ जोधपुर संघाध्यक्ष, मन्त्री तथा श्री शान्तिलालजी लोढ़ा, श्री राम हॉस्पिटल परिवार (स्टॉफ) डॉ. एन. के. वैष्णव, डॉ. राजीवजी सामसुखा तथा फिजियोथैरोपिस्ट श्री सचिनजी सतत सक्रिय रहे हैं एवं सतत सेवा में श्री रौनकजी डाकलिया (वीरपुत्र), श्री अंकितजी लोढ़ा (वीरभतीजा), श्री लोकेशजी कुम्भट एवं श्री अशोकजी कुम्भट सहित अनेक युवा सभक्ति गुरुचरणों में अहर्निश तत्पर रहे। पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य सुधार के साथ चलने का अभ्यास जारी है।

जोधपुर में सम्पन्न तपस्याओं की सूची (गत अंक से आगे)–36 दिवसीय(एक)–1. श्री अरूणजी भंडारी-अहमदाबाद, **31 दिवसीय (1)**–1. श्री गणेशमलजी जवरीलालजी लुंकड़, **30 दिवसीय (दो)**–1. श्री रजतजी दिलीपजी चौपड़ा 2. श्रीमती जयन्तीजी राजेन्द्रजी बाघमार-चेन्नई, **16 दिवसीय (एक)**–श्री दिलीपजी स्व. श्री घेवरचन्दजी मेहता, **15 दिवसीय (दो)**–1. श्रीमती आशाजी श्री अजयजी कुम्भट, 2. श्रीमती मुन्नीदेवीजी श्री रमेशकुमारजी भंसाली, **11 दिवसीय (चार)**–1. श्रीमती शैलीजी लोकेशजी कुम्भट 2. श्री सुमितजी धनराजजी लुणावत, 3. श्रीमती सरोजजी सुमितजी लुणावत, 4. श्रीमती रेणुजी धनेशजी बोहरा, **9 दिवसीय (सात)**–1.सुश्री आयुषीजी मनोजजी बोथरा, 2. श्री प्रवीणजी सुभाषजी हुण्डीवाल, 3. श्रीमती शालिनीजी संदीपजी हुण्डीवाल, 4. श्रीमती मंजूजी करोड़ीमलजी गोगड़, 5. श्री युवराजजी विकासजी बाफना, 6. श्री मनोजजी भीकमचन्दजी मेहता 7. श्रीमती विजयलक्ष्मीजी अशोकजी गोगड़, **8 दिवसीय (दस)**–1. सुश्री भाविष्काजी महिपालजी भण्डारी, 2. सुश्री गरिमाजी पदमचन्दजी देसरला, 3. सुश्री डिम्पलजी राजेशजी संकलेचा, 4. श्री दीपकजी ललवानी, 5. श्रीमती कविताजी दीपकजी ललवानी, 6. श्रीमती उषाजी शान्तिलालजी बोहरा, 7. श्रीमती पूनमजी यशवन्तजी मेहता, 8. श्री कमलेशजी भीकमचन्दजी मेहता, 9. श्रीमती लताजी कमलेशजी मेहता, 10. श्री राजेशजी आसुलालजी बोहरा।

श्राविका मण्डल द्वारा समय-समय पर इतिहास विषय पर परीक्षाएँ करवायी जा रही हैं। इसके साथ ही संघ की अनेक गतिविधियाँ, श्रावक-श्राविकाओं की धर्म-साधना अनुष्ठानों में सतत सक्रियता जारी है।

आगत श्रद्धालुओं की आवास-निवास, भोजन आदि की समस्त व्यवस्थाएँ तथा सर्वतोभावेन सम्भाल संघ की रीति-नीति अनुसार जोधपुर संघ के तत्त्वावधान में पूर्ववत् महामन्दिर क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं द्वारा की जा रही है। सुव्यवस्था आदि में संघ कार्यकर्त्ताओं का सहयोग अनुमोदनीय है। *-गिरीश जैन*

सन्तप्रवरों के चातुर्मासों में धर्मसाधना एवं तपस्या का आकर्षण

मदनगंज-किशनगढ़-मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के मदनगंज विराजने से ओसवाली मौहल्ला का स्थानक एक तीर्थ मेला बन गया है। सबके क़दम धर्म स्थानक की ओर बढ़ते नज़र आ रहे हैं। एक तरफ सन्तों के प्रवचनों का आकर्षण तो दूसरी तरफ पर्वाधिराज पर्युषण का अपना विशिष्ट प्रभाव। प्रवचन में स्थानक भी छोटा पड़ने लग गया। कोई तेला, कोई पंचोला, कोई अठाई करके आत्मशुद्धि में पुरुषार्थ कर रहे हैं। भाइयों के लिए संवर और पौषध स्थानक में हो रहे थे तो बहनों के लिए शान्तिभवन में व्यवस्था की गई। आराधना-साधना की बड़ी रौनक, बड़ी चहल-पहल देखने को मिली। तपस्या का ऐसा माहौल बना कि संवत्सरी के दिन अठाई सहित 9-11 आदि करने वालों की संख्या 70 से 75 थी। किसी के घर में 7 अठाई तो किसी घर में 5 अठाई तो किसी घर में 3 अठाई हुई। मदनगंज के हर मौहल्ले में, हर उपनगर में तपस्या का माहौल था। स्थानीय अध्यक्ष ने तपस्या के इस माहौल में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन में तपस्या का ऐसा माहौल कभी नहीं देखा। पर्युषण के दौरान मध्याह्न में सन्तों के द्वारा सूत्र वाचनी के पश्चात् बहनों ने हर दिन अलग-अलग प्रतियोगिताएँ करवायी, उसका माहौल भी दर्शनीय था। इसी क्रम में यहाँ पञ्च दिवसीय बहिनों का शिविर आयोजित किया गया। उम्मीद से अधिक उपस्थिति देखकर हर कोई चमत्कृत था। श्रीमती विजेताजी सोनी ने बड़े ही सुचारू रूप से शिविर सम्पन्न करवाया। इस शिविर में श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने भी पाँचों ही दिन 45-45 मिनट का समय देकर बड़ा उपकार किया। इस शिविर में कर्म प्रकृति, गुणस्थान स्वरूप, 25 क्रिया आदि का बोध करवाया गया।

इस चातुर्मास की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि अब तक 125-150 अठाइयाँ हो चुकी हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती मोनिकाजी डांगी ने 21 की तपस्या तथा श्रीमती कान्ताजी, श्रीमती विनिताजी दरबड़ा, श्रीमती मधुजी बरड़िया, श्रीमती उर्मिलाजी मेहता इन चारों बहिनों ने 31 की तपस्या करके मदनगंज का गौरव तो बढ़ाया ही साथ ही इस चातुर्मास को यादगार बना दिया।

इस पर्वाधिराज पर्युषण के दौरान अनेक शहर और गाँव से आकर कई सारे लोगों ने सन्तों की सन्निधि में ठहरकर आत्म-साधना में अपने आपको सम्मिलित किया। अन्तगडदशासूत्र का वाचन और विवेचन श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने कई सारे तथ्यों को उद्घाटित कर किया। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने अपनी बुलन्द आवाज़ में सुमधुर भजनों के साथ जीवन्त दृष्टान्तों से लोगों के अन्तर दिल को प्रवाहित किया। उन्होंने अपनी चिर-परिचित शैली के माध्यम से प्रवचन दिया। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रासङ्गिक विषयों पर बढ़ती हुई विकृति पर प्रवचन करते हुए लोगों को जागृत किया। महाराज श्री ने फरमाया कि आज खान-पान, रहन-सहन, पहनावा बदलता जा रहा है, यदि यही रफ्तार रही तो सोचो समाज की भविष्य में क्या दशा होगी? संस्कार देने से नहीं आते संस्कार जीने से आते हैं। इसी प्रकार मुनिश्री ने स्वधर्मी-वात्सल्य तथा सेवा से वञ्चित घर के बुजुर्गों की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए सेवा की मूल्यता पर मार्मिक प्रवचन दिया। पर्युषण पर्वाराधना के बाद भी प्रवचनों में लोगों की उपस्थिति पर्युषण पर्व का अहसास करवा रही है। 25 सितम्बर को आयोजित स्वाध्याय संगोष्ठी 'पञ्च कारण-समवाय' में प्रात: 11.30 बजे तक लोग बैठे हुए थे। एक ने भी उठने का मानस नहीं बनाया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने मासखमण की तपस्या के महत्त्व को प्रतिपादित किया तथा पञ्च कारण-समवाय पर अपना वक्तव्य दिया। 'पञ्च कारण-समवाय' संगोष्ठी का विवरण जिनवाणी में अलग से दिया गया है।

-प्रमोद मोदी

प्रताप नगर, जयपुर-सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री जैन रत्न स्वाध्याय भवन प्रतापनगर में ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की आराधना सतत गतिमान है। सभी धर्म-श्रद्धालुओं ने संवत्सरी महापर्व उत्साहपूर्वक त्याग एवं तपस्या कर मनाया। पौषध संवर करने वालों से तीनों तल भर गये थे। 'चातुर्मासिक मिशन : क्लीयर हो वीजन' लक्ष्य बनाकर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सितम्बर माह में आगम बत्तीसी पर प्रतिदिन प्रवचन किये हैं। पहली बार आगम सूत्रों का परिचय जानने की उत्सुकता जिनवाणी श्रोताओं में प्रत्यक्ष रूप में दिखाई पड़ी। आप श्री ने आगम स्वरूप, अस्वाध्याय के 32 कारण, आचाराङ्गसूत्र, सूयगडाङ्गसूत्र आदि 32 ही आगमों का परिचय कराकर, उनमें निहित जानकारी एवं उनकी उपादेयता का बोध कराया। धर्म सभा का अनुशासन श्रोताओं की मन्त्रमुग्धता एवं तन्मयता को दर्शाता है।

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. द्वारा नेमिकुमार चरित्र के वाचन से भवी जीवों को चारों कषायों का शमन करने, राग-द्वेष को जीतने, शीलव्रत-ब्रह्मचर्य पालन करने, देव-गुरु-धर्म में सच्ची श्रद्धा रखने की निरन्तर प्रेरणा दी जा रही है। आप तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, सतियों, गाथापतियों आदि के जीवन के दृष्टान्त तथा सन्त महापुरुषों के उन्नत जीवनप्रसङ्ग को उद्घाटित कर थोकड़ों का ज्ञान भी कराते हैं।

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. नियमित आचाराङ्गसूत्र की वाचना कर श्रोताओं को आचार-धर्म का प्रतिबोध देते हैं। सभी को संयम लेकर मोक्ष मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते रहते हैं।

प्रत्येक अष्टमी को आगमपारायण कक्षा में आगम के मूल पाठों का स्वाध्याय हो रहा है। 4 सितम्बर को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर एवं श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था सांगानेर प्रताप नगर, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जयपुर का गौरवशाली अतीत रहा है, वर्तमान पुण्यशाली है और भविष्य साधनाशील होना चाहिए। जिस संघ में शुद्धि होती है उसी की वृद्धि होती है। संघ सत्ताधारियों से नहीं, समकितधारियों से चलता है। मुख्य वक्ता डॉ. ताराजी डागा ने 'क्षमा की महत्ता' पर विचार अभिव्यक्ति दी। पदाधिकारियों ने संक्षिप्त शब्दों में सम्बोधित किया एवं गायकों ने भजन की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी।

8 सितम्बर को गुरु हीरा में श्रद्धा-भक्ति के भाव से 1 घण्टे के नमस्कार मन्त्र के जाप किये गये। इस माह में प्रति सप्ताह मान चालीसा, महेन्द्र चालीसा, बड़ी साधु वन्दना, लघु साधु वन्दना तथा मेरी भावना के जाप सम्पन्न हुए। रविवारीय सामूहिक सामायिक कक्षा में 11 सितम्बर को 'जीवन कैसा हो? आगम में लिखने जैसा हो।' विषय पर श्रीमती सेहलजी जैन, जयपुर ने जीवन निर्माणकारी वक्तव्य दिया। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने आगमों में नाम तभी लिखा जायेगा, जब आप नामधारी श्रावक नहीं नियमधारी श्रावक बनेंगे।

18 सितम्बर को श्रीमती शिखाजी जैन ने 'Benefits of Fasting' पर युवाओं का सम्बोधित किया। आपने उपवास की शारीरिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से उपादेयता को समझाया। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने मोबाइल उपयोग के उपवास की बात की। 25 सितम्बर को श्रीमती डिम्पल जैन, जयपुर ने 'हँसते-हँसते सहना सीखो और सहते-सहते हँसना सीखो।' विषय पर वक्तव्य देकर कक्षा को सम्बोधित किया और सभी को सहनशीलता धारण करने की शिक्षा दी। श्रद्धेय मनीषमुनिजी म.सा. ने उद्बोधन में कहा कि गुरुदेव यह फरमाते हैं-पल-पल सहन कर लो, नहीं तो पल्योपम तक सहना पड़ेगा।

पर्युषण पश्चात् तपाराधना निरन्तर गतिमान है। तपस्या लड़ी में एकाशन, आयम्बिल, नींवी, उपवास एवं तेला किये जा रहे हैं। 16 सितम्बर को सन्त सान्निध्य में श्रीमती सुनीताजी हीरावत ने मासक्षपण की तपाराधना पूर्ण की।

संघ द्वारा तप की अनुमोदनार्थ अभिनन्दन-पत्र भेंट कर स्वागत सम्मान किया गया। श्रीमती किरणजी कोठारी द्वारा पंच परमेष्ठी तप की आराधना करने पर उन्हें भी अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के क्षेत्रीय सम्मेलन (मध्य राजस्थान सम्भाग) में उपस्थित धर्मसभा ने अनुमोदना का गीत गाया। क्षेत्रीय सम्मेलन 28 सितम्बर को प्रताप नगर स्थित गुलाब विहार में सम्पन्न हुआ जिसमें 100 से अधिक श्राविकाएँ उपस्थित थी। सम्मेलन श्राविका मण्डल को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से सफल रहा। इस माह में सन्त-मण्डल के दर्शन करने आने वालों का तान्ता लगा हुआ है। अलग-अलग क्षेत्रों से संघ, वीर परिवारजन एवं दर्शनार्थ श्रद्धालुगण प्रतिदिन पधार रहे हैं। *-ऋषभ कुमार जैन, मन्त्री*

मेड़ता सिटी-तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं **व्याख्यात्री महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4** सुख शांतिपूर्वक विराज रहे हैं। यह चातुर्मास 'मेरा चातुर्मास' के उद्घोष की प्रेरणा से प्रारम्भ हुआ। स्वयं की आत्मा को लक्ष्य रखकर धर्म-ध्यान, तप-त्याग, स्वाध्याय आदि करने की प्रेरणा दी गई। सभी पच्चक्खाण बिना किसी प्रदर्शन एवं आडम्बर के तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से प्रवचन से पहले ही हो जाते हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में ज्ञात 19 ने अठाई या अधिक के पच्चक्खाण किये। पर्वाधिराज के प्रारम्भ एवं समापन में एक साथ अनेक तेलों के पच्चक्खाण हुए। उपस्थिति आठ दिवसों में 500 से अधिक रही। आठ दिवस दोनों स्थानकों में प्रतिक्रमण, पौषध एवं संवर की उपस्थिति अभूतपूर्व रही। चातुर्मास के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक वीर भवन में हॉल भर जाने के पश्चात् लोग बाहर बरामदे में बैठ रहे हैं। सुखविपाकसूत्र के माध्यम से श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा जीवन को जीने की कला सिखाई जा रही है। अपने जीवन को लक्ष्य की ओर बढ़ाने की प्रेरणा दी जा रही है। आगम के अनुसार प्रतिदिन नये सूत्र दिये जा रहे हैं। यथा-आपके जीवन में दोष क्या हैं? किसी की क्षति, अहित एवं अनादर दोष है। जीवन के पाँच सूत्र प्रदान किये गए-सिद्धान्तों से समझौता नहीं, व्यवहार में कठोरता नहीं, वाणी में कटुता नहीं, आचरण में शिथिलता नहीं और जीवन में प्रमत्तता नहीं। जीवन रोने के लिए नहीं, खोने के लिए नहीं, कुछ होने के लिए बना है। आपका जीवन आराधक है या विराधक, कसौटी स्वयं तय करें।

चातुर्मास के दौरान भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर के तत्त्वावधान में स्व. श्री टीकमचन्दजी हीरावत की प्रेरणा से श्री राजीवजी-नीताजी डागा परिवार, जयपुर हाल निवासी ह्यूस्टन (यू.एस.ए.) के सहयोग से एवं श्रीसंघ मेड़ता द्वारा 6 से 8 सितम्बर को विशाल दिव्यांगता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उनके करुण जीवन को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला। शिविर के दौरान कृत्रिम पैर-43, कृत्रिम हाथ-23, ट्राइसाइकिल-96, व्हील चेयर-51, श्रवण यन्त्र-241, केलिपर-43, बैशाखी-53, छड़ी-21 इस प्रकार कुल 571 दिव्यांगों को उपकरण वितरित किये गये। उनके चेहरों पर सन्तोष की मुस्कान देखकर आत्म तृप्ति हुई। प्रतिदिन तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा मांगलिक के साथ जीवन में दु:खों के कारण मांस-भक्षण, शराब आदि अवगुणों के त्याग की प्रेरणा दी गई। शिविर के दौरान माननीय एस.डी.एम., तहसीलदार, नगरपालिका चैयरमेन, प्रधान-पंचायत समिति, अधिशाषी अधिकारी, वाइस चेयरमेन द्वारा शिविर का अवलोकन किया गया एवं क्षेत्र को मानवता की सौगात के लिए आभार व्यक्त किया।

डॉ. रक्षकमलजी लोढ़ा द्वारा 18 सितम्बर को वीर भवन में शिविर के दौरान पैर, घुटना दर्द, कमर दर्द, माइग्रेन आदि के लगभग 120 रोगियों को इलाज एवं परामर्श दिया गया। भोजनशाला में कार्यरत सभी 17 कर्मचारियों को गुटखा, बीड़ी, मांस सेवन, मदिरा आदि के त्याग की प्रेरणा कर प्रत्याख्यान कराये गये। श्री तरुणजी बोहरा द्वारा युवक-युवतियों को 'लक्ष्य अभी दूर नहीं' की प्रेरणा दी गई। डॉ. प्रसन्नजी सिंघवी-दिल्ली, श्री राजेन्द्रजी लुंकड़-ईरोड़, श्रीमती प्रमिलाजी धोका-मैसूर के उद्बोधन कराये गये। यह चातुर्मास अनेक आयामों के साथ गतिशील है।

-हस्तीमल डोसी, मन्त्री

महासतीवृन्द के चातुर्मासों में धर्मसाधना

सरवाड़ (अजमेर)–व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा–3 सुखसातापूर्वक विराजित हैं। पर्युषण महापर्व उत्साह, उमंग, हर्षोल्लास, त्याग, तपस्या, धर्माराधना के साथ मनाया गया। पर्युषण पर्व के दौरान स्थानीय संघ के द्वारा प्रवचन के समय 8.30 बजे से 10.30 बजे तक प्रतिष्ठान बन्द रखे गये। पर्युषण पर्व के दौरान प्रवचन–प्रतिक्रमण में लगभग 250–275 की संख्या रहती थी। अब तक सम्पन्न तपस्याएँ– 11 की तपस्या 2, 9 की तपस्या 2, अठाई की तपस्या 2, तेले की तपस्या 45, बेले की तपस्या 8, चौले की तपस्या 1, 2 माह उपवास (एकान्तर) 5, एकाशन का मासखमण 2, एकासन की अठाई 12, सिद्धितप एकाशन 1, सामूहिक एकाशन 70 (प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म.सा. की जन्म–जयन्ती पर), 10 प्रत्याख्यान, आजीवन शीलव्रत श्री वीरेन्द्रजी कक्कड़ द्वारा, क्रोध विजय का मासखमण आदि। पर्युषण पर्व के दौरान आठों दिनों में 230 अष्टप्रहर पौषध/संवर हुए। आठों दिन नवकार मन्त्र का जाप 24 घण्टे भाइयों में एवं 12 घण्टे का जाप बहिनों में रखा गया। प्रात:काल अंतगडदशासूत्र वाचन एवं ज्ञान, दर्शन आदि विषयों पर तीनों महासतियाँजी द्वारा सारगर्भित प्रवचन फरमाया गया। मध्याह्न में उपासकदशासूत्र का वाचन एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। संवत्सरी पर्व के दिन प्रवचन में 18 पापों की आलोचना हुई। दो माह तक एकाशन, आयंबिल, उपवास की लड़ी नियमित चली। अभी नींवी की लड़ी चल रही है। रविवार को दोपहर में धार्मिक कक्षा में 30–35 बच्चे नियमित भाग ले रहे हैं। महिलाएँ अनेक थोकड़े आदि सीख रही हैं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षाओं के पाठ्यक्रम का भी अध्ययन कर रही हैं। *–वीरेन्द्र कक्कड़, मन्त्री*

बाड़मेर–व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा–4 की सन्निधि में 8 दिन पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में धर्म–ध्यान का ठाट लगा रहा। भाइयों में 8 दिन तक 12 घण्टे का लगातार नवकार मन्त्र का जाप तथा बहिनों में 24 घण्टे का जाप हुआ। सुबह सूर्योदय से प्रार्थना, 9 से 11 बजे तक प्रवचन, फिर 2 से 3 बजे आगमवाचनी तथा दोपहर में 3 से 4 बजे तक प्रतियोगिता और सायंकाल प्रतिक्रमण एवं संवर–पौषध में श्रावक श्राविकाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। पर्व के 8 दिनों में 10 अठाई, 3 पचोला, 20 तेले, 4 बेले, 23 एकाशन की अठाई और शील व्रत सहित अनेक व्रत प्रत्याख्यान हुए। रात्रि–संवर–पौषध में बहिनों में लगभग 30 तथा भाइयों में 15 की संख्या रही। *–मूलचंद गोगड़, मन्त्री*

गंगावती–व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म. सा. आदि ठाणा–5 सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही आयम्बिल एवं तेले की लड़ी निरन्तर रूप से चल रही है। श्रीमती सुनीताजी कोठारी (धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रजी कोठारी) के 33 एवं उनकी सुपुत्री सुश्री रक्षाजी कोठारी के बीस साल की छोटी उम्र में 30 उपवास, ऐसे दो मासक्षमण सुखसातापूर्वक पूर्ण हुए। अब तक सोलह 1, पन्द्रह 2, ग्यारह 2, नौ 3, अठाई 8 की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। तपस्वी को अभिनन्दन पत्र भेंट किए गए। पर्युषण पर्व के दौरान नमस्कार महामन्त्र का जाप, विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं सामूहिक एकाशन भारी उत्साह के साथ सम्पन्न हुए। भावी आचार्यश्री के जन्मदिवस पर एवं मासक्षमण तप की अनुमोदना में 50 से 60 सामूहिक एकाशन हुए। रोज सुबह नवयुवकों की कक्षा, रविवार को बच्चों की कक्षा एवं प्रवचन में अनेक ग्राम–नगरों से काफी संख्या में दर्शनार्थी बन्धुओं का आवागमन गतिमान है। धर्मध्यान एवं तपत्याग का ठाट लगा हुआ है। रायचूर श्रीसंघ के साथ मुमुक्षु बहिन सुश्री स्नेहाजी भण्डारी वीर परिवार सहित दीक्षा से पूर्व महासतीजी के दर्शनार्थ पधारे। *–कैलाश कोठारी, अध्यक्ष–नवयुवक मण्डल*

हिण्डौन सिटी–व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा–6 का वर्षावास आध्यात्मिक गतिविधियों, तपाराधना एवं ज्ञान–ध्यान से गतिमान है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही आयंबिल, एकाशन, उपवास एवं तेले

की लड़ी चल रही है। पर्युषण महापर्व में निम्न धार्मिक गतिविधियाँ सम्पन्न हुई- प्रात: प्रार्थना, अंतगडदशासूत्र का वाचन, प्रवचन, दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन हुआ। तपस्या में तेले-20, अठाई-2 एवं 11 की तपस्या-एक। श्री राजेशजी सुपुत्र श्री हुकमचंदजी जैन के 31 दिवसीय मासक्षपण का सम्पूर्ति दिवस 10 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। संवत्सरी के दिन-लगभग-150 उपवास हुए। महासती श्री रम्यप्रभाजी म.सा. की19 दिन की तपस्या पूर्ण हुई।

-प्रवीण कुमार जैन, मन्त्री

खोह (अलवर)-व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा-3 सुखे समाधौ विराजित हैं। यहाँ चातुर्मास के प्रारम्भ से ही उपवास, संवर एवं एकाशन की लड़ी निरन्तर चल रही है। भावी आचार्यश्री के जन्मदिवस पर दो दिवसीय कार्यक्रम रहा। 5 अगस्त को 36 वन्दना करने का कार्यक्रम एवं 6 अगस्त को 70 नींवी तप सम्पन्न हुए। प्रवचन में तीनों महासतीजी ने भावी आचार्यश्री की जीवनी पर प्रकाश डाला। बालिकाओं ने भी लघु नाटिका के माध्यम से भावी आचार्यश्री के जीवन पर अच्छी प्रस्तुति दी। पर्युषण महापर्व में कर्मचूर आराधना करवाई गयी। आठों ही दिन सामायिक की अलग-अलग पचरंगी हुई एवं आठों ही दिन नवकार मन्त्र का अखण्ड जाप चला। तपस्या भी अच्छी संख्या में हुई। घरों की संख्या कम होते हुए भी 5 अठाई, 11 तेले, 4 बेले एवं 60 के लगभग उपवास हुए। आगे भी सिद्धि तप, चन्द्रकला तप आदि तपस्याएँ चल रही हैं। गाँव में 8 घरों की बस्ती है, पर उत्साह ज्यादा है। बालिकाएँ भी नन्दीसूत्र, दशवैकालिकसूत्र एवं थोकड़े सीख रही हैं। संघ के सभी सदस्य हर्षित एवं प्रमुदित भाव से, तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान, प्रवचन, प्रतियोगिता प्रश्नोत्तर के माध्यम से लाभ ले रहे हैं। *-दिव्या जैन*

चौथ का बरवाड़ा-व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं। प्रवचन के पश्चात् महासती श्री संगीताश्रीजी द्वारा सूत्रकृताङ्गसूत्र का वाचन कर जैन दर्शन के महत्त्व को बताया जा रहा है एवं अवकाश के दिन संस्कार केन्द्र के बालकों को दोपहर में 10 दुर्लभ बोल एवं भगवान महावीर स्वामी के जीवन की जानकारी प्रदान की जा रही है। महासती श्री भविताश्रीजी म.सा. द्वारा दशवैकालिकसूत्र के माध्यम से साधु-जीवन में आचरित सम्यक् क्रियाओं की जानकारी प्रदान की गई। महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. द्वारा उत्तम जीवन-निर्माण हेतु 'भूतकाल को भूलो, वर्तमान से जुड़ो, भविष्य को सुधारो' जैसे अनमोल सूत्र प्रवचन के माध्यम से फरमाये जा रहे हैं। तपस्या का क्रम बराबर बना हुआ है। सुश्री साक्षी जैन सुपुत्री श्री पारसमलजी जैन ने 8 की तपस्या पूर्ण की है। 'सिद्धि-तप साधना' चल रही है, जो आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा दिवस पर पूर्ण होगी। चातुर्मास में वीर परिवारजनों ने एवं श्रद्धालुगण का आवागमन चल रहा है। सभी जन महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन का लाभ ले रहे हैं। 24 सितम्बर को 'श्राविका गौरव दिवस' पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित परीक्षा सम्पन्न हुई। *-महेन्द्र कुमार जैन, मन्त्री*

मदनगंज-किशनगढ़ में 'पंच कारण-समवाय' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न

जिनशासन गौरव, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में ओसवाल भवन, मदनगंज-किशनगढ़ में 25 सितम्बर, 2022 को 'पंच कारण-समवाय' विषय पर संगोष्ठी अत्यन्त ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक रही। संगोष्ठी का आयोजन श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मदनगंज-किशनगढ़ के तत्त्वावधान में हुआ। संगोष्ठी में सन्त-मुनिराजों एवं विद्वज्जनों ने अपने शोधपरक विचारों से उपस्थित श्रावक-श्राविका समुदाय को लाभान्वित किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र प्रात:काल प्रवचन के समय 9.00 बजे मंगलाचरण से प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं जिनवाणी के प्रधान सम्पादक **डॉ. धर्मचन्दजी जैन**, जयपुर ने **'जैनदर्शन में कारण-कार्य का स्वरूप तथा पंच कारण-समवाय का उद्भव और विकास'** विषय पर बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। आपने कारण-कार्य सिद्धान्त का स्वरूप बताया तथा जैनधर्म के परिप्रेक्ष्य में निमित्त और उपादान कारणों के स्वरूप को प्रतिपादित करते हुए कहा कि जिसमें कार्य उत्पन्न होता है उसे उपादान कारण एवं जो कार्य उत्पन्न करने में सहायक होता है उसे निमित्त कारण कहते हैं। आपने बताया कि पंच कारण-समवाय के उद्भव का श्रेय आचार्य सिद्धसेन दिवाकर को एवं विकास का श्रेय आचार्य हरिभद्रसूरि, अभयदेवसूरि, शीलांकाचार्य, अमृतचन्द्र, उपाध्याय यशोविजय, विनयविजय, तिलोकऋषिजी आदि को है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष, आगम एवं कर्म-सिद्धान्त के ज्ञाता **श्री जितेन्द्रजी डागा**, जयपुर ने **'सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में पंच कारण-समवाय की भूमिका'** विषय पर धाराप्रवाह वक्तव्य प्रस्तुत किया। आपने कहा कि सम्यग्दर्शन के अभाव में यह जीव जीती हुए बाजी को भी अनेक बार हार चुका है। आपने सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में पंच कारण-समवाय को बहिरंग कारण एवं अंतरंग कारणों के रूप में बताकर पुरुषार्थ की महत्ता सिद्ध की।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अपने विषय **'मुक्ति-प्राप्ति में पंच कारण-समवाय की भूमिका'** पर प्रवचन देते हुए फरमाया कि जिस प्रकार हाथ की चार अंगुलियाँ और अंगूठे में रही एकता ही हाथ के द्वारा कार्य सम्पन्न कराती है, उसी प्रकार मुक्ति प्राप्ति में भी इन पंच कारण समवाय की भूमिका रहती है। जैनधर्म पाँचों ही समवायों को मानता है और कार्य सिद्धि में इन समवायों की भूमिका मुख्यता-गौणता के रूप में स्वीकार करता है। मुक्ति प्राप्ति में पुरुषार्थ मुख्य कारण है और शेष चार कारण गौण रूप से सहकारी रहते हैं। स्वभाव से जीव का भवी होना, काल से चरमावर्त में आना, नियति से शुक्ल पक्षी का मोक्ष जाना, कर्म से चारित्र मोहनीय कर्म के प्रभाव का कम होना और पुरुषार्थ से अनन्त गुणी विशुद्धि का होना- इन पाँचों कारणों की समन्विति से ही मुक्ति की प्राप्ति सम्भव है। अनेक संघों के आगमन एवं स्थानीय श्राविका के मासखमण का सम्पूर्ति दिवस होने से उपस्थिति बहुत अच्छी थी। इस सत्र का सञ्चालन श्री त्रिलोकचन्दजी जैन द्वारा किया गया।

द्वितीय सत्र दोपहर 1.45 बजे से प्रारम्भ हुआ, जिसमें साधनाशील दर्शनशास्त्री **डॉ. राजकुमारजी छाबड़ा**, जयपुर ने **'प्रथम काललब्धि का रहस्य'** विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि काललब्धि की भूमिका समकित प्राप्ति में विशेष होती है। आपने तीन प्रकार की काल लब्धि बताकर प्रथम एवं तृतीय काललब्धि भवी को ही तथा द्वितीय भवी-अभवी दोनों को होना बताया। वैज्ञानिक **डॉ. अनिल कुमारजी जैन** ने **'कार्य सिद्धि में पुरुषार्थ की महत्ता'** विषय पर विचार प्रकट किये। आपने भाग्य और पुरुषार्थ में अन्तर करते हुए अपनी-अपनी जगह दोनों को स्वीकार किया। पुरुषार्थ से किस प्रकार पूर्वकृत कर्मों की ताकत को तोड़ा जा सकता है, इसको रेखाचित्रों के द्वारा भी प्रदर्शित किया गया। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार **श्री धर्मचन्दजी जैन** ने **'जैन धर्म में नियतिवाद का स्वरूप'** विषय पर कहा कि आगम उपासकदशाङ्ग में शकडाल एवं कुण्डकौलिक श्रावक नियतिवादी थे, उन्हें तर्क-प्रमाण द्वारा पुरुषार्थ की महत्ता समझाई गयी। सूत्रकृतांग में वर्णित नियति विषयक गाथा भी प्रस्तुत की गयी। तत्पश्चात् आध्यात्मिक शिक्षा समिति के शिक्षक **श्री त्रिलोकचन्दजी जैन** ने **'कार्य सिद्धि में पंच कारण-समवाय की मुख्यता-गौणता'** विषय पर दोहों के माध्यम से प्रकाश डाला और एक-एक क्षेत्र में एक-एक कारण की मुख्यता प्रदर्शित की।

अन्त में **श्रद्धेय श्री अविनाश मुनिजी म.सा.** ने **'चारित्र-प्राप्ति में पंच कारण-समवाय की भूमिका'** विषय पर सारगर्भित प्रवचन फरमाया। भरत एवं ऐरवत क्षेत्र की अपेक्षा अवसर्पिणी काल का 3, 4, 5वाँ आरा एवं उत्सर्पिणी काल का 3, 4 आरा चारित्र पालन का काल है। स्वभाव की अपेक्षा औदयिक भाव रूप मनुष्य गति,

पञ्चेन्द्रिय जाति आवश्यक है। निदानकृत जीव चारित्र प्राप्त नहीं करता यह नियति है। चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम चारित्र पालन में अनिवार्य है और पुरुषार्थ भावों का रखना जरूरी है। इस प्रकार आपने पंच कारण-समवाय की भूमिका का कथन किया। डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने इस सत्र का सञ्चालन किया तथा विचार व्यक्त करने वाले वक्ताओं के सम्बन्ध में विभिन्न बिन्दुओं पर समीक्षात्मक टिप्पणियाँ की।

अन्त में 4.45 बजे समापन-सत्र आयोजित हुआ, स्थानीय पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा संगोष्ठी के विषय पर हर्ष व्यक्त किया गया। संगोष्ठी में मदनगंज-किशनगढ़ के श्रावक-श्राविकाओं की दिन भर उपस्थिति रहने से संगोष्ठी का विशेष स्वरूप बना तथा चर्चा भी हुई। *-भागचंद कोचेटा*

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा-परीक्षा) कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा 08 जनवरी-2023, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

1. आगमों का सार थोकड़ों में समाहित है। तत्त्व ज्ञान में रुचि रखने वालों से निवेदन है कि वे इस परीक्षा में भाग लेने हेतु अपनी तैयारी प्रारम्भ कर दिरावें। स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहिनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म-दलाली तथा कर्म-निर्जरा का महान् लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार और मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-अशोक बाफना, संयोजक-9444270145, आकाश चौपड़ा, सचिव-9413033718, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-9351589694 शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-फोन: 0291-2630490, 2636763, व्हाट्स अप नम्बर 7610953735 Website:- jainratnaboard.com, E-Mail:- shikshanboardjodhpur@gmail.com *-आकाश चौपड़ा, सचिव*

आचाराङ्गसूत्र पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 06 अगस्त, 2022 को महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 69वें जन्म-दिवस से आचाराङ्गसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया गया है। पुस्तक का मूल्य ₹ 70/- तथा प्रश्न पुस्तिका का मूल्य ₹ 30/- रखा गया है। (डाक खर्च अलग)

इस प्रतियोगिता में **प्रथम पुरस्कार** ₹ 21,000/-, **द्वितीय पुरस्कार** ₹ 15,000/-, **तृतीय पुरस्कार** ₹ 11,000/- तथा **प्रथम 20 प्रतियोगियों** को ₹1,000/-, **विशेष पुरस्कार** 90% या इससे अधिक प्राप्तांक वालों को ₹500/-, 80% से 89% तक प्राप्तांक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को ₹200/-, 60% से 79% तक प्राप्तांक वाले प्रतिभागी को ₹ 100/- **सान्त्वना पुरस्कार** प्रदान किया जायेगा।

प्रश्न पुस्तिका को पूर्ण कर जमा कराने की अन्तिम तिथि 29 दिसम्बर, 2022 (परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के तृतीय स्मृति दिवस) रखी गई है। **आचाराङ्गसूत्र पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका प्राप्ति तथा जमा कराने का स्थान-**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-324003 (राज.) फोन 0291-2636763, 9413132362

विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट के द्वारा भेजी जायेगी। अत: प्रतियोगिता प्रतिभागी प्रश्न-पुस्तिका में अपना नाम, बैंक का नाम, बैंक खाता संख्या, आई.एफ.सी. कोड के साथ बैंक विवरण की जानकारी जैसे पासबुक में मुद्रित हुआ है, वैसा ही साफ खुले अक्षरों में लिखकर भेजें।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित आचाराङ्गसूत्र पर आधारित खुली किताब प्रतियोगिता से सम्बन्धित प्रश्न-पुस्तिका में निम्नलिखित संशोधन हैं-

1. प्रश्नावली-3 का 5- 'अतिताप' की जगह 'अतिपात' पढ़ें।
2. प्रश्नावली-4 में चौथे प्रश्न में 'कारण' के स्थान पर 'चरण' पढ़ा जाये।
3. प्रश्नावली-5 का 5- 'आसक्ति' की जगह 'वस्तु' पढ़ें।
4. प्रश्नावली-6 का 24- 'व्याप्त' की जगह 'परिव्याप्त' पढ़ें।
5. प्रश्नावली-13 में प्रश्न संख्या-4, 15, 18 तथा 22 में अन्त्याक्षरी क्रम मिलाने के लिए मिलता-जुलता शब्द का प्रयोग किया जा सकता है।
6. प्रश्नावली-14 का 5- 'वल्लभी' के स्थान पर 'मथुरा' पढ़ें।
7. प्रश्नावली-14 में पृष्ठ संख्या-23 पर जैन प्रतीक के नीचे के बॉक्स में क्रमांक 2 के स्थान पर 25 पढ़ा जाये। साथ ही क्रमांक 11 में खाली बॉक्स 6 के स्थान पर 5 ही माने जायें।
8. प्रश्नावली-18 में प्रश्न संख्या 10 में पृष्ठ संख्या लिखने का एक बॉक्स अधिक है।
0. प्रश्नावली-19 में पृष्ठ संख्या 29 पर पृष्ठ संख्या लिखने का एक बॉक्स अधिक है।
10. प्रश्नावली-20 में 3 नम्बर के दिल के चित्र में छठी पंक्ति में 'ब' के स्थान पर 'व' पढ़ा जाये।
    प्रश्नावली-20 में 4 नम्बर के दिल के चित्र में तीसरी पंक्ति में 'भि' के स्थान पर 'मि' पढ़ा जाये।
    प्रश्नावली-20 में 4 नम्बर के दिल के चित्र में सबसे नीचे 'ष' के स्थान पर 'श' पढ़ा जाये।

-श्वेता कर्नावट, महासचिव

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारूरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों केजीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

42. श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर (राजस्थान) 25,000/-
43. श्री सम्भवजी कर्णावट, एम.डी. रोड़, जयपुर (राजस्थान) 24,000/-
44. श्रीमती सुचित्राजी धर्मपत्नी श्री करनराजजी गुलेच्छा, जोधपुर (राजस्थान) 24,000/-
45. श्री विमलजी-श्रीमती बीनाजी ललवाणी, जयपुर (स्व. श्री चुन्नीलालजी-स्व. श्रीमती सुशीलादेवीजी ललवाणी की पुण्यस्मृति में) 24,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***GAJENDRA CHARITABLE TRUST***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***10332191006750***, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Custumer ID : 35288297 **निवेदक :** डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्यम 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारूरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं केजीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिकरूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

9. श्री अमरसिंहजी मेहता (तृप्ति अमर मेहता स्माइल फाउण्डेशन, दिल्ली) 1,20,000/-
10. श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर (राज.) 25,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्राँजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***51026632997***, Bank Name : *SBI*, Branch : Bapu Bazar, Jaipur, Ifsc Code : SBIN0031843 **निवेदक :** अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

जयपुर एवं रायपुर में विद्वत्संगोष्ठियाँ

आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज की सन्निधि में 16 से 18 सितम्बर, 2022 को जयपुर में अन्तरराष्ट्रीय

संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें लगभग 125 विद्वानों ने भाग लिया। 16 सितम्बर को संगोष्ठी का शुभारम्भ मालवीयनगर स्थित अपभ्रंश साहित्य अकादमी में हुआ। इसी के साथ अपभ्रंश साहित्य अकादमी के नवीन भवन का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर अकादमी के निदेशक प्रो. कमलचन्दजी सोगानी ने सम्बोधित किया। आर. के. मॉर्बल के स्वामी श्री अशोकजी पाटनी के सहयोग से भवन का निर्माण हुआ है, वे भी किशनगढ़ से उपस्थित थे। 17 एवं 18 सितम्बर के कार्यक्रम भट्टारकजी नसियाँ में सम्पन्न हुए। जिनवाणी के प्रधान सम्पादक प्रो. धर्मचन्दजी जैन ने 'भगवान महावीर की अहिंसा का लक्ष्य' विषय पर विचार व्यक्त किए।

23 से 25 सितम्बर, 2022 को रायपुर (छत्तीसगढ़) में आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज के सान्निध्य में 'आचार्य समन्तभद्र विरचित आप्तमीमांसा ग्रन्थ' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रवर्तित हुई। इसमें लगभग 20 विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। जिनवाणी के प्रधान सम्पादक प्रो.धर्मचन्दजी जैन ने 'अपेक्षावाद एवं अनपेक्षावाद की समीक्षा' विषय पर शोधपूर्ण विचार व्यक्त किए। देश के विशिष्ट विद्वान् इस संगोष्ठी में उपस्थित थे, जिनमें श्वेताम्बर परम्परा से एक ही विद्वान् को आमन्त्रित किया गया था।

25वें महावीर पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन

महावीर पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित करने हेतु 03 सितम्बर, 2022 को राजस्थान के पाली जिले के जाडन ग्राम में स्थित महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस संस्थान में 25वें महावीर पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री प्रसन्नचन्दजी जैन ने स्वागत उद्बोधन देते हुए सभी आमंत्रित अतिथियों का आभार प्रकट किया। **समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री कलराजजी मिश्र** ने महावीर पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए एवं महावीर पुरस्कार समारोह की स्मारिका का विमोचन किया। महामहिम राज्यपाल ने अपने उद्बोधन में भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद आदि शिक्षाओं को वर्तमान सन्दर्भ में सर्वाधिक प्रासङ्गिक बताते हुए जीवन में उतारने का आग्रह किया। महामहिम राज्यपाल ने कहा कि भगवान महावीर का दर्शन बहु आयामी है जो हमें ''जीओ और जीने दो'' का मार्ग तो प्रस्तुत करता ही है साथ ही पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिकी संतुलन की सीख भी देता है।

समारोह में चयन जूरी के सदस्य **श्री डी.आर. मेहता**, सेवानिवृत्त आई.ए.एस., पूर्व अध्यक्ष भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड एवं भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश **न्यायमूर्ति श्री जी.एस. सिंघवी**, सोजत विधायक **श्रीमती शोभाजी चौहान**, पाली विधायक **श्री ज्ञानचन्दजी पारख** सहित विभिन्न विशिष्ट अतिथियों और गणमान्यजनों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति देकर सम्मान समारोह का मान बढ़ाया।

भगवान महावीर फाउण्डेशन के द्वारा प्रतिवर्ष चार श्रेणियों में उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वाले व्यक्ति/संस्थाओं को प्रतिष्ठित महावीर पुरस्कार से अलंकृत किया जाता है, जिसमें प्रत्येक श्रेणी के पुरस्कार विजेताओं को 10 लाख रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

ऐसे व्यक्ति और संगठन जो समाज की बुनियादी सेवाओं से वञ्चित लोगों और जरूरतमन्दों के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ भाव से सेवा में जुटे हैं, उनकी पहचान कर प्रोत्साहन और सम्मानित करने के उद्देश्य से श्री एन. सुगालचन्द जैन ने वर्ष 1994 में भगवान महावीर फाउण्डेशन की स्थापना की।

25वें महावीर पुरस्कार सम्मान समारोह में सम्मानित किये गए पुरस्कार विजेताओं के नाम–1. **अहिंसा और शाकाहार**–पीपल फॉर एनिमल्स, सिरोही (राजस्थान)। 2. **शिक्षा**–सत्यनारायणन मुंडयूर,

अरुणाचल प्रदेश। 3. **चिकित्सा**–विवेकानन्द मिशन आश्रम नेत्र निरामय निकेतन, पश्चिमी बंगाल। 4. **सामुदायिक और सामाजिक सेवा**– नागालैंड गाँधी आश्रम, नागालैंड। ट्रस्टी श्री प्रमोदजी जैन ने फाउण्डेशन का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और ट्रस्टी श्री प्रतीकजी जैन ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

-एन. सुगाल चन्द जैन, संस्थापक ट्रस्टी

संक्षिप्त समाचार

जयपुर-विश्व शान्ति हेतु राजमन्दिर सिनेमा हॉल में श्री जयदीपजी ढड्ढा परिवार द्वारा 21 अगस्त, 2022 को एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें पद्मभूषण डॉ. शिवकुमार सरीन एवं जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने 'विश्वकल्याण कारिणी अहिंसा' विषय पर उद्बोधन दिया। वक्ताओं ने करुणा एवं अनुकम्पा के पक्ष को उजागर करने के साथ प्राणिरक्षा, पर्यावरण-संरक्षण एवं विश्व शान्ति के लिए अहिंसा की महत्ता को उजागर किया। इस अवसर पर एक नाटिका अभिनीत की गई एवं अहिंसा की महत्ता पर फिल्म दिखाई गई। अन्त में समस्त प्राणियों के प्रति मंगल कामना से युक्त प्रार्थना की गई। ढड्ढा परिवार ने सबका स्वागत किया।

-जयदीप ढड्ढा

बीकानेर-शान्त क्रान्ति संघनायक आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. के पावन सान्निध्य में आयोजित 'मूलागम व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत 17 अगस्त, 2022 को 'दशवैकालिकसूत्र में प्रतिपादित सिद्धान्तों की जीवन में उपादेयता' विषय पर विश्वभारती-शान्ति निकेतन (पं. बंगाल) से समागत प्राकृतविद् प्रोफेसर जगतरामजी भट्टाचार्य का तथा 20 सितम्बर, 2022 को 'नन्दीसूत्र - वर्तमान समय में' विषय पर जैन विश्वविद्यालय, बैंगलोर से समागत डॉ. तृप्ति जैन का विशेष व्याख्यान ढड्ढा, कोठड़ी में विशाल जनसमूह के मध्य आयोजित हुआ।

-डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

बधाई

श्री विवान जैन

श्री सिद्धान्त जैन

श्री रक्षित लोढ़ा

सूरत-होनहार छात्र श्री विवानजी सुपुत्र श्रीमती रीनाजी-विशालजी एवं दौहित्र श्री प्रकाशचन्दजी जैन प्राचार्य ने जार्जिया में आयोजित फाइड वर्ल्ड केडेट्स चेस चैम्पियनशिप-2022 में 9वीं रैंक प्राप्त की है।

कोटा-श्री सिद्धान्तजी जैन (आई.आई.टी.) सुपुत्र श्री सन्दीपजी-श्रीमती अनिताजी जैन (सुपौत्र श्री नाथूलालजी-स्व. श्रीमती कमलेशजी जैन) की थॉट स्पॉट इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलूरू में सॉफ्टवेयर डवलपर के पद पर नियुक्ति हुई है।

जोधपुर-श्री रक्षितजी सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी लोढ़ा (सी.ए.)-श्रीमती मोनिकाजी लोढ़ा, सुपौत्र स्व. श्री जवरीलालजी-स्व. श्रीमती मोहनकँवरजी लोढ़ा (हीरादेसर वाले) ने सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर-संघसेवी, सहज-सरल हृदया, सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री विमलचन्दजी डागा

(पुत्रवधू स्व. श्री प्रेमचन्दजी, पौत्रवधू स्व. श्री कन्हैयालालजी डागा) का 17 सितम्बर, 2022 को 75 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप निरन्तर धर्मध्यान, शास्त्र अध्ययन करती रहती थी। सन्त-सतियों को गोचरी बहराने की

प्रबल रही भावनाओं के कारण आपका मरण आघातरहित, सहज, धर्ममय माहौल के बीच हुआ। माँ, सास, काकी, बड़ी बहन होकर भी उन्होंने शासक भाव नहीं रखा और लाघव गुण के कारण उनका जीवन विराट् हो गया था। कृतज्ञता का भाव उनका अद्भुत गुण था, जो उन्हें विशिष्ट बनाता था। हर सन्त-निर्ग्रन्थ में उन्हें आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की मूरत दिखाई देती थी और सभी निर्ग्रन्थ मुनिराजों एवं महासतियों की हृदय से उल्लास भाव से सेवा करती थी। आपके पिताश्री लादूलालजी बिरानी, बिजयनगर एक विशिष्ट श्रावकरत्न थे। आपने बाल्यकाल में भक्तामर, अनेक स्तवन एवं तत्त्वज्ञान स्वयं श्रद्धेय प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म.सा. के मुखारविन्द से सीखा। आप संघनिष्ठ सुश्रावक श्री विमलचन्दजी डागा की सच्चे अर्थों में धर्मसहायिका थी। उनकी भावनानुसार 37 वर्ष की अल्पवय में ही आपने शीलव्रत की स्वीकृति दे दी थी। श्री विमलचन्दजी डागा की सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में मन्त्री के रूप में उल्लेखनीय सेवाएँ रहीं एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ जयपुर संघ, लालभवन में दीर्घकाल से अद्वितीय सेवाएँ अनवरत चल रही हैं और आप रत्नसंघ के संरक्षक मण्डल के सदस्य भी हैं। आपके बड़े सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमारजी हाँगकाँग में भी धर्मध्यान के माहौल को प्रदान करने में सदैव अग्रणी रहते हैं। आपके मझले सुपुत्र श्री जितेन्द्रजी डागा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। आपके भतीजे श्री विनयचन्दजी डागा वर्तमान में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष हैं। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रों सहित भरापूरा परिवार धर्म संस्कारों से सुसज्जित परिवार की नींव को और मजबूत करके गई हैं। *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

न्यू जर्सी (अमेरिका)-धर्मनिष्ठ, प्रमुख रत्न व्यवसायी सुश्रावक श्री धर्मचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री इन्दरचन्दजी हीरावत

का 27 अगस्त, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आप दृढ़निश्चयी, सरल स्वभाव के धनी, मधुर व्यवहारी, सहनशील और हँसमुख थे। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित स्तम्भ परिवारों में से एक है। आप 30 वर्ष की युवावय में ही रत्न व्यवसाय हेतु अमेरिका चले गये थे। विगत 47 वर्षों से देश-विदेश में रहते हुए आपने अपने परिवार को धार्मिक संस्कारों से जोड़े रखा। आप प्राय: परोपकार के कार्य गुप्त रूप से सम्पादित करते थे। आपके पिताश्री स्व. श्री इन्दरचन्दजी हीरावत श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, लालभवन-जयपुर के अध्यक्ष एवं जोगनियाँ माता में चिकित्सा क्षेत्र में योगदान देने वाले विशिष्ट व्यक्तित्व थे। आपके भ्राता श्री पारसचन्दजी हीरावत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती शकुन्तलाजी (सुपुत्री स्व. श्री पूनमचन्दजी बड़ेर) वात्सल्य की प्रतिमूर्ति हैं। आप अपने पीछे संस्कारवान एक सुपुत्र एवं दो सुपुत्रियों से भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आपके परिवार द्वारा निर्मित रत्न स्वाध्याय भवन, तख्तेशाही रोड़ का अनेक वर्षों से श्रावक-श्राविकाएँ साधना-आराधना में उपयोग कर रहे हैं। सन्त-सतीवृन्द भी यहाँ पर शेखेकाल में विराजते रहते हैं। *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका वीरमाता श्रीमती चञ्चलदेवीजी धर्मसहायिका श्रावकरत्न स्व. श्री शान्तिलालजी

देसड़ला का 31 अगस्त, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित थीं। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपकी सांसारिक

सुपुत्री वर्तमान में महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा., दामाद श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. एवं दौहित्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. रत्नसंघ में जिनशासन को देदीप्यमान कर रहे हैं। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आपने 2 वर्षीतप एवं सन् 1974 में एक मासक्षपण की तपस्या भी की थी। वृद्धावस्था में प्रतिदिन म.सा. के प्रवचन में जाना, प्रतिदिन लगभग 15 सामायिक करना, दोनों समय प्रतिक्रमण करना एवं नवकारसी, पोरसी, उपवास आदि करती ही रहती थी। आपकी भावना के अनुरूप परोपकार स्वरूप मरणोपरान्त आपकी देह एवं नेत्र का दान किया गया है।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बस्तीमलजी सुपुत्र स्व. श्री पुखराजजी चोरड़िया का 10 सितम्बर, 2022 को 77 वर्ष

की वय में देहावसान हो गया। आप रत्नसंघ के सुज्ञ, समर्पित, श्रद्धावान श्रावक थे। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में तथा संघसेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपने आचार्यश्री हस्ती की निकटता से सेवा की। आचार्यश्री हीरा के 2005 के एवं महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के 2011 के चेन्नई चातुर्मास में आपने सक्रिय सेवाएँ प्रदान की। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई चातुर्मासों में भी आपकी अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुई थी। आपने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में अतिरिक्त महामन्त्री पद का दायित्व एवं तमिलनाडु सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। आप प्रतिदिन 5 सामायिक मौन के साथ करते थे और आप स्वाध्याय प्रेमी थे। आपका जीवन तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान से ओतप्रोत था। आपके सुपुत्र श्री सुरेशचन्दजी ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड में संयोजक पद का दायित्व बखूबी निर्वहन करने के साथ ही संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद का भी दायित्व निभाया। श्री राजेश कुमारजी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर में सहमन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। चोरड़िया परिवार सदैव स्वधर्मी भाई-बहनों की सेवा के लिए तत्पर रहता है।

-अशोक बाफना, चेन्नई

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री बादलचन्दजी बाफना (भोपालगढ़ वाले) का 15

अगस्त, 2022 को 61 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धाभक्ति थी। आपके बड़े भ्राता श्री सुमतिजी बाफना भोपालगढ़ बकराशाला के अध्यक्ष पद का कार्य बहुत ही सुन्दर तरीके से देख रहे हैं तथा आपके बड़े भ्राता श्री कान्तिलालजी, अमृतलालजी संघसेवा में हमेशा तैयार रहते हैं। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रों एवं सुपुत्री से भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री प्रेमचन्दजी रांका का 22

अगस्त, 2022 को देहावसान हो गया। आप बहुत ही मिलनसार एवं शान्त स्वभाव की थी तथा जरूरतमन्द लोगों को खाना-खिलाना एवं उनकी सेवा करना आपको बहुत पसन्द था। आप धार्मिक कार्यों एवं दान-पुण्य करने में अग्रणी थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

-सन्तोष रांका, जोधपुर

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, सुश्रावक श्री प्रदीपजी मेहता का 17 सितम्बर, 2022 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धा-भक्ति थी। सबके साथ मिलनसार पूर्ण व्यवहार आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। आपके पूज्य पिताजी स्व. श्री नगराजजी मेहता ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सह-कोषाध्यक्ष पद का तथा अन्य कई संस्थाओं में

विभिन्न पदों पर रहकर अपना दायित्व निभाया था। आपके भ्राता आदरणीय श्री कमलजी मेहता संघ में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में मेहता परिवार सदैव तत्पर रहता है। आप रत्नसंघीय महासती श्री सरलकँवरजी म.सा. के सांसारिक पौत्र थे।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

सवाईमाधोपुर-अनन्य गुरुभक्त, शिक्षाविद् सुश्रावक श्री अरविन्दकुमारजी जैन सुपुत्र स्व. श्री बाबूलालजी जैन

(स्वाध्यायी) भेड़ोला वाले राजनगर-बजरिया का 23 सितम्बर, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी, उदारमना, कर्तव्यनिष्ठ, सरल, सौम्य, मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी, जीवदया प्रेमी, सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहने वाले श्रावक थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं। आपकी कर्तव्यनिष्ठ, श्रेष्ठ शिक्षण सेवा, प्रामाणिकता एवं उत्कृष्ट कार्य सेवाओं के फलस्वरूप आपको राजस्थान राज्य स्तर पर शिक्षक सम्मान से शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया गया था। आप अस्वस्थता के समय में भी समता भाव में रहे। आपका जीवन कथनी-करनी को चरितार्थ करने वाला था। साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा., महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.की सुशिष्या महासती श्री अदितिप्रभाजी म.सा. के आप सांसारिक फूफाजी थे। आपकी धर्म सहायिका श्रीमती सुशीलाजी जैन सरलमना एवं सन्त-सतियों की सेवा में तत्पर रहने वाली सुश्राविका हैं। *-धनसुरेश जैन*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, सुश्रावक श्री दानमलजी बाघमार का 18 सितम्बर, 2022 को कोलकाता में देहावसान

हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था एवं सबके साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण हेतु तत्पर रहते थे। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती गुलाबकँवरजी धर्मसहायिका श्री प्रसन्नराजजी कांकरिया

(पीपाड़सिटी वाले) का 30 अगस्त, 2022 को 68 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप सरलमना, शान्त, सहनशील, सेवाभावी एवं सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धावान थी। नित्य सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रवचन श्रवण करने वाली और जमींकन्द की त्यागी थी। आप अपने पीछे संस्कारों से सम्पन्न भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-पदमचन्द जे. कोठारी*

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पन्नालालजी सुपुत्र स्व. श्री धरमचन्दजी नाहर (कोसाना वाले), सेदापेठ का 07 अगस्त, 2022 को 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक थे। आचार्यश्री हस्ती, आचार्यश्री हीरा के अनन्य भक्त थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजुलाजी नाहर भी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की श्राविका हैं। आप अपने पीछे दो सुपुत्र एवं एक सुपुत्री से भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। *-कमल कुचेरिया*

जोधपुर-सन्तसेवी, उदारमना, श्रद्धानिष्ठ श्री रामेश्वर प्रसादजी आर्य का 10 सितम्बर, 2022 को देवलोक गमन हो

गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थे। आपका मण्डल कार्यालय से मधुर सम्बन्ध बना हुआ था। आपने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की अनेक पुस्तकें इण्डियन मैप सर्विस से बड़ी निष्ठा एवं तत्परतापूर्वक गुणवत्ता के साथ प्रकाशित की, जिसके लिए मण्डल उन्हें सदैव याद करता रहेगा।

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 89
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

16333 श्री पुनीतजी जैन, जयपुर (राजस्थान)
16334 श्री जयन्तजी जोधाणी, नागपुर (महाराष्ट्र)
16335 श्री विमलचन्दजी जैन, जयपुर (राजस्थान)
16336 श्रीमती कविताजी जैन, कोटा (राजस्थान)
16337 श्री आशीषजी जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
16338 श्री रंजनजी ललवाणी, बूँदी (राजस्थान)
16339 श्री नितिनजी जैन, जयपुर (राजस्थान)
16340 श्री मनीषजी बोगावत, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)
16341 श्री मोहित कुमारजी बुरड़, ब्यावर (राजस्थान)
16342 श्री पारसमलजी सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)
16343 श्री जय टी. बाघमारजी, चेन्नई (तमिलनाडु)
16344 श्री राहुल एस. बाफनाजी, नाशिक (महाराष्ट्र)
16345 श्री वीरेन्द्र भाईजी उचाट, कुडेलोर (तमिलनाडु)
16346 श्रीमती मोनिकाजी श्रीमाल, जयपुर (राजस्थान)
16347 श्री दिलीपजी मल्हारा, जलगाँव (महाराष्ट्र)
16348 श्री अमितजी बोगावत, पुणे (महाराष्ट्र)

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

11000/-श्रीमती राजकँवरजी धर्मपत्नी श्री चम्पालालजी, श्रीमती सुशीलाबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री राजेन्द्रजी, श्रीमती सपनाजी-श्री मनोजजी, ध्रुवजी सुराणा, श्रीमती शीतलजी-श्री श्रीपालजी बाँठिया, मैसूर, श्री राजेन्द्र कुमारजी सुराणा का 1 अगस्त, 2022 को संथारापूर्वक समाधिमरण होने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्रीमती शरबतदेवीजी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रजी डांगी, किशनगढ़, पुत्रवधू श्रीमती मोनिकाजी धर्मपत्नी श्री मनीषजी डांगी के 21 उपवास की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

5100/- श्रीमती शान्तिदेवीजी बाफना, किशनगढ़, श्रीमती रश्मिजी धर्मपत्नी श्री राजेशजी बाफना के 15 उपवास की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

5100/- श्री सौरभजी जैन, सवाईमाधोपुर, स्व. श्री गोपीलालजी जैन की पुण्यस्मृति एवं स्व. श्री प्रेमबाबूजी जैन की द्वितीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

4100/- श्री इन्दरचन्दजी, योगेशजी गाँधी, जोधपुर, वीरमाता श्रीमती शशिकलाजी धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्दजी गाँधी (वीरपिता) के 41 उपवास की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

3800/- श्रीमती ललिताजी-श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, पूज्या माताजी श्रीमती पुष्पकँवरजी धर्मपत्नी श्री मनमोहनमलजी गांग, जोधपुर की 38वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

3100/- श्रीमती लाड़देवीजी, प्रणयजी, नेहाजी हीरावत, जयपुर, श्रीमती सुनीताजी धर्मपत्नी श्री प्रमोदजी हीरावत के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

3100/- श्री गौतमजी, गौरवजी, सौरभजी भण्डारी (श्री गणेशमलजी भण्डारी परिवार-निमाज वाले), बेंगलूरू, प्रपौत्र मोक्ष कुमारजी सुपुत्र श्री गौरवजी, सुपौत्र श्री गौतमजी भण्डारी के जन्म के उपलक्ष्य में।

3100/- श्री राजेन्द्रजी (सी.ए.)-श्रीमती मोनिकाजी लोढ़ा, जोधपुर, श्री रक्षितजी सुपौत्र स्व. श्री जवरीलालजी लोढ़ा (हीरादेसर) के सी. ए. बनने की खुशी में सप्रेम।

3000/- श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शान्तिनगर-बेंगलोर की ओर से सप्रेम।

2200/- श्री धनसुरेशजी, आशीषजी, अमितजी, सुमितजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती इन्द्राजी के 9 उपवास की तपस्या एवं श्री धनसुरेशजी के अठाई की तपस्या तथा श्रीमती शिल्पाजी-अमितजी के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

2100/- श्रीमती कुसुमजी कोठारी, जयपुर, स्व. श्री जीतमलजी कोठारी की 27 सितम्बर, 2022 को तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री उत्तमचन्दजी, सम्पतराजजी, श्रेणिकराजजी, धर्मचन्दजी, अशोकचन्दजी, ज्ञानचन्दजी, महावीरचन्दजी भण्डारी, रायचूर-चेन्नई, मुमुक्षु सुश्री स्नेहाजी भण्डारी की जैन भागवती दीक्षा 5 अक्टूबर, 2022 को रायचूर में होने की स्वीकृति प्राप्त होने पर।

2100/- श्री महावीर प्रसादजी जैन, कोटा, सुपुत्र श्री संदीपजी

जैन (शीतल) का 08 अगस्त, 2022 को निधन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री रामलक्ष्मणजी कुम्भट, जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती उगमकँवरजी धर्मपत्नी श्री मगराजजी कुम्भट की पुण्यस्मृति पर।

2100/- श्री नवरत्नचन्दजी ओस्तवाल (पीपाड़ सिटी वाले), मुम्बई, श्रीमती रुचिजी धर्मपत्नी श्री रजतजी (पुत्रवधू श्रीमती आशाजी-श्री नवरत्नचन्दजी के 9 उपवास तथा श्रुतिजी कटारिया सुपुत्री श्रीमती आशा-श्री नवरत्नचन्द्रजी ओस्तवाल के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

2100/- श्री प्रवीण कुमारजी, नितिन कुमारजी रूणवाल, बीजापुर-माधवनगर, पर्वाधिराज पर्युषण पर साधना-आराधना गुरु चरण सन्निधि में सम्पन्न होने पर।

2100/- श्री छगनलालजी, श्रीमती पुष्पलताजी, कल्पेशजी, पारसजी लोढ़ा, पाली, आठ दिवस पर्युषण में जोधपुर रहने की खुशी में एवं तेले की तपस्या सम्पन्न होने पर।

2100/- श्री निहालचन्दजी, श्रीमती चन्द्रकान्ताजी साण्ड, विजयनगर के आठ दिवस पर्युषण में जोधपुर रहने की खुशी में।

2100/- श्री रोहितजी सुपुत्र श्री राजकुमारजी सिंघवी, जोधपुर, श्री राजकुमारजी के अठाई एवं श्रीमती सरलाजी सिंघवी के तेले की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- श्री प्रकाशचन्दजी जैन (सरपंच), नाडसर।

1100/- श्री हनुमान प्रसादजी जैन 'पत्रकार', बजरिया-सवाईमाधोपुर, पुत्रवधू श्रीमती योगिताजी धर्मपत्नी श्री धर्मेन्द्रजी जैन के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।

1100/- श्री प्रसन्नराजजी, भँवरलालजी कांकरिया, अहमदाबाद, सुश्राविका श्रीमती गुलाबकँवरजी का 30 अगस्त, 2022 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री हरकचन्दजी, कन्हैयालालजी, नीरज कुमारजी, निर्मल कुमारजी जैन (श्यामपुरा वाले), इन्दौर, श्रीमती प्रेमबाईजी जैन की 13वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती ललिताजी-महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती ललिता-श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, परम मित्र श्री सोहनचन्दजी भंसाली एवं श्रीमती राज भाभीजी बरड़िया धर्मपत्नी श्री प्रकाशजी बरड़िया, जोधपुर की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री सुनील कुमारजी जैन, इन्दौर, पूज्य पिताजी श्री फूलचन्दजी जैन का 13 सितम्बर, 2022 को निधन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री ललित कुमारजी, संजय कुमारजी, मुकेश कुमारजी बोहरा, पहुँना, पूज्य पिता श्री रोशनलालजी बोहरा की पावन स्मृति में।

1100/- श्रीमती पदमादेवीजी सुराणा, जोधपुर, श्री सुलतानमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री पारसमलजी सुखानी, रायचूर, श्री विजयजी सुखानी के वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पारसमलजी सुखानी, रायचूर, श्री निलयजी सुखानी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रिखबचन्दजी, उदयराजजी, संदीपजी धोका (निमाज वाले), मैसूर, गुरुचरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सुअवसर प्राप्त होने पर।

1100/- श्री रामप्रसादजी, प्रदीप कुमारजी, नरेन्द्र कुमारजी, आयुषजी, अक्षयजी जैन (भेड़ोला वाले), राजनगर-सवाईमाधोपुर, श्री अरविन्द कुमारजी जैन का 23 सितम्बरको देहावसान होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्रीमती दमयन्तीजी जैन, जोधपुर की ओर से सप्रेम।

1100/- श्री पदमराजजी मेहता, जोधपुर की ओर से सप्रेम।

1100/- श्रीमती विजयाजी धर्मपत्नी श्री यू. आर. मेहता, जोधपुर की ओर से पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पारसमलजी, अशोक कुमारजी गोगड़ (आगोलाई वाले) जोधपुर, श्रीमती विजयलक्ष्मीजी धर्मपत्नी श्री अशोक कुमारजी गोगड़ के नौ की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती शशिजी कीर्तिजी मेहता, जोधपुर।

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान बालिका छात्रावास, मानसरोवर-जयपुर हेतु

1100/- श्रीमती विजयाजी धर्मपत्नी श्री यू. आर. मेहता, जोधपुर की ओर से पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु

श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, मुम्बई-जयपुर।

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

महावीर शब्द का माहात्म्य

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

रण में शत्रु को जीत लेने से वह योद्धा वीर जरूर कहला सकता है, लेकिन महावीर जैसा बनने के लिए जीवन में बहुत-सी विशेषताओं को आत्मसात् करना पड़ता है। भगवान महावीर ने साढ़े बारह वर्षों तक कठोर तप, उग्र विहार आदि साधु नियमों का यथावत् पालन करते हुए अनेक घोर परीषहों और उपसर्गों को सहन किया। इस कारण देवों ने भगवान का नाम 'महावीर' रखा। घनघाती कर्मों का क्षय करके प्रभु ने केवलज्ञान, केवल दर्शन प्राप्त किया। महावीर शब्द का माहात्म्य शब्द में प्रयुक्त होने वाले अक्षरों की व्याख्या से समझना है।

M Meet your heart with kindness.

अपने हृदय में अनुकम्पा के भावों को जागृत करो। सबके प्रति दया, करुणा के भाव रहने से प्राणिमात्र के साथ मैत्री का सम्बन्ध स्थापित होता है। अपना कोई शत्रु या वैरी नहीं रहता। अन्त:करण में व्यापक सोच का प्रादुर्भाव होता है-'वसुधैव कुटुम्बकम्' सारी धरती एक कुटुम्ब की तरह है।

A Anger is the madness of the mind.

क्रोध मस्तिष्क का पागलपन है। जवान हो तो क्रोध को मन्द करो और बूढ़े हो तो क्रोध को बन्द करो। माचिस की काड़ी (तूली) पहले स्वयं जलती है, फिर दूसरों को जलाती है। क्रोध जीवन के लिए विनाशकारी है।

भगवान महावीर स्वामी के जीवन में अनेक प्रतिकूल प्रसङ्ग उपस्थित हुए, लेकिन भगवान ने विषम परिस्थितियों में समभाव को धारण किया, किसी पर भी क्रोध नहीं किया। क्षमाशील बनकर अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाते रहे। हमें क्रोध को सदैव क्षमा से जीतने का लक्ष्य रखना है।

H Humanity is the root of all virtues.

मानवता सभी गुणों की जननी है। हमें अपने जीवन में मानवता को अपनाना चाहिये। मानवीय संवेदनाओं से हमारा हृदय ओतप्रोत होना चाहिये। हृदय में संवेदनाएँ विद्यमान रहने से सबके प्रति सद्भावना का प्रादुर्भाव होता है, साथ ही सद्गुणों का विकास होता है। संवेदनशीलता के कारण व्यक्ति का स्वभाव विनम्र और उदार बन जाता है।

A Ability is the most powerful part of the life.

योग्यता जीवन का शक्तिशाली अङ्ग है। हमारा बुद्धि-बल पवित्र होना चाहिये। बुद्धिबल से मनोबल दृढ़ बनता है। संकल्पशक्ति मजबूत बनती है। भगवान ने

संकल्पशक्ति एवं बुद्धि बल के सहारे कर्मों का क्षय करके मोक्ष को प्राप्त किया। शारीरिक शक्ति सबकी अलग-अलग हो सकती है, लेकिन मानसिक शक्ति सबके पास अपरिमित होती है। इस शक्ति को जागृत करने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। शास्त्रों में वर्णन आता है कि राजा श्रेणिक के पुत्र अभय कुमार औपपातिक बुद्धि के धनी थे।

V Virtues make a man great and happy.

सद्गुणों के विकास से ही मानव महान् बनता है, सुखी बनता है। हमें किसी के अवगुणों को देखकर उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिये, वरन् चिन्तन यह करना चाहिये कि मुझे ऐसा नहीं बनना है। मुझे गुणग्राही बनना है, पर दोषग्राही नहीं बनना है। स्व दोषों को देखकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना है, सद्गुणों को अपनाना है।

I Idleness is the root of all sins.

प्रमाद सभी पापों की जड़ है। आत्मा को भूलना ही प्रमाद है। मोह कर्म के वशीभूत होकर अपनी बुद्धि को गिरवी रखना प्रमाद है। हमें अपनी आत्मा को नहीं भूलना चाहिये। आत्मा की सुध लेते रहने से ही आत्मा का विकास होता है, आत्मा उन्नत बनती है।

R Rigtness must be root of our life.

सत्य हमारे जीवन का मूलमन्त्र होना चाहिये। व्रत-नियमों को पालने में हमें दृढ़ होना चाहिये। हमारा जीवन प्रामाणिक होना चाहिये। सत्य की जड़ों पर आदर्श जीवन का आलीशान वटवृक्ष खड़ा किया जा सकता है।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

सोन पापड़ी

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

दिवाली की अगली सुबह ...धीरे-धीरे बारिश हो रही थी ... बालकनी से सुहावने मौसम का आनन्द लेते हुए अचानक मेरी नज़र गली में बिखरे कचरे पर चली गई। जले हुए पटाखों के कचरे से पूरी गली भरी पड़ी थी ...और उस पर यह बारिश ....पूरी गली में एक तरह से कीचड़-सा हो गया था ...एक सफाई कर्मचारी लड़की जो शायद 18-19 साल की होगी ...कुछ गुनगुनाते हुए ...अकेली ही ...झाड़ू से पूरे कचरे को कचरागाड़ी में भर रही थी।

गली में खूब चहल-पहल थी ...छुट्टी का दिन था ...तो अनेक लोग घरों से बाहर खड़े ही गप्पे लड़ा रहे थे ...इतने में बाजू वाले बड़े घर से वर्माजी ....हाथ में छोटा-सा सोन पापड़ी का डब्बा लेकर बाहर निकले ...आस-पड़ौस में खड़े लोगों पर एक नज़र दौड़ाई ....और खूब रौबदार और तेज आवाज में बोले ...ऐ कचरे वाली ...मेरे बंगले के आगे बिलकुल कचरा नहीं रहना चाहिए ....और यह ले ....तेरी दिवाली की मिठाई ... नहीं अंकलजी ....मुझे मिठाई नहीं चाहिए ....वो लड़की बिना देखे ही .... सफाई का अपना काम करते हुए ही धीरे से बोली।

अच्छा ! अब तुम कचरे वालों के भी इतने नखरे हो गए है क्या? सोन पापड़ी देखते ही मना कर दिया क्या? वर्माजी और भी तेज आवाज में सबको सुनाते हुए बोले अब झाड़ू को एक किनारे रख ...वह लड़की उन्हीं के जैसी ऊँची आवाज में बोली ....हम कचरे वाले नहीं ....सफाई वाले हैं अंकलजी! कचरा तो आप लोग फैलाते हो ... हम तो साफ़ करते हैं ...तो हम कचरे वाले कैसे हुए? वह लड़की वर्माजी की तरफ देखते हुए निर्भयतापूर्वक आगे बोली ....और रही बात सोन पापड़ी की ....तो अंकलजी आप काजू बादाम की कतली के डिब्बे तो क्या ...मिठाई की पूरी दुकान भी देंगे ना ....तो भी मुझे नहीं चाहिए ...एक बात और अंकलजी ..आप लोग तो इतना मीठा खाते हो ..फिर भी इतना कड़वा क्यों बोलते हो?

सभी लोग देख रहे थे कि जितना पानी वर्माजी के चेहरे पर उतर आया था ...उतना तो शायद बारीश से भी नहीं बरसा ...पर उस लड़की का वो गजब का आत्मविश्वास ...जो उसके चेहरे पर पसीने की बूँदों के

बीच में झलक रहा था ...किसी से छिपा न रह सका।

इतने में सामने वाले छोटे से घर से ममता भाभी ने दरवाजा खोला ...और वर्माजी जैसा ही सोन पापड़ी का डिब्बा देते हुए बोली ....ले बेटी ...यह दिवाली का प्रसाद ...हैप्पी दिवाली!

जी आंटीजी ...थैंक यू आंटीजी ...आपको भी खूब हैप्पी दिवाली आंटीजी .... सोन पापड़ी का डिब्बा अपने टिफिन की पुरानी-सी थैली में डालते हुए ....वह लड़की मुस्कुराते हुए बोली ....! मुस्कुरा तो वहाँ खड़े सभी लोग भी रहे थे ...बस वर्माजी के अलावा ...जो अपनी नज़रें झुका कर घर के अन्दर जा रहे थे ....और वो लड़की फिर से सफाई में जुट गई है ...उसी तल्लीनता के साथ ...गुनगुनाते हुए और मैं भी बालकनी से नीचे उतर कर जा रहा हूँ....हाथ में मिठाई और एक अच्छा सा टिफ़िन बैग उस बहादुर बेटी को देने के लिए ...मुस्कुराते हुए।

-'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्नादरीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- प्रतिक्रमण आवश्यक क्यों है?

उत्तर- सम्यक्त्व ग्रहण करते समय यदि पहले किये हुए पापों का पश्चात्ताप रूप प्रतिक्रमण नहीं किया जाता है तो पूर्व के पापों का अनुमोदन चालू रहता है। अत: सम्यक्त्व में दृढ़ता नहीं आती। प्रमाद और अज्ञान से अतिचार रूप काँटे प्राय: लग ही जाते हैं। यदि उनको दूर न किया जाय तो जीव विराधक बन जाता है। अत: विराधकता एवं समकित के विनाश से बचने के लिए प्रतिक्रमण आवश्यक है।

प्र. 2- प्रतिक्रमण का सार किस पाठ में आता है? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रतिक्रमण का सार 'इच्छामि ठामि' के पाठ में आता है। क्योंकि पूरे प्रतिक्रमण में ज्ञान, दर्शन, चारित्राचारित्र तथा तप के अतिचारों की आलोचना की जाती है। 'इच्छामि ठामि' के पाठ में भी इनकी संक्षिप्त आलोचना हो जाती है, इस कारण इसे प्रतिक्रमण का सार-पाठ कहा जाता है।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Good Lines

Mrs. Minakshi Dinesh Jain

1. Stress comes when we compare ourselves with the others.
2. We do not see things as they are, we see things as we are.
3. Put all excuses aside and remember this, you are capable.
4. We have multiplied our possessions, but reduced our values.
5. It is nice to be important, but it is more important, to be nice.

-17/729, CHB, Jodhpur-342008 (Raj.)

Question Answer

Q 1. How can we inculcate Jaina values in children?

Ans. Jaina values and practices can be encouraged from an early age. At home, basic practices like incorporating prayers and mantras into daily life, as well as practicing vegetarianism, will lay a strong foundation for children.

Involve children in religious activities, ensuring their safety and comfort in religious settings. Take them along to visit Jaina sādhus and sādhvīs together, and celebrate festivals together. Young children can even observe some of the festival rules such as not eating after sunset during the eight to ten days of Paryuṣaṇa Parva. Encourage children to spend time with the local Jaina Saṅgha, make friends with other Jaina children, and get habituated to listening to spiritual discourses.

As they get older, teach them the significance of special religious days, and encourage them to pray, meditate, and fast for their own soul's liberation. If they like to read, encourage them to read Jaina stories that will

capture their attention. Also, allow them to undertake simple vows and fasting, such as ekāśaṇa (eating once a day).

Remember that children learn best by observing their siblings, friends, parents, and elders. Ensuring your own spiritual practice is strong and consistent is the best way to prepare your children for the Jaina way of life.

-Book 'With the ferryman' -Dulichand Jain

आतिशबाजी

श्री शुभम बोहरा

आतिशबाजी समय, शक्ति और धन की बर्बादी है। आतिशबाजी का सबसे ज्यादा प्रचलन दीपावली के त्यौहार पर होता है। मोह और अज्ञान के वशीभूत होकर संसारी लोग फिजूलखर्ची करते हैं। 'फटाखे छोड़ना' फिजूलखर्ची नहीं है तो क्या है? समय, शक्ति और धन को थोड़े से झूठे मनोरञ्जन के लिए बर्बाद करना कौन-सी बुद्धिमत्ता है। यही धन समाज के उत्थान कार्यों पर लगाया जाए तो कितनों का उद्धार हो सकता है। आतिशबाजी घोर हिंसा का कारण है। भारत जैसे अहिंसक देश में आतिशबाजी जैसी निरर्थक प्रवृत्ति उचित नहीं है। पानी की तरह पैसा बहा देना मानवता पर घोर अत्याचार भी है। आप सब अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देकर आतिशबाजी का सर्वथा या मर्यादित त्याग करें और सामाजिक कार्य में अपना योगदान दें। इससे धन का सदुपयोग होगा और राष्ट्र का उद्धार होगा।

-जलगाँव (महाराष्ट्र)

जरा सोचिये-पटाखे फोड़ने से क्या मिला?

महेश नाहटा

- भगवान एवं सन्तों की वाणी का अपमान।
- वायु प्रदूषण की अधिकता।
- सम्पत्ति का नुकसान।
- गन्दगी का साम्राज्य।
- निर्दोष जीवों की हत्या।
- शारीरिक क्षति एवं जनहानि।
- आँखों एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर।
- पाप का बन्ध।
- धन की बर्बादी।
- समय की बर्बादी।

क्षणिक मनोरञ्जन के लिए जीवों की हत्या क्यों? हमें बम विस्फोट में मरने वाले व्यक्तियों से सहानुभूति होती है तो अनेक जीवों को पटाखे रूपी बम विस्फोट से मारने में निर्दयता क्यों? हमें तो अग्नि की आँच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं। छोटी-सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनेक सूक्ष्म जीवों को मौत के घाट उतरते देखकर हमारे हाथ क्यों नहीं काँपते?

अत: 'जीओ और जीने दो' का अमर सन्देश देने वाले भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का ताण्डव मत करिये। दीपावली पर्व हिंसा के यमराज का नहीं, अहिंसा के सम्राट् महावीर के निर्वाण का महापर्व है।

जरा सोचिये प्रतिवर्ष पटाखों से 2 लाख लोग अपङ्ग, प्रतिवर्ष 200 करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान, प्रतिवर्ष 70,000 बच्चों की आँखों की रोशनी कम या समाप्त हो जाती है तथा पटाखा फैक्ट्री में सैकड़ों कर्मचारियों की दुर्घटनाओं में मृत्यु हो जाती है। अत: प्रभु महावीर के निर्वाण महोत्सव पर पटाखे फोड़ने का त्याग करें।

-नगरी (छत्तीसगढ़)

बड़े भाई की चिन्ता

डॉ. दिलीप धींग

लगभग दो हजार वर्ष पुरानी कहानी है। दक्षिण भारत के चेर राजा सेंगुट्टुवन के छोटे भाई थे- इलंगो अडिगल। वे जब छोटे थे, तब किसी ज्योतिषी ने कहा था कि इलंगो राजा बनेंगे। उस समय तक सेंगुट्टुवन राजकुमार ही थे, राजा नहीं बने थे। ज्योतिषी की इस

भविष्यवाणी से इलंगो के बड़े भाई चिन्तित हो उठे।

इलंगो तो जिनेन्द्र भगवान के उपासक थे। ज्योतिषी के कथन को ज्यादा महत्त्व नहीं देते थे। अपने पुरुषार्थ पर विश्वास रखते थे। ज्योतिषी के कथन से उपजी बड़े भाई की चिन्ता, उनकी अपनी चिन्ता हो गई थी। बड़े भाई की चिन्ता दूर करने के लिए एवं बड़ा भाई ही राजा बने, इसके लिए इलंगो ने संयम की राह चुन ली। राज-वैभव का परित्याग करके वे जैन श्रमण बन गये। उनके इस क़दम से बड़े भाई की सारी आशंका श्रद्धा में बदल गई।

सन्त इलंगो अडिगल शास्त्रों के अध्येता होने के साथ ही एक प्रतिभाशाली कवि थे। उन्होंने तमिल में 'सिलप्पदिकारम्' महाकाव्य की रचना की। यह महाकाव्य तमिल साहित्य का सर्वप्रथम, सर्वोत्तम और सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। तमिल में ही नहीं, द्रविड़ भाषा परिवार की चारों भाषाओं (तमिल, कन्नड़, तेलुगू और मलयालम) में भी सर्वप्रथम प्रबन्धकाव्य के रूप में 'सिलप्पदिकारम्' समादृत है। इसे द्रविड़ संस्कृति का प्रतिनिधि काव्य माना जाता है।

द्रविड़ साहित्य-जगत और जन-मन में इलंगो अडिगल, उनके महाकाव्य और महाकाव्य की नायिका कण्णगी के प्रति आज भी प्रचुर सम्मान है। इलंगो का त्याग अमर हो गया।

-शोध प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज, चेन्नई-600 017 (तमिलनाडु)

भय

संकलित

एक बालक जिसका नाम बुधिया था। वह बड़ा निडर था। घूमते-घूमते अक्सर बस्ती के बाहर नदी के किनारे चला जाता और थोड़ी देर वहाँ रुक कर, प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन कर लौट जाता।

उसके दादाजी उससे बड़ा प्यार करते थे। उन्हें लगा कि ऐसा न हो कि किसी दिन वह नदी में गिर जाये। कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिए कि बालक नदी की ओर न जाये। काफी सोच-विचार करने के पश्चात् दादाजी के दिमाग में एक तरकीब आई।

इसलिए एक दिन उन्होंने उससे कहा-''बुधिया तुम अकेले नदी के किनारे मत जाया करो।'' बुधिया ने पूछा-''क्यों?'' दादाजी ने कहा-''वहाँ भूत रहता है।'' भूत की बात सुनकर बालक के मन में इतना डर बैठ गया कि अब वह घर से बाहर ही नहीं निकलता था। जरा-जरा सी बात में वह भूत को खुद के सामने खड़ा मान लेता था।

दादाजी यह देखकर बड़े हैरान हुए। उन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि बुधिया भूत की बात से इतना डर जायेगा। तब उन्होंने एक दिन बुधिया के हाथ में एक धागा बाँध दिया और कहा-''बुधिया अब तुम्हें भूत से डरने की जरूरत नहीं है। यह देखो, भगवान तुम्हारे साथ रहेंगे।'' बुधिया खुश हो गया। वह फिर बाहर घूमने लगा।

एक दिन संयोग से उसके हाथ का धागा टूटकर कहीं गिर गया। बुधिया घबराया हुआ अपने दादाजी के पास आया। खाली हाथ दादाजी को दिखाकर बोला-''दादाजी, भगवान चले गये। मैं अब क्या करूँ?'' अब दादाजी ने उसको समझाकर कहा-''बेटे नदी के किनारे कोई भूत नहीं था और न धागे में भगवान थे। आदमी को डरना नहीं चाहिए। जिसका मन मजबूत होता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बुधिया ने अब असली बात समझी और वह आनन्द से रहने लगा।

शिक्षा-बच्चों को डराने की अपेक्षा समझाने पर ध्यान देना चाहिए।

आम पकने पर ही मिठास दिया करते हैं,
पुष्प खिलने पर ही सुवास दिया करते हैं।
जन्म से अबोध होते हैं, नन्हें मुन्ने बालक,
सद्बोध मिलने पर ही, विकास किया करते हैं।।

-प्रेरक कथाएँ से साभार

10 अक्टूबर 2022
जिनवाणी 96
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

भगवान महावीर

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 नवम्बर, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

भगवान महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी की मध्यरात्रि में माता त्रिशलारानी की कुक्षि से हुआ था। वे तीर्थङ्कर होने वाले थे, इसलिये उनका जन्म अभिषेक उत्सव 64 इन्द्रों के द्वारा मेरु पर्वत पर मनाया गया।

उनके पिताजी का नाम राजा सिद्धार्थ था। गर्भ में ही भगवान महावीर मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान इन तीन ज्ञान के धारक थे। गर्भ में उनके हलन-चलन से माता को कष्ट हो रहा था, इसलिए उन्होंने हलन-चलन बन्द कर दिया। इससे उनकी माता चिन्तित होने लगी और शोकमग्न हो गई। यह जानकर महावीर ने तुरन्त गर्भ में हलन-चलन शुरू कर दिया, इससे माता त्रिशला बहुत आनन्दित हुई। इसी कारण भगवान महावीर ने गर्भ में माता-पिता के जीवित रहने तक दीक्षा न लेने की प्रतिज्ञा की। इस तरह वे जब से गर्भ में थे, तब से ही माता-पिता के परम भक्त बन गए।

भगवान महावीर जब माता के गर्भ में थे, तब पिता के घर में तथा नगर में धन-धान्य आदि की वृद्धि हुई थी, इसलिए जन्म के बाद उनका नाम वर्धमान रखा गया था। वे देवताओं से भी अधिक रूपवान थे।

उनके बड़े भाई नन्दीवर्धन और बहन सुदर्शना थी। वे जब आठ वर्ष की उम्र के थे तब एक देव उन्हें डराने के लिए साँप का रूप धारण करके आया। साँप को देखकर सब बच्चे भागने लगे और उनसे बोले-''वर्धमान! तू भी भाग जा, नहीं तो साँप काट लेगा।'' परन्तु वर्धमान साहसी और निडर थे। उन्होंने कहा-''दोस्तो! हमने साँप का क्या बिगाड़ा है जो वह हमें काटेगा?'' यह कहते हुए उन्होंने बिना डरे साँप को उठाकर एक तरफ रख दिया।

अब उस देव ने वर्धमान को हराने के लिए नया दावँ आजमाया। वह देव बालक का रूप बनाकर सबके साथ खेलने लगा। तब बच्चे 'तिन्दुषक' नाम का खेल खेल रहे थे। इस खेल में जो हारता उसे खुद की पीठ पर विजेता को बिठाना होता था। वह बालक देव जानबूझकर हार गया और उसने विजेता वर्धमान को पीठ पर बिठाया। जैसे ही वर्धमान उसकी पीठ पर बैठे तुरन्त ही देव ने विकराल पिशाच का रूप बनाया और अपनी लम्बाई बढ़ाकर ताड़ के वृक्ष जितनी कर ली। फिर वर्धमान को डराने के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगा। छोटे वर्धमान ने अवधिज्ञान से जान लिया कि यह देव की माया है, इसलिए उन्होंने देव की पीठ पर एक मुक्का मारा। देव नीचे झुक गया।

कुछ क्षणों में देव अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुआ और वर्धमान को शाबाशी देते हुए बोला-''आप

बहुत बलवान हैं, वीरों के वीर महावीर हैं।'' ऐसा कहकर देव वापस चला गया। तब से राजकुमार वर्धमान महावीर कहलाने लगे।

वर्धमान के युवा होने पर उनकी शादी गुणवती और रूपवती राजकुमारी यशोदा से साथ हुई। यथासमय उनके यहाँ प्रियदर्शना नाम की पुत्री का जन्म हुआ।

महावीर जब 28 साल के हुए तब उनके माता-पिता का देवलोकगमन हो गया। कुछ दिन पश्चात् महावीर ने बड़े भाई नन्दीवर्धन से दीक्षा की आज्ञा माँगी, लेकिन भाई ने उन्हें दो साल तक रुकने की विनति की।

बड़े भाई के आग्रह को स्वीकार कर वे संसार में निरासक्त भाव से रहने लगे। उन्होंने ब्रह्मचर्य पालन, रात्रि भोजन-त्याग, सचित्त भोजन-पानी का त्याग और छह काय जीवों की दया पालने का संकल्प किया। एक साल तक प्रतिदिन 1 करोड़ 8 लाख सुवर्ण-मुद्राएँ दान देने लगे, जिसे वर्षीदान कहते हैं।

30 साल की युवावस्था में उन्होंने संसार को त्यागकर जैन दीक्षा ग्रहण की। वे नंगे पैर चलते, घर-घर से माँगकर आहार-पानी लाते। बहुत दिनों तक उपवास भी करते। किसी को दु:ख नहीं देते और कोई अपमान करे तो हँसते-हँसते सह लेते थे। उन्हें संयम-जीवन में देव, मनुष्य और तिर्यञ्च प्राणियों द्वारा बहुत कष्ट एवं तकलीफें सहन करनी पड़ी।

एक बार की बात है, भगवान जंगल में चले जा रहे थे। रास्ते में लोगों ने कहा-''आप इस तरफ मत जाओ। वहाँ एक भयंकर और ज़हरीला साँप रहता है। उसकी नज़र के ज़हर से भी मनुष्य, पशु-पक्षी तुरन्त मर जाते हैं।''

भगवान महावीर मृत्यु से नहीं डरते थे। वे उसी रास्ते पर चल पड़े जहाँ सर्प की बाम्बी थी। सर्प भगवान को अपनी ओर आते देखकर क्रोधित हो गया। वह भगवान के पैर पर जोर से लिपट गया। क्रोधित होकर फुफकार मारने लगा और पैर के अंगूठे पर जोर से डस लिया। लेकिन भगवान जरा भी नहीं हिले। उनके पैर से रक्त के स्थान पर दूध की धारा बहने लगी। भगवान समता भाव से अडिग खड़े रहे।

यह देखकर सर्प रुक गया और सोचने लगा-'यह कोई देव है या मनुष्य?' भगवान की आँखों में अपनी आँखें मिलाकर देखा तो भगवान की आँखों में अमृत भरा था। भगवान अपनी करुणा भरी आँखों से उसे देख रहे थे। सर्प अब शान्त हो गया। उसे लगा कि मैंने जिन पर ज़हर उण्डेला है, वे तो मुझ पर अमृत बरसा रहे हैं।

अब महावीर ने सर्प को शान्त होते देखकर उपदेश दिया-''अरे चण्डकौशिक सर्प! बुज्झ! बुज्झ! बोध को प्राप्त कर। तू भी अमृत का समुद्र है। तू अपने पूर्वभव का चिन्तन कर, तूने मनुष्य के भव में क्रोध किया था, इसलिए आज यह सर्प का जन्म पाया है। इसलिए अब तू समझ और क्रोध करना छोड़ दे।''

भगवान के उपदेश से सर्प को अपना पूर्वभव याद आ गया और उसने अब क्रोध नहीं करने का निश्चय कर लिया। अब वह किसी को भी नहीं डँसता। क्रोध नहीं करता, कोई उसे पत्थर से मारे तो भी सहन कर लेता था। चींटियाँ भी यदि उसे काटे तो भी क्षमा धारण कर लेता। अन्न-जल का त्याग करके खुद का मुँह अपने बिल में रखकर पड़ा रहता। अन्त में मृत्यु को प्राप्त होकर देव बना।

भगवान का संग मिलने से सर्प ने भी अपना भव सुधार लिया। जहाँ आदमी को सुधारना मुश्किल है, वहाँ यह सर्प सुधर गया। अहो आश्चर्य!

72 साल की आयु में कार्तिक मास की अमावस्या (दीपावली) की रात भगवान महावीर स्वामी मोक्ष पधारे। भगवान महावीर के शासन की जय हो।

-'जैन पाठ्यक्रम' पुस्तक 1 से साभार

प्र. 1 बालक वर्धमान ने देव को कैसे झुका दिया?
प्र. 2 राजकुमार वर्धमान का नाम महावीर कैसे पड़ा?
प्र. 3 देव ने वर्धमान को डराने के लिए क्या किया?
प्र. 4 दीक्षा से पूर्व उन्होंने क्या संकल्प ग्रहण किए?
प्र. 5 क्रोधी सर्प के शान्त होने का क्या कारण था?
प्र. 6 कहानी में आए कोई पाँच विशेषण शब्द छाँटकर उनके भेद भी लिखिए।

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2022] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'कयवन्ना सेठ' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सागर जैन, अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	लक्ष्मी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	कवीश जैन, आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
	भूमि जैन, अलवर (राजस्थान)	22
	हर्ष भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	आराध्य भंसाली, जोधपुर (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी सितम्बर, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 नवम्बर, 2022)

प्र. 1. किशन कुमार ने किस तरह अनोखी स्वामिभक्ति का परिचय दिया?
प्र. 2. द्रव्य प्रतिक्रमण भाव प्रतिक्रमण से किस प्रकार भिन्न है?
प्र. 3. What is meant by "Micchāmi Dukkaḍam?"
प्र. 4. 'जीवन का प्रण' कविता में कवि किन्हें अपने जीवन का प्रण बनाने की बात कर रहा है?
प्र. 5. What is the message given by the poet in the poem 'Balance-Sheet of life?'
प्र. 6. अधिक गुस्सा किस तरह हमारे दिमाग पर बुरा असर डालता है?
प्र. 7. वीरपिता चंदगीरामजी ने अपने पुत्र सुदर्शन को क्या सीख दी?
प्र. 8. जीवन-निर्माण में धन की अपेक्षा धर्म की आवश्यकता है, कैसे?
प्र. 9. प्रतिक्रमण हमारे जीवन में क्यों आवश्यक है?
प्र. 10. Make sentence from each of the given words-forgiveness, guilt, average and assets.

बाल-जिनवाणी [जुलाई-2022] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	साक्षी भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अरिष्ठ कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	अंकित जैन, मण्डी रोड़, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	नमन एस. छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	36
	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	36

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं। *-सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

7506357533 ✆ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।

DIAMOND MEMBER (RS.200000)

श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बैंगलोर
M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai
श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर
श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.)
श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडू)
श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमान सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरूवल्लुवर (तमिलनाडू)।
श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले)
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडू)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

(1) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
(2) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
(3) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
(4) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
(5) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
(6) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
(7) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
(8) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
(9) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
(10) श्री सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

(1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
(2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
(3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
(4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
(5) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
(6) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
(7) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
(8) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

भावभीनी श्रद्धांजली

सरलमना, सहज, निरभिमानी एवं सभी से सुमधुर समन्वय के व्यवहार के साथ
जिनशासन एवं निर्ग्रन्थ मुनिराजों, महासतियों जी के प्रति असीम श्रद्धा
एवं विनय भाव के गुणों से युक्त पुण्यशाली व्यक्तित्व की धनी

श्रीमती कमला देवी जी डागा

(धर्मपत्नी श्री विमल चन्द सा. डागा)

(ज्ञानपंचमी 17 नवम्बर, 1947 – 17 सितम्बर, 2022)

आपकी पावन स्मृति को शत-शत नमन

श्रद्धानवत :

समस्त नवकार परिवार

राजेन्द्र कुमार डागा
हाँगकाँग

navkar
RIDDHI • TUSHTI • ANAND

नवकार सिटी,
पाल गंगाना रोड, जोधपुर

JVS
PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :
NUTRITION FOODS
BREAKFAST CEREALS
FORTIFIED RICE KERNELS
WHOLE & BLENDED SPICES
VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU®

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन